♦वर्ष : 13 ♦अंक : 9 ♦फरवरी 2026 ₹ 30/- www.loktantrakibuniyad.in

लोकतंत्र की बुनियाद

राष्ट्रीय मासिक पत्रिका

रखे आपकी नींव मजबूत

भाजपा का युग परिवर्तन

नितिन नबीन

बने राष्ट्रीय अध्यक्ष

पेज नं. 26

बदलाव जरूरी है परन्तु अपनी संस्कृति को ध्यान में रखकर: डॉ. एस. एल. सागर

RNI No. DELHIN/2013/50765

Visit Us: loktantrakibuniyad@gmail.com

BTW
weMAKEFOODspecial
Wedding Collection
Sagan | Sagai | Ring Ceremony | Wedding
SPECIAL BHAJI GIFT PACKS.
HAMPERS AVAILABLE FOR
WEDDING GIFTING
Range starting from ₹450
TO EXPLORE OUR RANGE Call us @ +91 9310340169

हिन्दी मासिक पत्रिका
लोकतंत्र की बुनियाद
वर्ष : 13 ◆ अंक : 9 ◆ फरवरी 2026

संपादक
गणेश यादव
प्रबंध संपादक
संजय कुमार 'सुंदर'
उप-संपादक
दुष्यंत सिंह
सहायक संपादक
सुनीता
दिल्ली प्रतिनिधि
अर्चना सिंघल, खुशी कुमारी, संजय यादव
उत्तर प्रदेश ब्यूरो चीफ
प्रमोद कौशिक
हरियाणा ब्यूरो चीफ
बृजभूषण 'माहिर'
बिहार ब्यूरो चीफ
दीपक प्रसाद यादव, प्रकाश आनंद (मार्केटिंग हेड बिहार),
मुंबई (महाराष्ट्र) ब्यूरो चीफ
के. के. झा
राजस्थान ब्यूरो चीफ
देवेन्द्रराज सुथार
झारखंड ब्यूरो चीफ
विकास कुमार
गुजरात ब्यूरो चीफ
संजय कांत पाठक
असम ब्यूरो चीफ
मुकेश सिंह
हिमाचल प्रदेश ब्यूरो चीफ
शेर सिंह
पंजाब ब्यूरो चीफ
प्रेरणा बुड़ाकोटी
उत्तराखंड ब्यूरो चीफ
संतोष कुमार (नैनीताल), गोपाल नाथ गोस्वामी (रानीखेत)
पश्चिम बंगाल ब्यूरो चीफ
कुमार अमितायु
मध्य प्रदेश ब्यूरो चीफ
डॉ. नीलम महेन्द्र
छत्तीसगढ़ ब्यूरो चीफ
लाल आशीष सिंह
नेपाल ब्यूरो चीफ
पूजा बहार
कला निर्देशन/डिजाइनिंग
धीरज मिश्रा
छायाकार/विडियो
गौरव स्वामी, नवीन कुमार
संपादकीय सलाहकार
डॉ. विनोद बब्बर, ललित गर्ग,
पवन शर्मा, प्रदीप द्विवेदी, वेद प्रकाश
कानूनी सलाहकार
राजीव रंजन वर्मा, मीना वर्मा,
आर. सी. अग्रवाल, एस. के. झा (सुप्रीम कोर्ट)

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गणेश यादव द्वारा आर.के. क्रिएशन-19/2, ब्लॉक-बी, वजीरपुर इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-52 से मुद्रित कराकर आर. जेड. एफ.-69ए, प्रथम तल, गली नं. 4, महावीर एन्क्लेव, पालम, नई दिल्ली-45 से प्रकाशित।
पंजीकृत कार्यालय: आर. जेड. एफ.-69ए, प्रथम तल, गली नं. 4, महावीर एन्क्लेव, पालम, नई दिल्ली-110045
प्रशासनिक कार्यालय: बी-4/232, प्रथम तल, सेक्टर-8, रोहिणी, नई दिल्ली-110085
मो. 9811441974, 9910758123
Email : loktantrakibuniyad@gmail.com

संपादकीय

नितिन नबीन: युवा नेतृत्व की नई पहचान

'सेवा ही राजनीति का वास्तविक स्वरूप है और जनता का विश्वास सबसे बड़ा सम्मान'–इस विचार को अपने सार्वजनिक जीवन का आधार बनाकर आगे बढ़ने वाले नितिन नबीन आज भारतीय जनता पार्टी के सबसे युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में भारतीय राजनीति में एक नई बहस और उम्मीद दोनों को जन्म दे रहे हैं। सरल, सहज और संगठन के प्रति पूर्ण समर्पित नितिन नबीन उस राजनीति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जहाँ सत्ता से अधिक सेवा को महत्व दिया जाता है। 23 मई 1980 को बिहार की राजधानी पटना में जन्मे नितिन नबीन ने युवावस्था में ही भारतीय जनता पार्टी के युवा संगठन से अपने राजनीतिक सफर की शुरूआत की। लगभग दो दशकों के संगठनात्मक अनुभव के दौरान उन्होंने भारतीय जनता युवा मोर्चा के बिहार अध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव तथा विभिन्न राज्यों में चुनावी जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। वर्ष 2020 के बिहार विधानसभा चुनाव में बांकीपुर निर्वाचन क्षेत्र से भारी मतों से मिली जीत और इसके बाद बिहार सरकार में दो बार मंत्री के रूप में कार्य करने का अनुभव उनके प्रशासनिक और राजनीतिक कौशल को दर्शाता है। 20 जनवरी 2026 को भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर यह स्पष्ट संकेत दिया कि पार्टी नेतृत्व अब पीढ़ीगत परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में जब देश की अधिकांश राजनीतिक पार्टियों का नेतृत्व वरिष्ठ नेताओं के हाथों में है, भाजपा का यह निर्णय युवाओं के लिए राजनीति में सक्रिय भागीदारी का संदेश देता है। यह नियुक्ति न केवल उम्र के आधार पर, बल्कि संगठनात्मक क्षमता और वैचारिक निष्ठा के आधार पर नेतृत्व चयन की मिसाल भी प्रस्तुत करती है। नितिन नबीन की नियुक्ति को लेकर राजनीतिक हलकों में अलग-अलग व्याख्याएँ सामने आई हैं। कुछ इसे पश्चिम बंगाल सहित पूर्वी भारत में संगठन को मजबूत करने की रणनीति मानते हैं, तो कुछ इसे पार्टी के भीतर संतुलन साधने का प्रयास। राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद उनका पहला प्रमुख संगठनात्मक दौरा पश्चिम बंगाल प्रस्तावित है, जहाँ वे संगठन की स्थिति, कार्यकर्ताओं की भूमिका और आगामी चुनावी रणनीतियों पर फोकस करेंगे। निश्चित रूप से नितिन नबीन के सामने चुनौतियाँ कम नहीं हैं–आगामी चुनाव, संगठनात्मक अपेक्षाएँ और नेतृत्व की परीक्षा। लेकिन उनकी सादगी, संवादशीलता और निष्काम कर्म की सोच उन्हें इस जिम्मेदारी के लिए एक प्रभावी और आशावान नेतृत्व के रूप में स्थापित करती है। आने वाला समय बताएगा कि यह युवा नेतृत्व भारतीय राजनीति में किस तरह की नई दिशा और गति देता है।

इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है पत्रिका में प्रकाशित सामग्री अथवा विज्ञापन से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है। लेखक के स्वयं के विचार हैं विवादित लेखों का उत्तरदायित्व केवल लेखकों का रहेगा। किसी प्रकार के विवाद के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

HIMANK INDUSTRIES
himank INDS
Himank Industries, is one of the leading manufacturer of Rotomolded plastic products. We are providing complete storage solution to the people across India since 2014 to make things better.
Products:-
Automobile Roof
Container Trolley
Automobile Products
water cooler cabinet
Portable Toilets
Waste Bin
Inds. Gloves
Flower Pots
E-Rikshaw Roof
Customised Rotomolded products as per Requirement.
Ved Lamba
Jitender Lamba
Mahesh Lamba
Contact: HUKAM CHAND LAMBA
Add. : F-447, RIICO Industrial Area, Bhiwadi, Alwar, Rajasthan
Contact: 9910506600, 9810406600 E-mail: himankindustries@gmail.com, Website: www.himankindustries.com

श्री नीतिन नबीन जी
को भाजपा के राष्ट्रीय
अध्यक्ष निर्वाचित होने पर
हार्दिक बधाई
गुलाब सिंह राठौर
निगम पार्षद, वार्ड 8, मुकुंदपुर
महामंत्री: उत्तर पूर्वी जिला, भाजपा
चेयरमैन, सिविल लाईन जोन

श्री नीतिन नबीन जी
को भाजपा के राष्ट्रीय
अध्यक्ष निर्वाचित
होने पर
हार्दिक बधाई
अनिल कुमार त्यागी
निगम पार्षद, बुराड़ी वार्ड-6
पूर्व चेयरमैन, सिविल लाईन जोन
विवेक वशिष्ठ

06

भाजपा का युग परिवर्तन नितिन नबीन बने राष्ट्रीय अध्यक्ष

10

दरभंगा राज परिवार की अंतिम निशानी थी महारानी कामसुंदरी देवी

14

दुनिया जल के वैश्विक दिवालियापन की ओर बढ़ रही है

लोकतंत्र की बुनियाद

राष्ट्रीय संस्करण

हिन्दी मासिक पत्रिका

16

एंटीएजिंग दवाओं का ग्लोबल...

18

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन रातों की दूरी मिटाती, नए भारत...

22

सांसद डिंपल यादव के जन्म दिवस...

26

बदलाव जरूरी है परन्तु अपनी संस्कृति को ध्यान में रखकर: डॉ. एस. एल. सागर

31

पवन शर्मा बने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स...

32

'औरत की ताकत' (कविता)

48

वियतनाम - एक अनोखा देश

50

मिट्टी के बेटों को सलाम करती 'बॉर्डर 2' (रिव्यु)

भाजपा का युग परिवर्तन

नितिन नबीन बने राष्ट्रीय अध्यक्ष

संजय कुमार सुंदर

'सेवा ही राजनीति का असली रूप है,जनता का भरोसा सबसे बड़ा सम्मान है' को अपने जीवन का मूलमंत्र मान कर राजनीतिक जीवन में अपने कैरियर को दिशा देने में निरंतर समर्पित, सक्रिय स्वयंसेवक सरल, सहज एवं लोकप्रिय नितिन नबीन वर्तमान दौर में किसी परिचय के मोहताज नहीं है।

लोकतंत्र की पवित्र जननी वैशाली गणराज्य, मगध साम्राज्य पाटलिपुत्र, महावीर एवं महात्मा बुद्ध की तपोभूमि, गुरु गोविन्द सिंह की जन्म भूमि बिहार के पटना में भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व विधायक स्वः नबीन किशोर प्रसाद सिन्हा के परिवार में नितिन नवीन का जन्म 23 मई 1980 को हुआ । उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंटरमीडियट की शिक्षा दिल्ली के CSKM पब्लिक स्कूल से पूर्ण की। शिक्षा पूरी होने के उपरांत युवावस्था में ही भारतीय जनता पार्टी के युवा संगठन से अपनी राजनीतिक सफर की शुरूआत हुई। नितिन नबीन का परिवार राजनीति से जुड़ा रहा है। लेकिन अक्सर वे कहते हैं 'मैने राजनीति विरासत के भरोसे नहीं, जनता की सेवा के भरोसे चुनी है।' इसकी वजह यह कि नितिन नबीन सरल, सहज, मृदुभाषी व लोकप्रिय नेता है इनके जीवन पर गीता के संदेश का स्पष्ट झलक व प्रभाव दिखता हैं 'कर्मण्येवाधि कारस्ते मा फलेषु कदाचन' निष्काम कर्म का संदेश ही इनके राजनैतिक कैरियर में एक सक्रिय कार्यकर्ता की भूमिका में महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया है। भारतीय जनता पार्टी ने युवा नितिन नबीन को भारतीय जनता युवा मोर्चा बिहार के अध्यक्ष पद की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी। नितीन नबीन ने 2020 में बिहार विधानसभा चुनाव में लगभग 84,000 वोटों से जीत हासिल की। वह पटना जिले के बांकीपुर निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले बिहार विधानसभा के सदस्य है। वह भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय महासचिव भी थे। वे पांच बार विधायक चुने जा चुके है।

लगभग दो दशकों के संगठनात्मक अनुभव के साथ नितीन नबीन ने भारतीय जनता पार्टी में अपनी कई महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिसमें भारतीय जनता युवा मोर्चा के बिहार अध्यक्ष, राष्ट्रीय महासचिव और छतीसगढ़ के लिए भाजपा चुनाव प्रभारी के रूप में अपनी काबिलियत और संगठनात्मक योग्यता का परिचय दिया। नितिन नबीन बिहार में दो बार मंत्री भी रह चुके है, पहली बार 2021 में बिहार की नितीश कुमार सरकार में सड़क निर्माण मंत्री' बनाया गया। 2025 के नितीश कुमार सरकार में उन्हें 'सड़क निर्माण और शहरी विकास एवं आवास मंत्री बनाया गया।

ऐसे समय में जब देश की अधिकांश प्रमुख राजनीतिक पार्टियों का नेतृत्व सत्तर या अस्सी वर्ष से भी अधिक आयु के नेता के पास है ठीक इसी के विपरीत भारत. की सबसे बड़ी पार्टी 'भारतीय जनता पार्टी ने पचास से कम आयु के राज्य स्तरीय नेता नितिन नबीन सिन्हा को राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद देकर एक अलग कार्यशैली को अपनाया है। भाजपा ने भारत की राजनीति में एक अलग तरह की प्रयोगात्मक स्वरूप को जन्म दिया है। शायद संभव हो कि आने वाले समय में पार्टियों के बीच आयु को पार्टी के किसी बड़े पद पर का पैमाना न बनाया जाए। 20 जनवरी 2026 को भारतीय राजनीति के फलक पर भारतीय जनता पार्टी ने महज 45 वर्ष के नितिन नबीन को सबसे कम उम्र के राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाकर इतिहास रच दिया।

नितीन नबीन को बीजेपी का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया है। सियासी जानकारों की मानें, तो नितिन नबीन पार्टी के अंदर कितना बदलाव ला पाएंगे। ये सवाल सबके जेहन में हैं। नबीन बीजेपी के नयी पीढ़ी के नेताओं की कतार में शामिल है। उनका योगदान पार्टी को आगे बढाने में कितना होगा और बीजेपी पर होने वाले पीढ़ीगत परिवर्तन का कितना असर पड़ेगा। यह भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है। भाजपा ने नितिन नबीन को अपना नया राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया है। भाजपा के इस फैसले का सभी कार्यकर्ताओं और मंत्रियों ने समर्थन किया। लेकिन भाजपा के कुछ नेताओं को नितिन के चुनाव में पीएम मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की चतुराई नजर आ रही है। इन सबके बीच उनका कुर्सी संभालना कुछ नेताओं को रास नहीं आया हैं। इस तरह के नेता नितिन नबीन के उम्र और अनुभव को लेकर बातें कर रहे हैं। हलाकि बीजेपी यह दावा करती है कि वह वैचारिक निष्ठा के साथ राजनीतिक प्रतिभा को पुरस्कृत करती है। 45 वर्षीय नितिन नबीन ने भाजपा के सबसे युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला है, जो सत्तारुढ पार्टी के नेतृत्व में एक पीढ़ीगत बदलाव का प्रतीक है। भारतीय जनता पार्टी के नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन ने अपने अभिनंदन कार्यक्रम के उद्बोधन में कहा कि 'भारतीय जनता पार्टी में संगठन केवल एक व्यवस्था नहीं बल्कि एक संस्कार है। आज भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में मेरा निर्वाचन एक साधारण कार्यकर्ता की असाधारण यात्रा को मिला सम्मान है और सेवा का दृढ संकल्प है'।

भाजपा के युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष

नितिन नवीन ने युवाओं को अपने संबोधन में कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लालकिला के प्राचीर से 15 अगस्त 2024 में युवाओं को सार्वजनिक जीवन में आने का आहवान किया तो यह देश के युवाओं के लिए स्पष्ट संदेश था' देश के युवाओं को यह समझना चाहिए कि राजनीति से दूरी कोई समाधान नहीं है, बल्कि सक्रिय भागीदारी ही समाधान है। एक साकारात्मक राजनीति के लिए युवाओं को आगे आना होगा।

नबीन की नियुक्ति के पीछे की रणनीति को लेकर कई तरह की व्याख्या सामने आ रही है जिसमें सबसे प्रमुख उनकी उम्र और उनकी जातिगत प्रष्ठभूमि है। इसमें कोई शक नहीं कि वे युवा पीढ़ी के नेता है और जल्द ही बीजेपी परिवर्तन के दौर से गुजरेगी। अपने कार्यकाल में वे ऐसे नेता को तैयार करेंगे या खुद ऐसे

नेता बनेंगे जो आगे चलकर पार्टी को चलाएंगे। उनकी जातिगत पहचान को लेकर व्याख्या है कि वे कायस्थ समुदाय से आते है, जिसका पश्चिम बंगाल में खासा प्रभाव हैं। बीजेपी पश्चिम बंगाल में इस समुदाय को संगठित करने की कोशिश कर रही है। इन व्याख्या के अलावा क्षेत्रीय शक्ति संतुलन बनाना और पार्टी की गुजराती पहचान से दूरी को ध्यान रखा गया। बीजेपी संगठन के महासचिव कर्नाटक दक्षिण से है जबकि अध्यक्ष का चयन उत्तर भारत से होने पर क्षेत्रीय शक्ति को संतुलित किया गया। पार्टी में मोदी शाह के उभार के साथ यह धारणा बनी कि बीजेपी गुजराती लोगों द्वारा चलायी जाती है। ऐसे में नितिन नवीन की बिहारी पहचान एक अच्छा संतुलन बना सकती हैं। नितिन नवीन की नियुक्ति प्रक्रिया से अन्य राजनीतिक दलों से समानता तो दिखती है लेकिन नतीजे में अनिश्चतता बीजेपी की वास्तविकता है जो सभी दलों से बीजेपी को अलग पहचान देती है। यही अनिश्चितता पार्टी के भीतर कार्यकताओं में आगे बढ़ने की उम्मीद और उत्साह पैदा करती है। आगामी विधानसभा चुनाव एवं उनके परिणाम, निर्वाचित नितिन नबीन युवा अध्यक्ष बीजेपी एवं पार्टी के लिए चुनौती सामने खड़ी है। इसी संदर्भ में भाजपा अध्यक्ष बनने के उपरांत ही नितिन नबीन का पहला बड़ा दौरा बंगाल में करेंगें। इस दौरे के दौरान वह पार्टी संगठन को मजबूत करने और कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद करने पर जोर देंगे। राज्य कौर कमिटि की अहम बैठक की अध्यक्षता करेंगे। बैठक में पश्चिम बंगाल में संगठन की मौजूदा स्थिति आगामी रणनीति और कार्यकर्ता की भूमिका पर विस्तार से चर्चा होने की संभावना है। नितिन नबीन की सादगी और सरलता पर प्रधानमंत्री मोदी ने अभिनंदन समारोह के मंच से कहा था कि 'नितिन नबीन के संपर्क में आने वाला हर व्यक्ति उनकी सरलता और जिम्मेदारी निभाने की क्षमता की चर्चा जरूर करता है।'

पश्चिम बंगाल का यह दौरा उनके राष्ट्रीय अध्यक्ष बनने के बाद राज्य स्तर पर पहला बड़ा संगठनात्मक, कार्यक्रम माना जा रहा है, जिससे पार्टी कार्यकर्ताओं में नई ऊर्जा और उत्साह देखने को मिल रहा है। वे अक्सर कहते है 'मैंने राजनीति विरासत के भरोसे नहीं, जनता की सेवा के भरोसे चुनी है'। पार्टी ने यह बड़ा बदलाव संगठन की नई दिशा को दिखाने के लिए किया है, जिससे बीजेपी पश्चिम बंगाल में अपने संगठन को मजबूत करने और अपनी राजनीतिक रणनीति को बेहतर बनाने पर जोर दे रही है। भाजपा का लक्ष्य आने वाले पश्चिम बंगाल चुनावों में सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरना और तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ममता बनर्जी के 14 साल के शासन को खत्म करना है। नव निर्वाचित भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन भाजपा के पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव में बैगाल की आम जनता का दिल व भरोसा जीत कर पार्टी के लक्ष्य को प्राप्त करने में कहाँ तक सफल हो पाते है यह भविष्य के गर्भ में है।

भाजपा में नबीन युग की शुरूआत

अरुण कुमार

विरासत नहीं, मिल्कियत नहीं, कार्यकर्ता प्रधान संस्कृति और पद प्रक्रिया का परिणाम, संघर्ष का इनाम, पार्टी के प्रति निष्ठा और मेहनत का अंजाम, अपने संगठनात्मक इतिहास में 12 वें और सबसे युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के रूप में भारतीय जनता पार्टी का लोकतांत्रिक पैगाम।

तारीख 20 जनवरी, दिन-मंगलवार, स्थान-केन्द्रीय पार्टी मुख्यालय, नई दिल्ली, मौका- राष्ट्रीय अध्यक्ष पदभार ग्रहण समारोह, पूर्व अध्यक्ष, केन्द्रीय मंत्री, भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री तथा देश भर के वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ताओं के बीच खुद प्रधान मंत्री मोदी शांत और स्पष्ट संदेश देने वाले नितिन नबीन को राष्ट्रीय अध्यक्ष की कुर्सी पर विराजमान कराकर, बधाई देते हुए कहा कि हमें भरोसा है कि आपके उजावीन नेतृत्व में पार्टी और अधिक सशक्त होगी तथा राष्ट्रसेवा और जनसेवा के अपने संकल्प को नई दिशा देगी। यह अध्यक्ष पद केवल संगठन के संचालन की जिम्मेदारी नहीं हैं, बल्कि राजग के सहयोगी दलों के साथ समन्वय, कार्यकताओं का मनोबल और भविष्य की रणनीति तय करने का भी दायित्व है।

भाजपा युवा मोर्चा से सियासी सफर शुरू करने वाले, युवा कार्यकर्ताओं के बीच बेहद लोकप्रिय, मृदुभाषी, विनम्र तथा सटीक निर्णय लेने वाले नितिन नबीन ने भी अपने पहले ही अध्यक्षीय संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी तथा पार्टी नेतृत्व के प्रति आभार जताते हुए कहा कि आज का क्षण मेरे लिए संकल्प का क्षण है। आज मैं सिर्फ एक पद को धारण नहीं कर रहा है,बल्कि मैं पार्टी के विचार को, परम्पराओं को तथा राष्ट्रवादी आन्दोलन की जिम्मेदारी को स्वीकार करता हूँ और संगठन की अपेक्षाओं पर खड़ा उतरने के लिए पूरी निष्ठा से काम करूंगा।

बेशक, वर्ष 2006 से 25 तक विधायक, मंत्री तथा विभिन्न प्रदेशस्तरीय और राष्ट्रीय सांगठनिक दायित्व को संभालने वाले नवनियुक्त भाजपाध्यक्ष नितिन नबीन को पूरी तरह पता है कि आने वाले वक्त में हमारी जिम्मेदारी ऐसे कार्यकताओं की फौज तैयार करनी है जो केवल चुनावी समय में ही एक्टीव एजेंट बनने वाला न हो, बल्कि वे हमेशा सरकारी नीतियों और योजनाओं को जनता के बीच ले जाने वाला हो ताकि वे भाजपा के पक्ष में पोलिंग बूथ पहुंचकर EVM का बटन कमल निशान पर दबा सके। हमारी जिम्मेदारी जनता की नाराजगी, अपेक्षाओं तथा जमीनी सच्चाईयों को सरकार तक पहुंचाने की है ताकि सरकार सही नितियाँ और जनहित योजनाएं बना सके।

हमारी जिम्मेदारी सरकार और संगठन के रिश्ते को उस हद तक मजबूत बनाए रखने की है, जहाँ पर सरकारी योजनाएँ तथा उपलब्धियां हमारी राजनीतिक शक्ति बन सके। हमारी जिम्मेदारी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को आगे भी लचीला, पारदर्शी, बेहतर तालमेल के साथ मजबूत बनाए रखने की है। हमारी जिम्मेदारी जातीय जनगणना के बाद की परिस्थितियों में विभिन्न सामाजिक समूह के बीच राजनीतिक संतुलन बनाने की है। साल 2027-28 में लोकसभा सीटों के परिसीमन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद सामने खड़े हालात से निपटने के लिए कैडर और नेतृत्व को संतुलित रखने का है। वर्ष 2029 में विधायिका में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण लागू होने के बाद पार्टी को हर स्तर पर महिला नेतृत्व और कैडर

तैयार करने का है। हमारी जिम्मेदारी अपने वरिष्ठ नेताओं के अनुभव और योगदान को लेकर युवा और सक्षम नेताओं के आसरे उत्तर और पश्चिम भारत से बाहर भी अपना विजयी परचम लहराते हुए पार्टी को एक अखिल भारतीय दल बनाने की है। फिलहाल हमारी जिम्मेदारी पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, पुडुचेरी तथा असम में चुनावी जीत दिलाने की है। पश्चिम बंगाल जहाँ पार्टी अभी सत्ता से दूर है। वहां प्रशासन, संगठन और भावनात्मक राजनीति-तीनों का गहरा अनुभव रखने वाली राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को कुर्सी से उतारकर भाजपा युग की शुरूआत करना है। मजबूत संगठन और स्थिर वोट के आसरे सत्ता के ताज के साथ ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करना है। तमिलनाडू और केरल जहाँ सियासत केवल सत्ता का खेल नहीं है, बल्कि पहचान, संस्कृति तथा सामाजिक संरचना के साथ जुड़ी हुई है, जहाँ पर द्रविड़ राजनीति की मजबूत विरासत और वामपंथी तथा कांग्रेस का सामाजिक आधार है, वहाँ पर गठबंधन, सामाजिक संवाद और स्थानीय नेतृत्व का विकास करते हुए सत्ता का सिंहासन हासिल करना है। और असम जहाँ सुशासन, स्थिरता तथा स्थानीय आकांक्षाओं को पूरा करते हुए अपनी सत्ता को आगे भी बरकरार रखना है।

जिम्मेदारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वैचारिक अपेक्षाओं और पार्टी के चुनावी व्यावहारिकताओं के बीच बेहतर तालमेल बिठाए रखने की है। 'एक देश-एक चुनाव' के हालात में पार्टी को एक साथ चुनावी मोड में लाने के लिए संगठनात्मक तालमेल, संसाधन तथा रणनीति में बदलाव करते हुए अपनी सूझबूझ, संयम और क्षमताओं को पार्टी नेतृत्व के सामने रखने का भी है। और सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण जिम्मेदारी क्षेत्रीय दलों के साथ संतुलन, नए संभावित सहयोगियों के लिए उचित जगह बनाना और पुराने साथियों के साथ विश्वास को और मजबूत करते हुए 2029 के लोकसभा का विजयी पथ तैयार करने का है ताकि भारतीय जनता पार्टी भारतीय सियासत की सबसे स्थायी, संगठित और प्रभावशाली पार्टी की पहचान भविष्य में भी बनाए रख सके।

दरभंगा राज परिवार की अंतिम निशानी थी

महारानी कामसुंदरी देवी

गोपेंद्र कु सिन्हा गौतम

बिहार प्रान्त के दरभंगा रियासत के अंतिम महाराजा कामेश्वर सिंह की तीसरी और अंतिम पत्नी महारानी कल्याणी देवी उर्फ काम सुन्दरी देवी का निधन हो गया। इनका जन्म 22 अक्टूबर 1932 में मंगरौनी ग्राम, जिला मधुबनी, बिहार में हुआ था।

इनका विवाह दरभंगा के महाराजा कामेश्वर सिंह के साथ 1940 में हुआ था। महारानी काम सुंदरी देवी का 94 साल की उम्र में 12 जनवरी 2026 सोमवार प्रातः तीन बजे निधन हो गया। उन्होंने अपने आवास 'कल्याणी निवास' में अंतिम सांस ली। उनके निधन से दरभंगा राज का एक युग का समाप्त हो गया। महारानी कामसुंदरी के निधन के साथ दरभंगा राज की शाही परंपरा का अंतिम अध्याय समाप्त हो गया है दरभंगा राज की आखिरी पहचान के रूप में महारानी को देखा जाता था।

उनका अंतिम संस्कार माधेश्वर परिसर में बने श्यामा माई मंदिर परिसर में संपन्न हुआ। दिवंगत महारानी को मुखाग्नि उनके चचेरे पोता कुमार रत्नेश्वर सिंह के द्वारा दी गई।

उनके पति महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह संविधान सभा के सदस्य और पूर्व राज्यसभा सांसद थे। कामसुंदरी देवी के निधन के साथ ही दरभंगा राजघराने की अंतिम कड़ी भी इतिहास में दर्ज हो गई है, जो अब केवल यादों का हिस्सा रह गई है।

महाराजा कामेश्वर सिंह की पहली पत्नी महारानी राजलक्ष्मी और दूसरी पत्नी महारानी कामेश्वरी प्रिया पहले ही इस दुनिया से जा चुकी थीं।

महारानी कामसुंदरी दरभंगा राज घराने की अंतिम महारानी थीं। वे भले ही प्रत्यक्ष सत्ता में नहीं रहीं, लेकिन उन्होंने राजघराने की परंपराओं, संस्कारों और सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरी गरिमा के साथ निभाया। राज दरभंगा के परिवार के सदस्य अजीत सिंह ठाकुर का कहना है कि महारानी काम सुंदरी का जीवन सादगी का प्रतीक माना जाता था।

वे मिथिला की सांस्कृतिक पहचान को जीवंत रखने में योगदान देती रहीं। उनका निधन केवल एक इंसान का जाना नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक धरोहर का अंत है।'

भारत सरकार को सोना दान

राजमाता काम सुंदरी देवी को देशभक्ति और त्याग के लिए विशेष रूप से याद किया जाएगा. भारत-चीन युद्ध के दौरान उन्होंने राष्ट्रहित में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए भारत सरकार को 600 किलोग्राम सोना दान में दिया था।

'यह योगदान आज भी देश के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है। दरभंगा राज की परंपरा को उन्होंने गरिमा और सेवा भाव के साथ आगे बढ़ाया था।

महारानी कामसुंदरी देवी राज परिवार की सबसे वरिष्ठ सदस्य के रूप में जानी जाती थीं। महाराजा कामेश्वर सिंह का निधन 1962 में हुआ था, जिसके बाद महारानी ने राज परिवार की जिम्मेदारियों को संभाला और परंपराओं को जीवित रखने का प्रयास किया।

महारानी सामाजिक और परोपकारी कार्यों के लिए विख्यात थीं उन्होंने अपने महाराजा कामेश्वर सिंह की स्मृति में महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउंडेशन की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य महाराजा की बौद्धिक और सांस्कृतिक विरासत को बचाना था। इसका मुख्यालय दरभंगा स्थित कल्याणी निवास है। इस फाउंडेशन की सबसे बड़ी उपलब्धि महाराजा का निजी पुस्तकालय है।

दरभंगा महाराज के परिवार के द्वारा बनाए गए मकान में दरभंगा विश्वविद्यालय,कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा में एयरपोर्ट बना है। वह भी महाराज दरभंगा के द्वारा ही बनाया गया था।

दरभंगा राज का इतिहास

दरभंगा राज का इतिहास लगभग सोलहवीं शताब्दी से शुरू होता है। मिथिला क्षेत्र में उस समय स्थानीय सामंतों और जमींदारों का प्रभाव था, लेकिन एक संगठित और शक्तिशाली राजवंश का उदय महाराज महेश ठाकुर के साथ हुआ। महाराज महेश ठाकुर दरभंगा राज के पहले शासक थे, जिन्हें 1557 ईस्वी में दिल्ली के मुगल सम्राट अकबर ने उनकी विद्वता से प्रभावित होकर मिथिला क्षेत्र का शासक नियुक्त किया था।

कहा जाता है कि महाराज महेश ठाकुर ने अकबर के दरबार में अपनी विद्वता और प्रशासनिक क्षमता से विशेष स्थान बनाया था। इसके बाद उन्हें मिथिला क्षेत्र की जिम्मेदारी सौंपी गई और यहीं से दरभंगा राज की नींव पड़ी।

दरभंगा राजधानी की वंशावली: खंडवला राजवंश का शासन मिथिला में 16वीं शताब्दी में शुरू हुआ. सबसे पहले शासन की शुरूआत का केंद्र भौंडागढ़ी हुआ करता था। बाद में वहां से उठकर दरभंगा में चला गया। पहले शासन महाराज महेश ठाकुर और अंतिम शासक महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह हुए।

'मिथिला के इतिहास' नामक पुस्तक में दरभंगा राज्य का पूरा वंशावली दिया गया है।सबसे पहले शासक महाराज महेश ठाकुर थे।

दरभंगा राज का विस्तार

दरभंगा राज बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र में लगभग 8380 किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ था। जिसका मुख्यालय दरभंगा था। ब्रिटिश राज के दौरान तत्कालीन बंगाल के 18 सर्किल के 4,495 गाँव दरभंगा नरेश के शासनाधीन थे। शासन-प्रशासन लगभग 7,500 अधिकारी और मातहतों के अधीन था। भारत के रजवाड़ों में एवं प्राचीन संस्कृति को लेकर दरभंगा राज का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है।

दरभंगा राज परिवार की उत्पत्ति

दरभंगा के राज परिवार की उत्पत्ति मुगल बादशाह अकबर के शासन के दौरान हुआ माना जाता है। दरभंगा राज के शासक भारत में सबसे बड़े जमींदारों में से एक थे।

राजा गोपाल, परमानन्द शुभंकर, पुरुषोत्तम, सुन्दर महिनाथ, नरपति, राघव सिंह, विसुन (विष्णु) सिंह नरेन्द्र सिंह, रानी पद्मावती 1770-1778 तक, राजा प्रताप सिंह,राजा माधव सिंह, महाराजा छत्र सिंह, महाराजा रुद्र सिंह, महाराजा महेश्वर सिंह, महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह, महाराजाधिराज रामेश्वर सिंह- 1898-1929 तक। इन्हें ब्रिटिश सरकार की ओर से 'महाराजाधिराज' का विरुद दिया गया तथा और भी अनेक उपाधियाँ मिलीं। अंतिम शासक महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह थे। जिनका निधन 1962 ई. में हो गया था।

महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह गौतम बहादुर

महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह के कार्यकाल में ही भारत स्वतंत्र हुआ और जमींदारी प्रथा समाप्त हुई। देशी रियासतों का अस्तित्व समाप्त हो गया। महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह को संतान न होने से उनके भतीजे (राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह जी के ज्येष्ठ पुत्र) कुमार जीवेश्वर सिंह संपत्ति के अधिकारी हुए।

दरभंगा नरेश कामेश्वर सिंह अपनी शान-शौकत के लिए पूरी दुनिया में विख्यात थे। अंग्रेज शासकों ने इन्हें 'महाराजाधिराज' की उपाधि दी थी। राज दरभंगा ने नए जमाने के रंग को भांप कर कई कंपनियों की शुरूआत की थी। नील के व्यवसाय के अलावा महाराजाधिराज ने चीनी मिल, कागज मिल आदि खोले। इससे बहुतों को रोजगार मिला और राज सिर्फ किसानों से खिराज की वसूली पर ही आधारित नहीं रहा। आय के नये स्रोत बने। इससे स्पष्ट होता है कि दरभंगा नरेश आधुनिक सोच के व्यक्ति थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में दरभंगा महाराज ने महत्त्वपूर्ण काम किया। उन्होंने 'न्यूजपेपर एंड पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड' की स्थापना की और कई अखबार व पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया। अंग्रेजी में 'द इंडियन नेशन', हिंदी में 'आर्यावर्त (समाचारपत्र)' और मैथिली में 'मिथिला मिहिर' साप्ताहिक मैगजीन का प्रकाशन किया। एक जमाना था जब बिहार में आर्यावर्त सबसे लोकप्रिय अखबार था।

संगीत और ललित कला में योगदान

दरभंगा महाराज संगीत और अन्य ललित कलाओं के बहुत बड़े संरक्षक थे। 18वीं सदी से ही दरभंगा हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का बड़ा केंद्र बन गया था। उस्ताद बिस्मिल्ला खान, गौहर जान, पंडित रामचतुर मल्लिक, पंडित रामेश्वर पाठक और पंडित सियाराम तिवारी दरभंगा राज से जुड़े विख्यात संगीतज्ञ थे। उस्ताद बिस्मिल्ला खान तो कई वर्षों तक दरबार में संगीतज्ञ रहें। कहते हैं कि उनका बचपन दरभंगा में ही बीता था। गौहर जान ने साल 1887 में पहली बार दरभंगा नरेश के सामने प्रस्तुति दी थी। फिर वह दरबार से जुड़ गईं। दरभंगा राज ने ग्वालियर के मुराद अली खान का बहुत सहयोग किया। वे अपने समय के मशहूर सरोदवादक थे। महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह स्वयं एक सितारवादक थे। ध्रुपद को लेकर दरभंगा राज में नये प्रयोग हुए। ध्रुपद के क्षेत्र में दरभंगा घराना का आज अलग स्थान है। महाराज कामेश्वर सिंह के छोटे भाई राजा विश्वेश्वर सिंह प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता और गायक कुंदन लाल सहगल के मित्र थे। जब दोनों दरभंगा के बेला पैलेस में मिलते थे तो बातचीत, गजल और ठुमरी का दौर चलता था। दरभंगा राज का अपना फनी ऑरकेस्ट्रा और पुलिस बैंड था।

खेल क्षेत्र में योगदान

खेलों के क्षेत्र में दरभंगा राज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतंत्रतापूर्व बिहार में लहेरिया सराय में दरभंगा महाराज ने पहला पोलो मैदान बनवाया था। राजा विश्वेश्वर सिंह ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन के संस्थापक सदस्य में थे। दरभंगा नरेशों ने कई खेलों को प्रोत्साहन दिया।

शिक्षा क्षेत्र में योगदान

शिक्षा के क्षेत्र में दरभंगा राज का योगदान अतुलनीय है। दरभंगा नरेशों ने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और कई संस्थानों को काफी दान दिया। महाराजा रामेश्वर सिंह बहादुर पंडित मदनमोहन मालवीय के बहुत बड़े समर्थक थे और उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय को 5 लाख रुपये कोष के लिए दिए थे। महाराजा रामेश्वर सिंह ने पटना स्थित दरभंगा हाउस (नवलखा पैलेस) पटना विश्वविद्यालय को दे दिया था। सन् 1920 में उन्होंने पटना मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल के लिए 5,00000 रुपये देने वाले सबसे बड़े दानदाता थे। उन्होंने आनन्द बाग पैलेस और उससे लगे अन्य महल कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय को दे दिए। कलकत्ता विश्वविद्यालय के ग्रन्थालय के लिए भी उन्होंने काफी धन दिया। ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय को राज दरभंगा से 70,935 किताबें मिलीं।

इसके अलावा, दरभंगा नरेशों ने स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में काफी योगदान किया। महाराजा लक्ष्मेश्वर सिंह बहादुर भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के संस्थापक सदस्य थे। अंग्रेजों से मित्रतापूर्ण संबंध होने के बावजूद वे काँग्रेस की काफी आर्थिक मदद करते थे।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, अबुल कलाम आजाद, सुभाष चंद्र बोस और महात्मा गांधी से उनके घनिष्ठ संबंध थे। सन् 1892 में कांग्रेस इलाहाबाद में अधिवेशन करना चाहती थी, पर अंग्रेज शासकों ने किसी सार्वजनिक स्थल पर ऐसा करने की इजाजत नहीं दी। यह जानकारी मिलने पर दरभंगा महाराजा ने वहां एक महल ही खरीद लिया। उसी महल के ग्राउंड पर कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। महाराजा ने वह किला कांग्रेस को ही दे दिया। महाराजा कामेश्वर सिंह गौतम ने भी राष्ट्रीय आन्दोलन में काफी योगदान दिया। महात्मा गांधी उन्हें अपने पुत्र के समान मानते थे।

दरभंगा के अंतिम महाराजाधिराज डॉ. सर कामेश्वर सिंह न केवल अपार संपत्ति के स्वामी थे, बल्कि वे शिक्षा, कला और दान के बड़े संरक्षक भी थे।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय, कलकत्ता विश्वविद्यालय जैसे संस्थानों को दिए गए

उनके दान आज भी इतिहास में दर्ज हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान उन्होंने देश के लिए 14 हजार तौला सोना दान किया था, जिसे लेने स्वयं तत्कालीन वित्त मंत्री दरभंगा आए थे।

उत्तराधिकारी के लिए तरसता रह गया दरभंगा राज

वैभवशाली दरभंगा राज की सबसे बड़ी विडंबना रही कि महाराज कामेश्वर सिंह की तीन शादियां हुईं, लेकिन किसी से भी संतान सुख की प्राप्ति नहीं हुई। जो महाराज कामेश्वर सिंह और उनकी महारानियों को आजीवन परेशान करता रहा।

पहली रानी का नाम था महारानी राजलक्ष्मी, दूसरी महारानी कामेश्वरी प्रिया और तीसरी व अंतिम महारानी कामसुंदरी देवी थी जिनका पिछले दिनों निधन हो गया।

कामेश्वरी प्रिया

ऐसा माना जाता है कि दूसरी यानी मंझली रानी कामेश्वरी प्रिया से महाराज कामेश्वर सिंह का विशेष अनुराग था। दोनों के बीच सिर्फ पति-पत्नी का नहीं, बल्कि सहयोगी और समान सोच रखने वाले साथियों जैसा रिश्ता था। ये महाराज के राज काज में सहयोग एवं सलाह देती थी।

कहा जाता है कि कामेश्वरी प्रिया ने समाज सेवा के लिए अपनी बेशकीमती पसंदीदा रॉयल्स रॉयस कार तक दान कर दी थी। लेकिन 1939 में उनकी असामयिक और रहस्यमयी मृत्यु ने दरभंगा राज की उत्तराधिकार की संभावनाओं को हमेशा के लिए जमींदोज कर दिया।

बीच में बिखर गई प्रेम और उत्तराधिकार का सपना

मैथिली समाज में यह धारणा रही है कि महारानी कामेश्वरी प्रिया संभवतः गर्भवती थीं। उनकी असामयिक निधन ने महाराज को अंदर तक झकझोर दिया। वे अंदर से टूट गये थे। इसके बाद उनके और बड़ी महारानी राजलक्ष्मी के बीच दूरी बढ़ती चली गई। ऐसी धारणा है कि मंझली रानी की मृत्यु के बाद महाराज जीवन के अंतिम क्षण तक भावनात्मक रूप से अलग थलग ही रहे। यही अकेलापन ने उन्हें दान, सेवा और सामाजिक कार्यों की ओर और अग्रसर किया जो वे पहले से ही थे।

महारानी कामसुंदरी देवी

शाही वैभव से आधुनिक संघर्ष तक महारानी कामसुंदरी देवी का जन्म 1930 के दशक में हुआ था और 1940 के दशक में उनका विवाह महाराजाधिराज सर कामेश्वर सिंह से हुआ।

महाराज का निधन 1962 में ही हो गया था, जिसके बाद महारानी पर न केवल राजघराने की स्मृतियों को सहेजने, बल्कि संपत्ति और ट्रस्ट से जुड़े लंबे कानूनी संघर्षों का बोझ भी आ पड़ा था उसका भी सामना कर रही थीं ।

कामसुंदरी देवी दरभंगा राज की अन्तिम महारानी थीं जो अभी तक जीवित थीं। उन्होंने महाराजा की स्मृति में महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह कल्याणी फाउंडेशन की स्थापना की, जिसके माध्यम से मिथिला की सांस्कृतिक, साहित्यिक और शैक्षणिक विरासत को संरक्षित किया गया। महाराज की निजी लाइब्रेरी, जिसमें 15 हजार से अधिक दुर्लभ किताबें और पांडुलिपियां थीं, उसे आम जनता के लिए खोला गया। यह कार्य उनके सामाजिक दायित्व और दूरदर्शिता का प्रमाण है।

स्वतंत्रता के बाद जमींदारी उन्मूलन और बदलती राजनीति ने दरभंगा राज को गहरे संकट में डाल दिया। इमरजेंसी के दौर में राजघराने की कई संपत्तियां सरकारी नियंत्रण में चली गईं।

पिछले कुछ महीनों से महारानी की तबीयत लगातार खराब चल रही थी। सितंबर 2025 में बाथरूम में फिसलने के बाद उन्हें ब्रेन हेमरेज और ब्लड क्लॉटिंग की समस्या हुई थी। उसके बाद उन्हें दरभंगा के एक निजी अस्पताल के आईसीयू में भर्ती कराया गया, लेकिन जनवरी 2026 तक उनकी सेहत में सुधार नहीं हुआ। अंततः उन्होंने कल्याणी निवास में ही अंतिम सांस ली। बिहार के कई राजनेताओं और सामाजिक कार्यकताओं ने महारानी के निधन पर शोक व्यक्त किया। युवराज कपिलेश्वर सिंह ने इसे परिवार के लिए अपूरणीय क्षति बताया। लोगों ने उनके निधन पर कहा कि एक युग का अंत हो गया।

महारानी कामसुंदरी देवी का जीवन इस बात का प्रतीक है कि कैसे एक शाही परिवार ने समय के साथ वैभव खोया, लेकिन संस्कार, सेवा और स्वाभिमान नहीं छोड़ा। दरभंगा राज की कहानी आज भी मिथिला की स्मृतियों में जीवित है, एक ऐसी रियासत, जहां अपार धन, तीन रानियां और असीम दानशीलता थी, लेकिन एक उत्तराधिकारी की कमी हमेशा सताती रही। महारानी कामसुंदरी देवी के निधन के साथ ही दरभंगा राज का वह अध्याय भी हमेशा के लिए बंद हो गया, जो राजसी वैभव से आधुनिक संघर्ष तक की पूरी गाथा अपने अंदर समाहित किया हुआ था। अब इतिहास का पन्ना बन गया दरभंगा राज। लोग अब उन्हें बस किताबों में ढूंढ पायेंगे उनकी स्मृति और कृतियां दरभंगा राज की याद दिलाता रहेगा।

SLM®
SLM SPICES, INCENSE STICKS, DHOOP,
AGRO PRODUCTS & FOOD PRODUCTS
शुद्धता में उत्तम, स्वाद में सर्वोत्तम
खुशबू जगाए स्वाद बढ़ाए
PURE INDIAN TASTE 100% NATURAL PRODUCTS
KISAAN POHA
SLM Turmeric
SLM Red Chilli
SLM Coriander
KISAAN Besan
100%
KISAAN GOLD SHUDH Chakki ATTA
M.P.
Whole Spices Range & Food Products
आत्मनिर्भर भारत की पहचान दिल में हिंदुस्तान
SLM
Mfd. & Mktd. By:
C.L.PRODUCTS (INDIA) LTD.
(Govt. Of India recognized Star Export house.)
181, Rithala Industrial Area, New Delhi-110085
MADE IN INDIA
Available On
amazon Flipkart
For any inquiry please contact us .
Chairman :
Ravinder Gupta
Customer Care No.:- 011-27057076 Trade Inquiry:- 8011111169 Email:- sales@slm.in Website:- www.slm.in

दुनिया जल के वैश्विक दिवालियापन की ओर बढ़ रही है

ललित गर्ग

'जल है तो जीवन है' -यह पंक्ति कोई नारा भर नहीं, बल्कि मानव सभ्यता का शाश्वत सत्य है। बिना जल के जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। किंतु विडंबना यह है कि जिस जल को हम जीवन का आधार मानते हैं, वही आज सबसे अधिक संकटग्रस्त संसाधन बन चुका है। देश-दुनिया में जल संकट के हालात विकराल हो चुके हैं और यह संकट अब केवल प्राकृतिक नहीं, बल्कि मानवीय लापरवाही, भ्रष्टाचार और मूल्यहीन शासन का भी परिणाम बनता जा रहा है। विश्व स्तर पर लगभग 25 देश अत्यधिक जल तनाव से जूझ रहे हैं। चार अरब से अधिक लोग वर्ष में कम से कम एक माह पानी की गंभीर कमी का सामना करते हैं। मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्र इस संकट की अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है। यहां 60 करोड़ से अधिक लोग उच्च जल तनाव वाले क्षेत्रों में रहते हैं। राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा और तमिलनाडु जैसे राज्य सबसे अधिक प्रभावित हैं, जबकि चेन्नई, बेंगलूरु और दिल्ली जैसे महानगरों में पानी की कमी रोजमर्रा की समस्या बन चुकी है।

दरअसल, जल संकट अब 'वाटर स्ट्रेस' से आगे बढ़कर 'ग्लोबल वाटर बैंक्रप्सी' यानी दुनिया जल के वैश्विक दिवालियेपन की ओर बढ़ रही है। स्थिति यह है कि जल स्रोतों का दोहन इतनी तीव्रता से हो रहा है कि उनकी प्राकृतिक भरपाई असंभव होती जा रही है। भूजल स्तर निरंतर गिर रहा है, नदियां सूख रही हैं और तालाब अतिक्रमण की भेंट चढ़ रहे हैं। यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक संकट भी है। जल संकट का सीधा प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। कृषि, उद्योग और ऊर्जा- तीनों ही क्षेत्र पानी पर निर्भर हैं। जब खेतों को पानी नहीं मिलता, उद्योग ठप होते हैं और बिजली उत्पादन प्रभावित होता है, तो देश की जीडीपी में 6 प्रतिशत तक की कमी का खतरा उत्पन्न हो जाता है। आमजन के लिए यह संकट जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर बन जाता है। जहां पानी पर्याप्त है, वहां बबार्दी हो रही है और जहां पानी की सबसे अधिक आवश्यकता है, वहां लोग बूंद-बूंद को तरस रहे हैं।

भारत सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जल संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता का विषय बनाया है। जल जीवन मिशन, अटल भूजल योजना और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जैसे कार्यक्रम इसी दिशा में ऐतिहासिक पहल हैं। जल जीवन मिशन का लक्ष्य हर घर तक नल से जल पहुंचाना है, ताकि स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित किया जा सके। अटल भूजल योजना भूजल के सतत प्रबंधन और सामुदायिक सहभागिता पर केंद्रित है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना 'हर खेत को पानी' के संकल्प को साकार करने का प्रयास है। इसके साथ ही जल शक्ति अभियान के तहत वर्षा जल संचयन, जल संरक्षण और जनभागीदारी पर विशेष जोर दिया गया। इन योजनाओं ने निश्चित रूप से जल संरक्षण के प्रति राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया है। कई क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन संरचनाएं बनी हैं, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई को बढ़ावा मिला है और भूजल पुनर्भरण के प्रयास हुए हैं। लेकिन इस सकारात्मक तस्वीर के पीछे एक कड़वी सच्चाई भी छिपी है- प्रशासनिक भ्रष्टाचार। यही वह दीमक है जो इन योजनाओं की उपयोगिता और प्रासंगिकता को नष्ट कर रही है, उन्हें मूल्यहीन बना रही है।

जल संकट से जुड़ी योजनाओं में भ्रष्टाचार कई रूपों में दिखाई देता है-घटिया निर्माण, फर्जी आंकड़े, अधूरी परियोजनाएं, कमीशनखोरी और जवाबदेही का अभाव। कहीं कागजों में ही वर्षा जल संचयन संरचनाएं बन जाती हैं, तो कहीं पाइपलाइन बिछाने में घटिया सामग्री का उपयोग होता है। कई स्थानों पर योजनाओं का लाभ वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुंच ही नहीं पाता। परिणाम यह होता है कि करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं, लेकिन न पानी मिलता है और न संकट कम होता है। भ्रष्टाचार केवल धन की बबार्दी नहीं करता, वह भविष्य की पीढ़ियों का अधिकार भी छीन लेता है। इन जटिल होती जल संकट स्थितियों के प्रति नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियों को बूंद-बूंद के लिये तरसना पड़ेगा। जल जैसे जीवनदायी संसाधन के साथ किया गया भ्रष्टाचार वास्तव में मानवता के साथ अपराध है। जब जल संरक्षण की योजनाएं कागजों में सिमट जाती हैं, तब जल संकट और भी गहरा हो जाता है। यही कारण है कि आज योजनाएं तो हैं, नीतियां भी हैं, लेकिन परिणाम अपेक्षित नहीं हैं। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, अतिदोहन, अनियंत्रित शहरीकरण और खराब प्रबंधन इस संकट को और बढ़ा रहे हैं। नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को रोका गया, तालाब पाट दिए गए और जंगलों का विनाश किया गया। परिणामस्वरूप वर्षा का पैटर्न बदल गया और जल स्रोत सूखते चले गए। यह स्पष्ट है कि केवल सरकारी योजनाओं से ही समाधान संभव नहीं, जब तक समाज स्वयं जिम्मेदारी न ले। दुनिया के अन्य देशों से हमें बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। इजराइल में ड्रिप इरिगेशन और डिसेलिनेशन तकनीक से 90 प्रतिशत तक पानी का पुनर्चक्रण किया जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया में वाटर ट्रेडिंग के माध्यम से जल संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया गया है। अमेरिका में अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग और यूरोप में स्मार्ट वाटर मैनेजमेंट सिस्टम जल संकट से निपटने के प्रभावी उपाय बने हैं। भारत में भी राजस्थान जैसे राज्यों में जोहड़, खादिन और बावड़ियों जैसे पारंपरिक जल संरचनाएं आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। समाधान का रास्ता स्पष्ट है-कठोर नीतियां, पारदर्शी प्रशासन और जनभागीदारी। जल संरक्षण से जुड़ी योजनाओं में भ्रष्टाचार के प्रति 'जीरो टॉलरेंस' नीति अपनानी होगी। तकनीक का उपयोग कर निगरानी और सामाजिक ऑडिट को अनिवार्य बनाना होगा। आमजन को भी जागरूक होना पड़ेगा कि वर्षा जल संचयन, जल की बचत, ड्रिप सिंचाई और अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग केवल विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता हैं। भारत में विश्व की कुल आबादी का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है, जबकि देश में पीने योग्य जल संसाधनों का मात्र 4 प्रतिशत भाग ही उपलब्ध है। देश में अत्यधिक जल दोहन तथा अकुशल प्रबंधन के कारण भू-जल स्तर में निरंतर गिरावट आ रही है। इसके परिणामस्वरूप आने वाले समय में देश को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है। नीति आयोग के अनुसार, वर्तमान में स्वच्छ जल की अपर्याप्त पहुँच के कारण लगभग 60 करोड़ भारतीय गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं तथा इसके कारण प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख लोगों की मृत्यु होती है। वर्ष 2030 तक देश में जल की मांग, आपूर्ति की दोगुनी होने की संभावना है। इससे देश में करोड़ों लोगों को जल के गंभीर संकट का सामना करना पड़ेगा तथा देश के सकल घरेलु उत्पाद में 6 प्रतिशत की हानि होने की संभावना है। आज समय बहुत कम है। यदि अभी भी हम नहीं चेते, तो आने वाली पीढ़ियां हमें कभी माफ नहीं करेंगी। जल का संकट केवल वर्तमान का नहीं, भविष्य का प्रश्न है। जल है तो जीवन है-इस सत्य को हमें व्यवहार में उतारना होगा। भ्रष्टाचार मुक्त जल प्रबंधन, जिम्मेदार प्रशासन और जागरूक नागरिक ही हमें इस 'जल-संकट' से बचा सकते हैं। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब इतिहास गवाह बनेगा कि मानव ने अपने ही हाथों से जीवन के स्रोत को नष्ट कर दिया। भू-जल प्रबंधन, कुशल सिंचाई प्रबंधन एवं वर्षा जल संचयन उपायों को अपनाकर भविष्य के जल संकट को कम किया जा सकता है।

एंटीएजिंग दवाओं का ग्लोबल मार्केट 90 हजार करोड़ रुपए

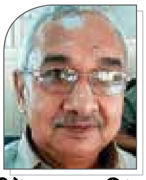

वीरेंद्र बहादुर सिंह

यह जानते हुए भी कि 'जवानी' तो एक दिन जानी ही है, उसे रोकने के प्रयास सदियों से होते आ रहे हैं। जवान दिखने की इच्छा कोई नई बात नहीं है। प्राचीनकाल में जड़ी-बूटियों के उपयोग से लेकर विशेष प्रकार के स्नान तक, लोग तरह-तरह के प्रयोग करते थे। कुछ पेड़ों की छाल त्वचा पर लगाई जाती थी, खास मिट्टी का लेप किया जाता था। आज भी मुल्तानी मिट्टी और चंदन का लेप कई कारणों से किया जाता है, जिनमें से एक कारण चेहरे की झुर्रियों को रोकना भी है। गुलाब जल, शहद आदि का उपयोग एशिया और यूरोप में सदियों से उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने के लिए किया जाता रहा है।

कुछ उपाय तो आज के समय में हैरान कर देने वाले लगते हैं। माना जाता था कि जानवरों के रक्त में स्नान करने से चेहरे पर झुर्रियाँ नहीं पड़तीं। इतिहासकारों के अनुसार, प्राचीनकाल में रानियां इस तरह के स्नान करके जवान बने रहने का प्रयास करती थीं। मिस्र की सबसे चर्चित रानी क्लियोपेट्रा के बारे में कहा जाता है कि वह जवानी बनाए रखने के लिए तरह-तरह के प्रयोग करती थीं। सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध इस रानी के बारे में कहा जाता है कि वह मगरमच्छ की बीट का पाउडर बनाकर चेहरे पर लगाती थीं! यहां तक दावे किए जाते हैं कि क्लियोपेट्रा कुंवारी युवतियों के रक्त से स्नान करती थीं, ताकि युवा बनी रहें।

ब्रिटेन में एलिजाबेथ प्रथम के शासनकाल में कहा जाता है कि रानी एलिजाबेथ और उनकी सहेलियां जवान दिखने के लिए चेहरे पर कच्चा मांस रगड़ती थीं। 18वीं सदी तक पूरे यूरोप में यह तकनीक महिलाओं में काफी लोकप्रिय थी। मिस्र, भारत, चीन और मेसोपोटामिया जैसी प्राचीन सभ्यताओं में अमीर लोग जवानी बनाए रखने के लिए तरह-तरह के प्रयास करते थे।

भारत के प्राचीन ग्रंथों में उम्र बढ़ने को रोकने के लिए आयुर्वेदिक उपाय बताए गए हैं। योग और प्राणायाम के माध्यम से भारतीय उम्र के प्रभाव को कम करते थे। फल, दूध और शहद से बने द्रव में घंटों तक स्नान करने की परंपरा भारतीय रानियों में प्रचलित थी। राजा और उमराव जवान और फिट रहने के लिए तेल मालिश करवाते थे।

संक्षेप में कहा जाए तो उम्र बढ़ने को रोकने की सनक सदियों पुरानी है। योग, जड़ी-बूटियां और व्यायाम जैसी कई विधियां स्वास्थ्य के लिए लाभकारी साबित हुई हैं, जबकि कई प्रयोग केवल अनुमान मात्र थे। उम्र रोकने के वैज्ञानिक प्रयोग पिछली सदी की शुरूआत में शुरू हुए। आधुनिक चिकित्सा में एंटीएजिंग दवाओं की खोज के बाद, 21वीं सदी के तीसरे दशक में यह वैश्विक बाजार राकेट की रफ्तार से आगे बढ़ रहा है।

वैज्ञानिक शोध और आधुनिक एंटीएजिंग चिकित्सा

19वीं सदी में फ्रांस के शोधकर्ता क्लॉड बर्नार्ड ने निष्कर्ष निकाला कि मेटाबॉलिक बदलाव का सीधा संबंध जवानी से है। यदि इन बदलावों को धीमा किया जा सके, तो उम्र बढ़ने की गति पर काबू पाया जा सकता है। 1889 में फ्रांस के ही वैज्ञानिक चार्ल्स एडवर्ड ब्राउन सेक्वार्ड ने हार्मोन पर प्रयोग किए और खुद पर हार्मोन थैरेपी आजमाई, जिसे पहला हार्मोनल ट्रीटमेंट माना जाता है।

इसके बाद अमेरिकी वैज्ञानिक डेनहैम हार्मन ने कहा कि कोशिकाओं को होने वाला नुकसान वृद्धावस्था का कारण बनता है। अमेरिका के ही डा. वालफोर्ड ने कैलोरी और उम्र बढ़ने के बीच संबंध को रेखांकित किया।

इन शोधों के आधार पर 20वीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक से जवान दिखने के लिए दवाओं की खोज शुरू हुई। डीएनए की पहचान के बाद इस क्षेत्र में बड़ा बदलाव आया। जैसे-जैसे मानव शरीर की आंतरिक संरचना को समझा गया, एंटीएजिंग दवाओं और उत्पादों पर व्यापक परीक्षण होने लगे। फेस क्रीम से लेकर सर्जरी तक के विकल्प सामने आए।

1990 में पहली बार ग्रोथ हार्मोन थैरेपी की गई। इससे यह स्पष्ट हुआ कि हार्मोन में बदलाव करके उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा किया जा सकता है। इसके बाद 'स्कायट्रोफा' जैसी दवाओं से उम्र को रोकने में सफलता मिली। 1990 से 2000 का दशक बोटॉक्स और फिलर्स का युग माना जाता है। बोटुलिनम टॉक्सिन (बोटॉक्स) को झुर्रियाँ कम करने की मंजूरी मिली। यह क्लॉस्ट्रिडियम बोटुलिनम बैक्टीरिया से उत्पन्न एक शक्तिशाली न्यूरोटॉक्सिक प्रोटीन है, जो मांसपेशियों के संकुचन को रोकता है। हायल्यूरोनिक एसिड आधारित डर्मल फिलर्स भी लोकप्रिय हुए। इससे एंटीएजिंग एक क्लिनिकल आधारित उद्योग बन गया।

बढ़ता बाजार और बढ़ते खतरे

धीरे-धीरे महंगी एंटीएजिंग दवाएं बाजार में आईं, जो हार्मोनल बदलाव पर काम करती हैं और चेहरे पर झुर्रियां नहीं आने देतीं। 40-45 वर्ष की उम्र में भी व्यक्ति 25-30 वर्ष का दिखाई देने लगता है। ग्लैमर इंडस्ट्री में इन दवाओं का खास क्रेज रहा, लेकिन महंगी होने के कारण इनका उपयोग सीमित था।

पिछले कुछ वर्षों में एंटीएजिंग क्रीम, दवाएं और ट्रीटमेंट मुख्यधारा में आ गए हैं। एक ओर कॉस्मेटिक उत्पाद जवान दिखने के दावे कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर डाक्टरों की सलाह से दवाओं और सर्जरी का चलन बढ़ा है। स्टेम सेल थैरेपी, जीन थैरेपी और टेलोमियर रिसर्च पर काम हो रहा है। मेटफॉर्मिन और रेस्वेराट्रोल जैसी दवाओं पर भी शोध जारी है। अब ये उपचार अपेक्षाकृत सस्ते हो गए हैं, जिससे इनका बाजार तेजी से बढ़ रहा है।

- एंटी-एजिंग के बाजार में आने वाले वर्षों में 8.5% की दर से वृद्धि होने की संभावना है
- जवान बने रहने का क्रेज सेहत के लिए खतरनाक भी साबित हो सकता है

एंटीएजिंग के वैश्विक बाजार में अभी 5.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है। 2023 में यह बाजार 79 अरब डालर का था, जो 2024 के अंत तक 83 अरब डालर और 2025 के अंत तक 90 अरब डालर तक पहुंच गया। अनुमान है कि 2033 तक यह बाजार 122 अरब डालर को पार कर जाएगा। आने वाले समय में इसमें 8.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि होगी। पिछले पांच वर्षों में स्किनकेयर और हेयरकेयर बाजार 48 प्रतिशत बढ़ा है।

मध्यम वर्ग और उच्चमध्यम वर्ग की आय बढ़ने से यह वर्ग भी ऐसी दवाओं और उपचारों पर खर्च करने लगा है। इससे भविष्य में इस बाजार के और विस्तार की संभावना है।

हालांकि एक गंभीर समस्या भी सामने आई है। कई लोग आनलाइन सलाहकारों की बातों में आकर बिना चिकित्सकीय निगरानी के दवाएं ले रहे हैं। इनके साइड इफेक्ट इतने खतरनाक हो सकते हैं कि कुछ मामलों में मौत तक हो जाती है। अधिक मात्रा लेने से हृदय, लीवर और किडनी पर गंभीर असर पड़ सकता है। चेहरे पर उम्र न दिखे, लेकिन शरीर के अंदरूनी अंग खोखले हो जाएं, तो यह जानलेवा साबित हो सकता है।

इसलिए एंटीएजिंग दवाएं केवल प्रमाणित चिकित्सकों की देखरेख में ही लेनी चाहिए। शरीर की प्रकृति, कामकाज और क्षमता के अनुसार विशेषज्ञ दवाओं की मात्रा तय करते हैं, जिससे हार्मोनल असंतुलन न हो और उम्र बढ़ने की गति धीमी हो सके।

एआई तकनीक और एंटीएजिंग का भविष्य

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के विकास से एंटीएजिंग के क्षेत्र में बड़ा बदलाव आएगा। बायोटेक्नोलॉजी और एआई आधारित निदान अधिक सटीक परिणाम देंगे। स्किनकेयर पूरी तरह पर्सनलाइज होगा। पहले जो उपचार कठिन और महंगे थे, वे अब सरल और सस्ते होंगे। गूगल के पूर्व वैज्ञानिक रे कुर्जवील का मानना है कि विज्ञान और तकनीक के संयुक्त प्रयासों से मानव की औसत आयु बढ़ेगी। उन्होंने अपनी पुस्तक 'द सिंग्युलैरिटी इज नियर' में दावा किया था कि तकनीक मनुष्य को दीर्घायु ही नहीं, अमर भी बना सकती है। पहले उनके विचारों को गंभीरता से नहीं लिया गया, लेकिन एआई और नैनो टेक्नोलॉजी के विकास के बाद स्थिति बदल रही है। नैनोबॉट्स, बोटॉक्स, स्टेम सेल और जीन थैरेपी जैसी तकनीकें भविष्य में एंटीएजिंग में निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं।

हनी ट्रैप: भय, बदनामी और अपराध का संगठित जाल

भीलवाड़ा जिले में सामने आए मामले के संदर्भ में

डॉ. सत्यवान सौरभ

राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में हनी ट्रैप के जरिए आम नागरिकों को फंसाकर ब्लैकमेल करने वाले एक संगठित गिरोह का पदार्फाश न केवल एक आपराधिक नेटवर्क का खुलासा है, बल्कि समाज के भीतर गहराते भय, चुप्पी और बदनामी की मानसिकता पर भी गंभीर प्रश्न खड़े करता है। यह मामला दर्शाता है कि किस तरह मानवीय कमजोरियों, सामाजिक संकोच और कानूनी डर का इस्तेमाल कर कुछ गिरोह सुनियोजित तरीके से लोगों को आर्थिक, मानसिक और सामाजिक रूप से बर्बाद कर रहे हैं।

पुलिस जांच में सामने आया है कि इस गिरोह में शामिल कुछ महिलाएं योजनाबद्ध ढंग से आम नागरिकों से संपर्क साधती थीं, उनसे दोस्ती और भावनात्मक नजदीकी बढ़ाती थीं, फिर उन्हें आपत्तिजनक परिस्थितियों में फंसा कर झूठे दुष्कर्म, अपहरण, मारपीट या अन्य गंभीर आपराधिक मामलों में फंसाने की धमकी देकर मोटी रकम वसूलती थीं। यह कोई आकस्मिक अपराध नहीं, बल्कि एक सोची-समझी रणनीति के तहत संचालित संगठित अपराध था।

जांच एजेंसियों के अनुसार इस गिरोह की कार्यप्रणाली बेहद सुनियोजित और चरणबद्ध थी। पहले चरण में आरोपी महिलाएं सोशल मीडिया, फोन कॉल या व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से संभावित शिकार से दोस्ती करती थीं। धीरे-धीरे भावनात्मक या व्यक्तिगत नजदीकी बढ़ाई जाती थी, जिससे पीड़ित को किसी खतरे का आभास न हो।

दूसरे चरण में पीड़ित को ऐसी स्थिति में ले जाया जाता था, जहां उसके खिलाफ आपत्तिजनक सामग्री या परिस्थितियाँ बनाई जा सकें। इसके बाद तीसरे और सबसे खतरनाक चरण में शुरू होता था भय का खेल–झूठे मुकदमों, पुलिस कार्रवाई, सामाजिक बदनामी और परिवार की प्रतिष्ठा पर आंच की धमकियों के जरिए ब्लैकमेलिंग।

कई मामलों में यह भी सामने आया है कि आरोपी महिलाएं अकेली नहीं थीं। उनके पति, प्रेमी या अन्य पुरुष सहयोगी इस पूरे षड्यंत्र में सक्रिय भूमिका निभाते थे–कभी धमकी देने वाले बनकर, कभी फर्जी गवाह के रूप में और कभी कथित अपहरण या मारपीट की कहानी रचने में सहायक बनकर।

पुलिस के अनुसार इन मामलों में ब्लैकमेलिंग, अवैध रूप से बंधक बनाना, अपहरण, मारपीट, लूट और आपराधिक षड्यंत्र जैसी गंभीर धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज किए गए हैं। यह स्पष्ट करता है कि यह अपराध केवल नैतिक या सामाजिक दायरे तक सीमित नहीं, बल्कि विधि व्यवस्था के लिए सीधी चुनौती है।

जांच में यह भी सामने आया है कि कुछ आरोपी महिलाएं पहले भी हनी ट्रैप के मामलों में जेल जा चुकी हैं, जबकि कुछ के खिलाफ अन्य आपराधिक प्रकरण अभी अनुसंधान के अधीन हैं। इसका अर्थ यह है कि यह अपराध किसी एक घटना का परिणाम नहीं, बल्कि लंबे समय से सक्रिय एक नेटवर्क का हिस्सा है, जो बार-बार नए शिकार तलाशता रहा।

इस पूरे मामले का सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि अधिकांश पीड़ित सामाजिक बदनामी के भय से लंबे समय तक सामने नहीं आए। भारतीय समाज में आज भी व्यक्तिगत संबंधों, नैतिकता और इज्जत को लेकर गहरी संवेदनशीलता है। इसी मानसिकता का लाभ उठाकर ऐसे गिरोह लोगों को चुप रहने पर मजबूर कर देते हैं।

पीड़ित यह सोचकर डरते हैं कि यदि उन्होंने पुलिस से संपर्क किया तो समाज, परिवार या कार्यस्थल पर उनकी छवि खराब हो जाएगी। इसी डर का इस्तेमाल कर आरोपी बार-बार रकम वसूलते रहे। कई मामलों में पीड़ितों से लाखों रुपये तक की उगाही की गई, फिर भी धमकियों का सिलसिला खत्म नहीं हुआ।

पुलिस का स्पष्ट कहना है कि ऐसे मामलों में चुप्पी अपराधियों को और मजबूत करती है। जितना अधिक समय पीड़ित डर के कारण चुप रहता है, उतना ही अधिक वह अपराधी के नियंत्रण में चला जाता है। यही कारण है कि भीलवाड़ा जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेन्द्र सिंह ने आमजन से अपील की है कि ऐसे किसी भी मामले में भयभीत न हों और तुरंत पुलिस से संपर्क करें।

पुलिस ने यह भी आश्वासन दिया है कि पीड़ित की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी और जांच के दौरान उसकी सुरक्षा और सम्मान का पूरा ध्यान रखा जाएगा। महिला हो या पुरुष–किसी भी आरोपी को कानून के दायरे से बाहर नहीं रखा जाएगा।

यह मामला एक और संवेदनशील प्रश्न उठाता है–कानून का दुरुपयोग। महिलाओं की सुरक्षा के लिए बनाए गए कानून समाज के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, लेकिन जब इन्हीं कानूनों का इस्तेमाल झूठे आरोपों और ब्लैकमेलिंग के लिए किया जाता है, तो इसका सबसे बड़ा नुकसान वास्तविक पीड़ितों को होता है।

यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि हनी ट्रैप जैसे मामलों को उजागर करना महिलाओं के खिलाफ नहीं, बल्कि कानून के दुरुपयोग के खिलाफ कार्रवाई है। न्याय प्रणाली की साख तभी बनी रह सकती है जब वह हर मामले को निष्पक्षता से देखे–चाहे आरोपी महिला हो या पुरुष।

हनी ट्रैप जैसे संगठित अपराध केवल पुलिस कार्रवाई से पूरी तरह खत्म नहीं हो सकते। इसके लिए समाज को भी अपनी सोच में बदलाव लाना होगा। पीड़ित को दोषी ठहराने की प्रवृत्ति, चरित्र पर सवाल उठाने की मानसिकता और बदनामी का भय–ये सभी अपराधियों के सबसे बड़े हथियार हैं।

प्रशासन की जिम्मेदारी है कि वह ऐसे मामलों में तेज, निष्पक्ष और पारदर्शी कार्रवाई करे, वहीं समाज की जिम्मेदारी है कि वह पीड़ित के साथ खड़ा हो, न कि उसे कटघरे में खड़ा करे।

भीलवाड़ा जिले में सामने आया हनी ट्रैप गिरोह का खुलासा एक चेतावनी है–आम नागरिकों के लिए भी और व्यवस्था के लिए भी। यह मामला दिखाता है कि अपराध अब केवल हथियारों से नहीं, बल्कि मानसिक दबाव, भय और सामाजिक कमजोरियों से भी किया जा रहा है।

ऐसे समय में सबसे जरूरी है–जागरूकता, साहस और कानून पर भरोसा। जब पीड़ित चुप्पी तोड़ेंगे, तभी अपराधियों का यह जाल कमजोर पड़ेगा। पुलिस की अपील और कार्रवाई तभी सफल होगी, जब समाज डर के बजाय सच का साथ देगा।

हनी ट्रैप केवल व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि सामाजिक और कानूनी चुनौती है। इसका समाधान भी सामूहिक साहस, संवेदनशील सोच और निष्पक्ष न्याय में ही निहित है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन

रातों की दूरी मिटाती, नए भारत की नई रफ्तार

विनोद कुमार सिंह

भारतीय रेल का इतिहास केवल पटरियों और इंजनों का नहीं, बल्कि यह भारत की सामाजिक चेतना, आर्थिक गतिशीलता और राष्ट्रीय एकता की वह जीवंत गाथा है, जिसमें समय-से इलाकों को जोड़ा, लोगों को रोजगार, शिक्षा, व्यापार और आस्था की यात्राओं से जोड़े रखा। किंतु इक्कीसवीं सदी के तीसरे दशक में प्रवेश करते हुए रेल व्यवस्था केवल परिवहन का साधन नहीं रह गई है, वह अब विकास का इंजन बन चुकी है। इसी परिवर्तन कारी यात्रा की अगली महत्त्वपूर्ण कड़ी है 'वंदे भारत स्लीपर ट्रेन', जिसका संभावित उद्घाटन स्वयं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया जाना है।

वंदे भारत स्लीपर ट्रेन केवल एक नई रेल सेवा नहीं है, बल्कि यह भारत में रात्रिकालीन लंबी दूरी की यात्रा की पूरी अवधारणा को पुनर्परिभाषित करने वाला राष्ट्रीय परियोजना की परिकल्पना है। यह उस भारत की आकांक्षा का प्रतीक है, जो गति भी है, सुरक्षित भी है, आरामदेह भी है और आत्मनिर्भर भी है। यह उस सोच का विस्तार है जिसमें विकास केवल दिन की रोशनी तक सीमित नहीं रहता, बल्कि रात की शांति में भी निरंतर आगे बढ़ता है। सर्वविदित रहे कि वर्ष 2019 में जब पहली वंदे भारत एक्सप्रेस राष्ट्र को समर्पित की गई थी, तब वह केवल एक आधुनिक ट्रेन नहीं थी, बल्कि यह संकेत था कि भारत अब आयातित तकनीक का उपभोक्ता नहीं रहेगा। वंदे भारत एक्सप्रेस पूरी तरह मेक-इन-इंडिया पहल का परिणाम थी—डिजाइन से लेकर निर्माण तक। उसी स्वदेशी सोच का स्वाभाविक विस्तार अब वंदे भारत स्लीपर ट्रेन के रूप में सामने आ रहा है। जहाँ वंदे भारत एक्सप्रेस ने दिन की तेज यात्रा को नया आयाम दिया, वहीं वंदे भारत स्लीपर का लक्ष्य है। भारत की लंबी दूरी की रात्री यात्राओं को गति, सुविधा और भरोसे के साथ जोड़ना।

इस ट्रेन की मूल अवधारणा स्पष्ट है। जहाँ लगभग आठ सौ से बारह सौ किलोमीटर की दूरी को एक ही रात में तय करना। यह कोई साधारण लक्ष्य नहीं है। भारत जैसे विशाल देश में यह दूरी अक्सर हवाई यात्रा और रेल यात्रा के बीच चयन की दुविधा पैदा करती है। वंदे भारत स्लीपर इसी दुविधा को समाप्त करने की दिशा में एक ठोस कदम है। यह ट्रेन उन यात्रियों के लिए एक किफायती और भरोसेमंद विकल्प प्रस्तुत करती है, जो समय की कमी के कारण मजबूरी में महँगी हवाई यात्रा करते हैं। रात में ट्रेन में सवार होकर सुबह गंतव्य तक पहुँचना, बिना अतिरिक्त खर्च और बिना हवाई अड्डों की जटिलताओं के—यह सुविधा मध्यम वर्ग, नौकरीपेशा और तीर्थयात्रियों सभी के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

यदि इस परिप्रेक्ष्य में 17 जनवरी की उस यात्रा की कल्पना की जाए, जब एक श्रद्धालु पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता से प्रस्थान करता है, तो यह यात्रा केवल भौगोलिक नहीं रह जाती। कोलकाता का प्राचीन कालीघाट मंदिर, जहाँ माँ काली की शक्ति और करुणा में सदियों से लोकआस्था बहती रही है, वहाँ दर्शन के बाद रात में वंदे भारत स्लीपर ट्रेन में बैठा यात्री केवल स्टेशन नहीं छोड़ता, वह अपने भीतर श्रद्धा और विश्वास का संबल लेकर आगे बढ़ता है ट्रेन रात के अंधेरे को चीरते हुए आगे बढ़ती है और यह यात्रा धीरे-धीरे एक आध्यात्मिक अनुभव में बदल जाती है। रेल यात्रियों के लिए आराम दायक यात्रा, अध्यात्म का आनंद-आर्थिक विकास की बहार है, जहाँ यात्री ना केवल अपने गंतव्य पर समय पर पहुंचे, बल्कि वें यात्रा के दौरान स्थानीय खाना-पान व पकवान व स्थानीय सभ्यता व संस्कृति की झलक से रू-ब-रु होगे।

> रेल यात्रियो के लिए आराम दायक यात्रा, अध्यात्म का आनंद - आर्थिक विकाश की बहार है, जहाँ यात्रा ना केवल अपने गंतव्य पर समय पर पहुंचे, ब्लकि वें यात्रा के लिए दौरान स्थानीय खाना-पान व पकवान व स्थानीय सम्भयता व संस्कृति की झलक से रू- ब-रु होगे

तकनीकी दृष्टि से वंदे भारत स्लीपर ट्रेन भारतीय रेल के इतिहास में एक निर्णायक छलांग है। यह सेमी-हाई स्पीड श्रेणी की ट्रेन होगी, जिसकी व्यावसायिक गति लगभग एक सौ साठ किलोमीटर प्रति घंटा तक रखी गई है। पूरी तरह इलेक्ट्रिक और वितरित पावर प्रणाली पर आधारित यह ट्रेन न केवल तेज है, बल्कि ऊर्जा दक्ष भी है। इसका निर्माण भारतीय इंजीनियरिंग क्षमता का प्रमाण है, जिसमें नब्बे प्रतिशत से अधिक सामग्री स्वदेशी है। यह आत्मनिर्भर भारत की उस सोच को साकार करती है, जिसमें तकनीक केवल गति नहीं, बल्कि आत्मसम्मान का माध्यम बनती है। रात के सफर में सुरक्षा सबसे बड़ा प्रश्न रहा है। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन इसी चिंता का उत्तर है। स्वदेशी कवच टक्कर-रोधी प्रणाली, आधुनिक ब्रेकिंग सिस्टम, अग्नि सुरक्षा तकनीक और सीसीटीवी निगरानी इसे पारंपरिक रात्रि ट्रेनों से अलग पहचान देती है। यह भरोसा देती है कि आधुनिक भारत में रात की यात्रा भी उतनी ही सुरक्षित और सम्मानजनक हो सकती है, जितनी दिन की।

आराम और यात्री अनुभव के स्तर पर यह ट्रेन स्लीपर यात्रा की परिभाषा बदल देती है। कंपन रहित कोच, बेहतर सस्पेंशन, नियंत्रित तापमान, होटल-स्तरीय बेडिंग और स्वच्छ, स्पर्श-रहित शौचालय यात्रियों को मानसिक और शारीरिक विश्राम का अनुभव कराते हैं। कोलकाता से गुवाहाटी की यह रात्रि यात्रा अब केवल दूरी तय करने का साधन नहीं रहती, बल्कि आत्मिक शांति का माध्यम बन जाती है। सुबह जब ट्रेन गुवाहाटी पहुँचती है, तो माँ कामाख्या देवी के दिव्य दर्शन के लिए बढ़ते कदमों में थकान नहीं, बल्कि ऊर्जा और श्रद्धा होती है। आर्थिक दृष्टि से भी वंदे भारत स्लीपर ट्रेन भारतीय रेल के लिए दूरदर्शी निवेश है। यह हवाई यात्रा का किफायती विकल्प बनकर न केवल यात्रियों के खर्च को कम करती है, बल्कि पर्यावरण पर पड़ने वाले बोझ को भी घटाती है। कम कार्बन उत्सर्जन और ऊर्जा दक्ष संचालन इसे हरित परिवहन की दिशा में एक मजबूत कदम बनाते हैं। इस परियोजना का सामाजिक प्रभाव भी व्यापक है। यह ट्रेन केवल कोलकाता और गुवाहाटी जैसी राजधानियों को नहीं जोड़ती, बल्कि उनके बीच बसे उन क्षेत्रों को भी विकास की मुख्यधारा से जोड़ती है, जिनकी उपेक्षा अब तक रात्री रेल सेवाओं में होती रही है। यह बंगाल और असम की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक चेतना को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वंदे भारत स्लीपर ट्रेन के संभावित उद्घाटन का प्रतीकात्मक अर्थ भी गहरा है। यह उस राजनीतिक इच्छाशक्ति का संकेत है, जो बुनियादी ढाँचे को केवल आँकड़ों की उपलब्धि नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मविश्वास का आधार मानती है। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के नेतृत्व में भारतीय रेल जिस निरंतरता से सुरक्षा, तकनीक और सेवा गुणवत्ता में सुधार कर रही है, वंदे भारत स्लीपर उसी यात्रा की अगली स्वाभाविक कड़ी है। अंततः वंदे भारत स्लीपर ट्रेन इस सदी के भारत की वह घोषणा है, जिसमें कहा जा सकता है कि विकास अब दिन तक सीमित नहीं रहा। जब जल्द ही किसी शांत रात को कोलकाता से चली ट्रेन सुबह गुवाहाटी पहुँचती है और यात्री अपने आराध्य माँ कामाख्या देवी के दिव्य दर्शन के लिए श्रद्धा से आगे बढ़ता है, तब यह स्पष्ट हो जाता है कि यह केवल एक यात्रा नहीं थी। यह आधुनिकता, आस्था और राष्ट्रनिर्माण की साझा यात्रा थी। जब देश की रातें भी तेज, सुरक्षित और सम्मानजनक यात्रा से भर जाएँ, तब समझना चाहिए कि परिवर्तन केवल पटरियों पर नहीं, बल्कि नई सोच और मानवीय संवेदना में भी उतर चुका है।

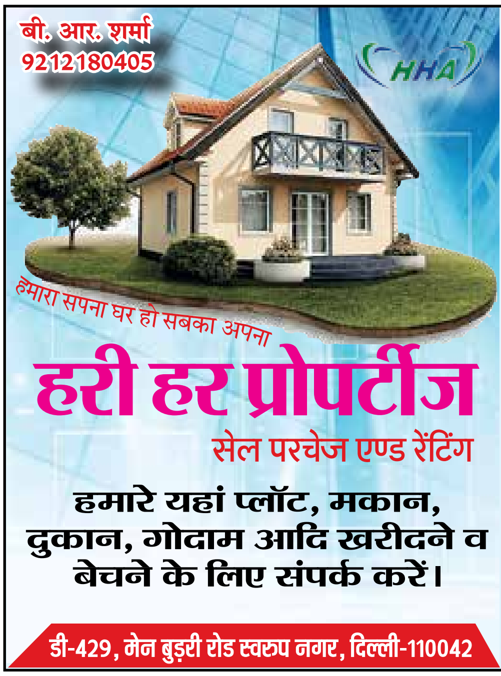

बोर्ड परीक्षा के दौरान तनाव और चिंता से कैसे बचें

डॉ. विजय गर्ग

बोर्ड परीक्षाएं छात्र के शैक्षणिक जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण होती हैं। वे अक्सर दबाव, अपेक्षाएं और अज्ञात का डर लेकर आते हैं। हालांकि तनाव का एक निश्चित स्तर छात्रों को अध्ययन करने के लिए प्रेरित कर सकता है, लेकिन बहुत अधिक तनाव और चिंता एकाग्रता, स्मृति और समग्र कल्याण को नुकसान पहुंचा सकती है। इस दबाव को प्रबंधित करना सीखना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि परीक्षा की तैयारी। तनाव कम करने का सबसे प्रभावी तरीका उचित योजना बनाना है। एक यथार्थवादी अध्ययन समय-सारिणी बनाने से विशाल पाठ्यक्रम को छोटे, प्रबंधनीय भागों में विभाजित करने में मदद मिलती है। जब छात्रों को पता होता है कि उन्हें क्या पढ़ना है और कब, तो उनमें भारीपन की भावना कम हो जाती है। इससे नियंत्रण की भावना भी पैदा होती है, जो स्वाभाविक रूप से चिंता को कम करती है। नियमित ब्रेक और संतुलित दिनचर्या समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। लंबे समय तक लगातार अध्ययन करने से मन थक सकता है। छोटे-छोटे ब्रेक, हल्के स्ट्रेचिंग या त्वरित सैर मस्तिष्क को तरोताजा कर सकती है और ध्यान केंद्रित करने में सुधार कर सकती है। इसके साथ ही, पर्याप्त नींद लेना भी आवश्यक है। नींद स्मृति को सुदृढ़ करने में मदद करती है और भावनाओं को स्थिर रखती है। देर रात तक बैठने से चिंता बढ़ सकती है और प्रदर्शन कम हो सकता है। स्वस्थ भोजन और जलयोजन भी तनाव प्रबंधन में भूमिका निभाते हैं। पौष्टिक भोजन, फल और भरपूर पानी ऊर्जा के स्तर को स्थिर रखता है। अत्यधिक कैफीन या जंक फूड से बेचैनी बढ़ सकती है और नींद में खलल पड़ सकता है, जिससे चिंता बढ़ती है। एक अन्य शक्तिशाली उपकरण सकारात्मक सोच और आत्म-चर्चा है। कई छात्र लगातार यह सोचकर अनावश्यक भय पैदा करते हैं कि, 'अगर मैं असफल हो जाऊं तो क्या होगा?' या 'मैं ऐसा नहीं कर सकता। ऐसे विचारों को सकारात्मक विचारों से प्रतिस्थापित करने से, जैसे कि 'मैं तैयार हूं, मैं तैयार हूं या मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूंगा' आत्मविश्वास बढ़ता है। गहरी सांस लेने, ध्यान करने या सरल विश्राम अभ्यास से घबराहट के क्षणों में मन शांत हो सकता है। दोस्तों या सहपाठियों के साथ तुलना करने से बचें। प्रत्येक छात्र की गति, सीखने की शैली और ताकत अलग-अलग होती है। अंकों, अध्ययन के घंटों या मॉक टेस्ट स्कोर की तुलना करने से केवल दबाव बढ़ता है और आत्म-सम्मान कम होता है। दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के बजाय अपनी प्रगति पर ध्यान केंद्रित करें। माता-पिता, शिक्षकों और मित्रों का समर्थन योजना के साथ 'अज्ञात' पर विजय प्राप्त करें चिंता अक्सर नियंत्रण से बाहर होने की भावना से उत्पन्न होती है। संरचना इसके लिए सबसे अच्छा उपाय है। छोटे-छोटे टुकड़ों की शक्तिः 200 पृष्ठों वाली पाठ्यपुस्तक को देखने के बजाय, उसे 'सूक्ष्म लक्ष्यों' में विभाजित करें एक विशिष्ट अध्याय को पूरा करना जीत जैसा लगता है, जिससे डोपामाइन निकलता है और तनाव कम होता है। यथार्थवादी समय-सारिणीः ऐसे 'आकांक्षी' कार्यक्रम से बचें जो सांस लेने के लिए समय नहीं देते। एक अच्छी योजना में 50 मिनट का अध्ययन और उसके बाद 10 मिनट का ब्रेक (पोमोडोरो तकनीक) शामिल होता है।

कमजोर क्षेत्रों को प्राथमिकता दें: उन विषयों से निपटें जिनसे आप सबसे अधिक डरते हैं, अपनी ऊर्जा के चरम समय (आमतौर पर सुबह) में ताकि वे पूरे दिन आपके ऊपर हावी न हो जाएं।

2. अपने शरीर को एक एथलीट की तरह समझें आप यह उम्मीद नहीं करेंगे कि कोई कार खाली या खराब गुणवत्ता वाले ईंधन पर दौड़ लगाएगी। आपका मस्तिष्क भी इससे अलग नहीं है।

7-घंटे का नियम: नींद वह समय है जब आपका मस्तिष्क सूचना को अल्पकालिक स्मृति से दीर्घकालिक स्मृति में स्थानांतरित करता है। नींद को कम करने से वास्तव में आपके द्वारा पहले से सीखी गई बातों को भूलने की संभावना बढ़ जाती है।

मस्तिष्क भोजन: मीठे स्नैक्स और अत्यधिक कैफीन के स्थान पर मेवे, फल और भरपूर पानी का सेवन करें। शुगर क्रैश पैनिक अटैक के शारीरिक लक्षणों (दिल की धड़कन, घबराहट) का अनुकरण कर सकता है।

तनाव दूर करने के लिए आगे बढ़ें: बाहर 15 मिनट की सैर से कॉर्टिसोल (तनाव हार्मोन) कम हो जाता है और मानसिक धुंध साफ हो जाती है 3. अपनी मानसिकता पर नियंत्रण रखें आप स्वयं से कैसे बात करते हैं, यह आपके विचार से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

तुलना का खेल बंद करें: हर किसी की तैयारी यात्रा अलग होती है। 'परीक्षा पोस्टमार्टम्स' या इस बात पर चर्चा करने से बचें कि अन्य लोगों ने कितने अध्याय पूरे कर लिए हैं, इससे केवल अनावश्यक घबराहट पैदा होती है।

सकारात्मक पुनर्रचना: 'मैं असफल होने जा रहा हूँ' कहने के बजाय, 'मैं जो मैंने तैयार किया है उससे अपना सर्वश्रेष्ठ करने जा रहा हूँ।

माइंडफुलनेस: यदि आपको घबराहट की लहर महसूस हो, तो बॉक्स ब्रीदिंग का प्रयास करें, 4 सेकंड के लिए साँस लें, 4 सेकंड तक सांस रोककर रखें, 4 मिनट के लिए सांस छोड़ दें और 4 घंटे तक रुकें। यह आपके तंत्रिका तंत्र को बताता है कि आप सुरक्षित हैं।

4. परीक्षा के दिन परीक्षा की सुबह 'जेन' बनाए रखने के बारे में है कोई नया विषय नहीं: परीक्षा से एक घंटा पहले नई सामग्री देखने से बचें। इससे भ्रम पैदा होता है और आप जो पहले से जानते हैं, उस पर आपका विश्वास कम हो जाता है।

जल्दी पहुंचें: केंद्र की ओर भागने से अनावश्यक 'अस्तित्व तनाव' बढ़ जाता है जल्दी पहुंचें, अपनी सीट ढूंढें और बैठ जाएं।

पेपर का चयन करें: पहले 5 मिनट पूरे पेपर को पढ़ने में बिताएं। उन प्रश्नों से शुरूआत करें जिनके बारे में आप सबसे अधिक आश्वस्त हैं, ताकि गति बनी रहे और किसी भी प्रारंभिक मस्तिष्क को पिघलाया जा सके।

त्वरित अनुस्मारक: बोर्ड परीक्षा एक विशिष्ट समय पर किसी विशेष विषय पर आपके ज्ञान का परीक्षण है। यह आपके मूल्य या आपके सम्पूर्ण भविष्य का प्रतिबिंब नहीं है।

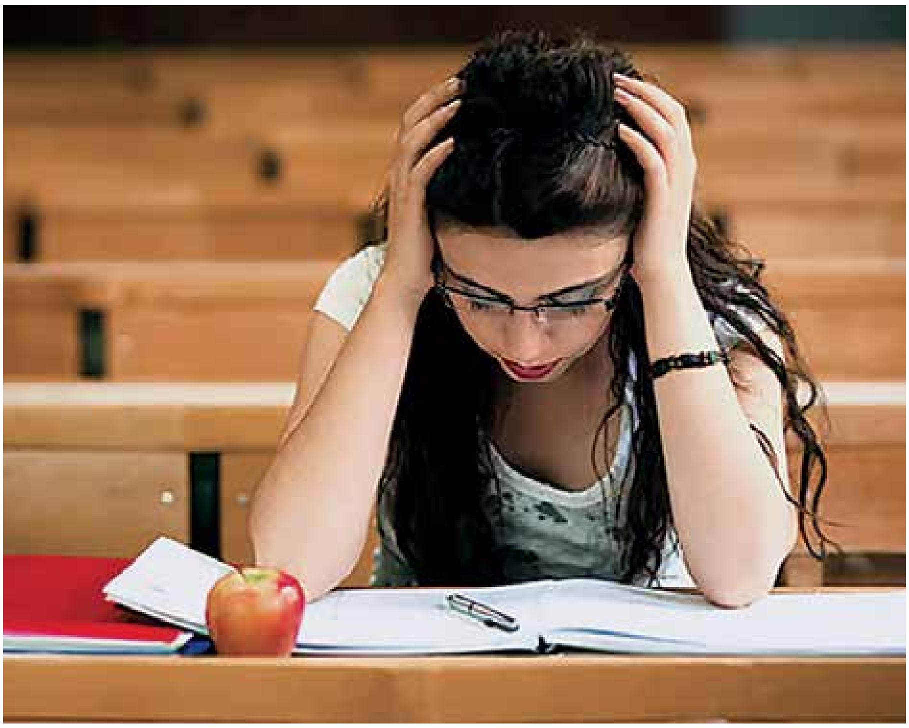

नौकरी की कतार से आत्मनिर्भरता की राह: अमित कुमार राठौड़ और 'BUSY' सॉफ्टवेयर से बदलती युवा सोच

आज के दौर में जब देश का पढ़ा-लिखा युवा बेहतर भविष्य की तलाश में नौकरी की कतारों में खड़ा दिखाई देता है, ऐसे समय में कुछ कहानियाँ मन को तरंगित ही नहीं करतीं, बल्कि आशा और आत्मविश्वास से भर देती हैं। ये कहानियाँ बताती हैं कि सफलता केवल नौकरी पाने में नहीं, बल्कि अवसर सृजित करने में भी है। दिल्ली के युवा अमित कुमार राठौड़ की जीवन यात्रा ऐसी ही एक प्रेरणादायक मिसाल है। जीवन में आए कुछ निर्णायक लम्हों ने उन्हें सृजन की राह दिखाई और उन्होंने न केवल अपने सपनों के आकाश को विस्तार दिया, बल्कि देश के लाखों युवाओं को सम्मानजनक जीवन-यापन का मार्ग भी प्रदान किया। अमित कुमार राठौड़ आज युवाओं को BUSY बिजनेस अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर के माध्यम से न सिर्फ. प्रशिक्षण दे रहे हैं, बल्कि उन्हें बिजनेस संस्थानों में प्लेसमेंट दिलाने का सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं। उनका मानना है कि आज के व्यापारिक युग में अकाउंटिंग की समझ हर उद्यमी और व्यापारी के लिए अनिवार्य हो गई है। BUSY सॉफ्टवेयर की विशेषता यह है कि इसमें व्यापार संचालन से जुड़ी लगभग हर आवश्यकता समाहित है। एक क्लिक में बिल बनाना, भुगतान की स्थिति जानना, बकाया राशी का विवरण देखना और तय समय पर विनम्र रिमाइंडर संबंधित पक्ष तक पहुँचाना यह सब इस सॉफ्टवेयर की तकनीकी क्षमता को दर्शाता है। यह न केवल समय की बचत करता है, बल्कि व्यवसाय को पारदर्शी और व्यवस्थित भी बनाता है। राठौड़ बताते हैं कि इस सॉफ्टवेयर को सीखने के लिए किसी उच्च तकनीकी डिग्री की आवश्यकता नहीं है। सामान्य स्कूली शिक्षा प्राप्त युवक-युवतियाँ भी इसे आसानी से सीखकर अपना शानदार करियर बना सकते हैं। यही वजह है कि यह कोर्स ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्र के युवाओं के लिए रोजगार के नए द्वार खोल रहा है। इतना ही नहीं, गृहिणियाँ भी BUSY सॉफ्टवेयर सीखकर अपने पति के व्यवसाय का हिसाब-किताब सुव्यवस्थित कर सकती हैं। इससे न केवल घर के काम के साथ-साथ उनका समय का सदुपयोग होता है, बल्कि वे आर्थिक मामलों में भी आत्मनिर्भर भूमिका निभा पाती हैं।

अमित कुमार राठौड़ की यह पहल आज के युवाओं के लिए एक स्पष्ट संदेश है—

यदि सही दिशा, सही कौशल और सही मार्गदर्शन मिल जाए, तो नौकरी तलाशने वाला युवा भी रोजगार देने वाला बन सकता है।

सांसद डिंपल यादव के जन्म दिवस पर हुआ 'क्रासकंट्री दौड़' और पी डी ए भवन का शिलान्यास

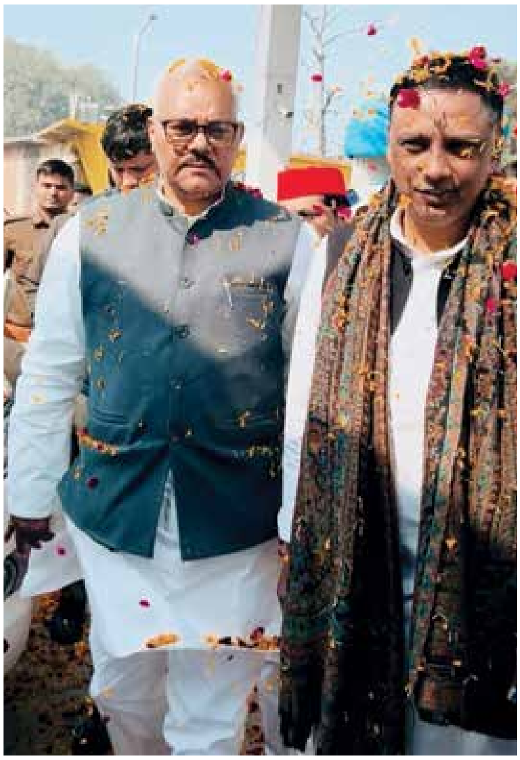

» **योज्ञेन्द्र यादव 'जिज्ञासू'**

गोरखपुर जनपद के कसिहार गाँव के ग्रामचंद यादव के तीन पुत्रों में मझले,मंतोष यादव बचपन से व्यापारिक सोच के हैं। होटल व्यवसायी/ ठीकेदार मंतोष अपने व्यापार से कमाए धन को आम अवाम के शिक्षा, चिकित्सा, सेवा पर खर्च करते रहते हैं। इसी कड़ी में इन्होंने पांच असहायों को पी डी ए आवास बनवाने का ऐतिहासिक संकल्प लिया।जिसके शिलान्यास कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेता प्रतिपक्ष विधान परिषद मा. लालबिहारी यादव रहे।

कोरोना काल में मददवीर के रूप में उभरे मंतोष अपने होटल बुद्धा इन को कोरोंनटीन सेंटर बना दिया और अनेकानेक लोगों की मदद की। यद्यपि की इसके पहले ये क्षेत्र पंचायत और जिला पंचायत के रूप में निर्वाचित हो चुके थे।

सांसद डिंपल यादव के जन्म दिन को यादगार बनाने के लिए युवा नेता, आम अवाम में लोकप्रिय राकेश यादव ने क्रॉस कंट्री दौड़ कराया। जिसमें विजेता प्रतिभागियों दिनेश यादव (संतकबीर नगर) प्रथम, अभिषेक चौहान (देवरिया) द्वितीय,रितेश निषाद (गोरखपुर) तृतीय, रोहित, प्रिन्स निषाद और सूर्यभान भास्कर को क्रमशः स्कूटी, एल. ए. डी., साईकिल और सांत्वना पुरस्कार दिया गया। राकेश के दिलेरी की भी खूब चर्चा हुई। राकेश की पृष्ठिभूमि समाजसेवी की है इनके पिता क्षेत्र पंचायत और पितामह प्रधान रह चुके हैं।

हजारों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए नेता प्रतिपक्ष ने मंतोष यादव और राकेश यादव के कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा 'समाज से भय भूख और भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए नई पीढी को आगे आना चाहिए।

मंतोष यादव के पी डी ए भवन निर्माण का निर्णय सचमुच प्रेरणादायी है। इनसे अन्य सक्षम लोगों को सबक लेना चाहिए।

'सपा जिला अध्यक्ष/ सभा अध्यक्ष ब्रजेश गौतम ने सांसद मा.डिंपल यादव के जन्म की बधाई देते हुए सपा शासन में खेल और खिलाड़ियों पर किए गए कार्य की चर्चा की और आयोजकों के प्रति आभार और मुख्य अतिथि के प्रति कृतज्ञता जाहिर की।

चौरी चौरा विधान सभा के अध्यक्ष और सभा के संचालक, कुशल संगठनकर्ता दयानंद विद्रोही ने अपने ओजस्वी उदबोधन से उपस्थित लोगों को खेल के प्रति जागरुक किया। खेल के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला और अपने संगठन से जुड़े सभी लोगों का आभार व्यक्त किया।

मंतोष यादव ने अपने संबोधन में कहा 'सपा प्रमुख अखिलेश यादव के जन्म दिन तक पी डी ए भवन बन कर तैयार हो जायेगा।'

पिछले दिनों उन्होंने चौरी चौरा के सिद्ध विनायक लान में घर घर नेता जी कार्यक्रम करा कर सुर्खिया बटोरी थी। कार्यक्रम को आकर्षक बनाने के लिए देश प्रसिद्ध भोजपुरी गायको को सपा नेता मंतोष यादव ने बुलाया था, मसलन शिल्पीराज, गायत्री यादव, विजय चौहान, धर्मेंद्र सोलंकी, स्थानीय गायक/ गीतकार विवेक यादव ने भी एक से बढ़कर एक समाजवादी गीत सुनाए और दर्शकों की बाहवाही लूटी। विवेक महामहिम राज्यपाल, कुलपति और सपा प्रमुख के हाथों बात-विवाद,गायन और शिक्षण सहगामी क्रियाओं में सम्मानित हो चुके हैं।

सभा में अन्य लोगों के अलावा पूर्व मंत्री जय प्रकाश यादव, अवधेश यादव, नगीना प्रसाद साहनी, राम उग्रह यादव, संजय पार्षद, मारकन्डे यादव, मणिदेव मल्ल, कमलेश यादव, शैलेश प्रधान, जय कुमार निषाद, लालमन काका, श्याममिलन यादव, डॉ. विशाल सिंह, सुमन पासवान, अखिलेश यादव, रामनाथ यादव, शिव प्रसाद चौरसिया, अनिल रावत, धनंजय सिंह, अशोक चौहान, कैलाश, रमेश यादव पार्षद, प्रधान संतोष यादव

बरगदवा, संगम पासवान, समेत तमाम प्रधान और प्रतिनिधि गण उपस्थित थे।

माननीय नेता प्रतिपक्ष का अगला कार्यक्रम पूर्वांचल में गोरखपुर, राजधानी के प्रसिद्ध 'ब्रदर्स हाउस' पर था। उल्लेखनीय है ब्रदर्स हाउस में अस्सी लोग रहते हैं जिनका सियासत, शिक्षा, समाज में बड़ा हस्तक्षेप है। सच में यह घर कम अजायब घर ज्यादा है। विभिन्न विचार को मानने वाले अंततः एक सूत्र में रहते हैं. यहाँ सुबह से अतिथि का इंतजार था। उनके स्वागत की भव्य तैयारी थी। दोपहर बाद एक बड़े काफिले के साथ उनका आगमन ब्रदर्स हाउस पर हुआ जहाँ उन्हे फूल माला से लाद दिया गया। दरअसल ब्रदर्स हाउस के अहम किरदार प्राचार्य राम उग्रह यादव से उनका सम्बन्ध तीन दशक पुराना है। यहाँ लगभग चार सौ लोगों के साथ मुख्य अतिथि का लंच हुआ। फिर परिवार के छोटे बच्चे अविरल के जन्म दिन का केक काटकर जन्म दिन सेलिब्रेट किया गया।

परिवार के मुखिया छत्रधारी यादव उनके भाई पौहारी शरण और बहनोई आर एस यादव ने उनको अंग वस्त्र/ स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

शिक्षक नेता मणिदेव मल्ल ने लोकतंत्र की बुनियाद के दिसम्बर अंक को और योगेंद्र जिज्ञासु ने नेपथ्य के नायक खंड दो भेंट किया।

राम उग्रह यादव ने बात चीत के दौरान कहा 'आज के समय में भौतिकता के प्रति आकर्षण और आधुनिकता की चकाचौध पारिवारिक संरचना और उसके मूल्यों का ही क्षरण किया है। हमारे वहां जो भी जब ही आ जाए उसका स्वागत ही होगा। न उलाहना और न ही शिकायत।'

परिजन दिवाकर यादव, सुधाकर, सुरेश यादव, अखिलेश यादव, शैलेश, उमेश, रतनपाल, समर, राजदीप, डी. पी. यादव, पार्थ, प्रज्जवल, चौधरी निशांत, ममता, नितीन, कृष्णपाल पथ्या, गार्गी,शिवांगी, आदेश, प्रियंवदा, दीप शिखा आदि के अलावा राम नगीना साहनी, हरिद्वार उर्फ पप्पू गायघाट, रामप्रीत निषाद, मोतीलाल, बाबूलाल, भोला चौहान, लालजी मौर्य, उमाशंकर मौर्य, कमलेश, रामा यादव, राजेंद्र, वीरेंद्र यादव, अमित, धर्मवीर शिक्षक, जयप्रकाश यादव, बी. पी. यादव, दिवाकर गुप्त, गोविंद गुप्त, अरबिंद गुप्त, संजय यादव, शमानंद यादव, लल्लन, आंजनेय, रमेश, अलबेला यादव, आर. डी. यादव, राम आशीष यादव, गंगेश सिंह, इसराफिल, सतेंद्र, अजय पासवान रोडवेज, अश्वनी शर्मा, गुलहसन समेत सैकड़ों लोग उपस्थिति रहे।

कार्यक्रम खत्म होने के बाद मुख्य अतिथि मा.लाल बिहारी यादव नेता प्रतिपक्ष का काफिला लखनऊ की तरफ रुख कर गया।

तमाम आत्मीय लोगों के स्मृतियों का एक तहखाना और आबाद हुआ।

ब्रदर्स हाउस ने नेता प्रतिपक्ष विधान परिषद और सभी आगन्तुकों का आभार किया।

प्रेरणादायक व्यक्तित्व गंगा सुवेदी

पूजा बहार (नेपाल)

शिव और गंगा का रिश्ता अनन्त काल से चला आ रहा है। शिव की जटाओं में विराजती पवित्र, पावन, पापहरणी गंगा! उनका मान तब और बढ़ गया जब शिव ने उनको अपनी जटाओं में स्थान दिया।

ऐसे ही नेपाल की पावन धरती पर बहुमुखी प्रतिभा की धनी गंगा सुवेदी जी का अवतरण हुआ। नन्ही गंगा ने होश भी ठीक से न संभाला होगा कि मन में कविता और हाथों ने चित्रकला उकेरना शुरू कर दिया।

समय बहुत आधुनिक नहीं था पर अभाव ने कला को नहीं रोका। वो फूलों के रंग निकाल कर, पत्तों को पीसकर चटक करती थी और अपनी चित्रकला की प्रतिभा को निखारती थी।

प्रकृति को देख मन में शब्दों का जन्म होने लगा और शब्दों की कोख से कविताओं का जन्म हुआ। उसको बचपन से ही जूनून था कि कुछ बनके दिखाना है, कुछ करके दिखाना है। इस हौसले को ऊंचाई दी उनके दादा जी ने।

आइये जानते है 'चेतना संरक्षण संस्थान' की अध्यक्ष और 'मकालु टेलीविजन' की संस्थापक गंगा 'सुवेदी जी' की जिन्दगी के विविध पहलुओं के बारे में।

प्रश्नः क्या चित्रकला और साहित्य का आपस में संबंध है?

उत्तरः चित्रकला और साहित्य का आपस में आत्मा और शरीर का संबंध है। भावनाओं को शब्द देता है साहित्य और आकृति देती है चित्रकला! चित्रकला हो या साहित्य प्रकृति ही इसका स्तम्भ है। मानवीय संवेदना हो या विरक्ति, प्रकृति का चित्रण हो या हिंसा, संजाल या समाजिक संजाल की कथा, दोनों ही इन सारी बातों को जीवंत करते हैं।

प्रश्नः प्रोफेशनल जर्नी में आपके लिए सबसे बड़ी चुनौती क्या थी?

उत्तरः अपनों को साथ लेकर अपने सपनों तक पहुॅंचना मेरे जीवन की सबसे बड़ी चुनौती थी। पर मुझे हर्ष है कि मैंने अपने हर किरदार को बखूबी निभाया है और दूसरों को सिर्फ देने की ही नीयत रखी। मैं सबको साथ लेकर चली और शायद इसीलिए मैं यहाँ तक पहुँच पाई। मंजिल को पाना बहुत संघर्षपूर्ण था, पर मुझे गर्व है स्वयं पर कि मैंने एक हाथ से परिवार को और दूसरे हाथ से अपने सपनों को संभाला।

प्रश्नः जिन्दगी का वो कौन सा दौर था जिसके लिये आपको काफी जद्दोजहद करनी पड़ी?

उत्तरः शादी के बाद ससुराल का विपरीत माहौल मेरे लिये बहुत संघर्षशील था। कभी-कभी मुझे ऐसा लगा था कि ये मैं कहाँ आ गई? कभी ऐसा भी लगा कि कोई मुझे समझता ही नहीं। एक बार तो ऐसा लगा कि मेरे सास -ससुर मेरे पति की दूसरी शादी करवा देंगें। फिर भी मैं टूटी नहीं और अपने रिश्तों को संभालते हुए आगे बढ़ती गई।

प्रश्नः आप आज इतने बड़े मुकाम पर पहुँची हैं, इसका श्रेय किसको देती हैं?

उत्तरः सबसे पहले भगवान शिव को, जिन्होंने मुझे प्रतिभाओं से नवाजा। फिर मेरे दादा जी का, जिन्होंने मुझे प्रेरित किया और मेरे हौसलें को पंख दिये। अंत में मेरे परिवार का (पति और दोनों बेटों का), जिन्होंने मुझे खास तौर से समझा! वे मुझे भगवान का सबसे प्यारे आशीर्वाद लगते हैं।

प्रश्नः आप आने वाले नवांकुर साहित्यकारों को क्या सलाह देना चाहेंगी?

उत्तरः खूब पढ़ें पर अच्छा पढ़ें। आपका समय अनमोल है इसलिए अच्छे और उत्कृष्ट लेखकों को पढ़ें। भले कम लिखें पर अच्छा लिखें क्योंकि आपका लिखा साहित्य बन जाता है, जिसे आने वाली नई पीढ़ियां पढ़ेंगी।

Narela Suncity

PRESENTED BY :
VLINE ARCHITECTS PVT. LTD.

Strategic Location

Location Map

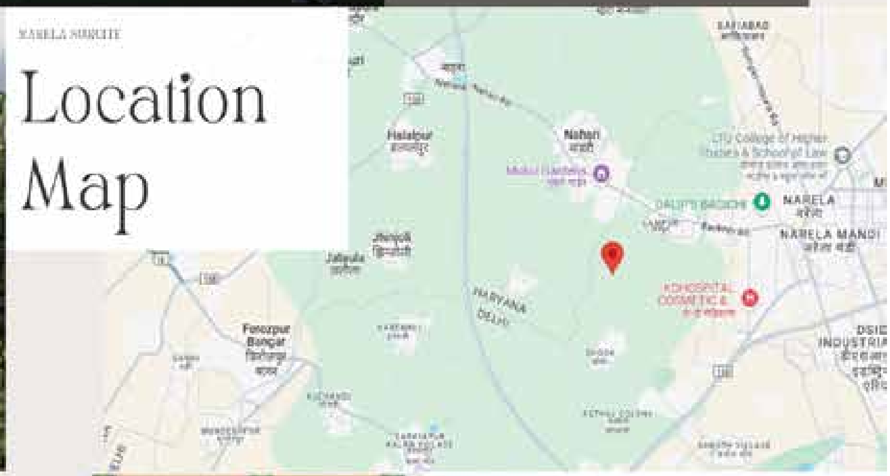

Office Address
2 Arihant Nagar, 1st Floor, Punjabi Bagh W), New Delhi-110026

Phone & Mobile
011-45013018

Email Address
aguniversalnd@gmail.com

Website
www.aguniversal.co.in

बदलाव जरूरी है परन्तु अपनी संस्कृति को ध्यान में रखकर: डॉ. एस. एल. सागर

लोकतंत्र की बुनियाद का विशेष कॉलम साक्षात्कार में प्रस्तुत है सामाजिक व्यक्तित्व डॉ. एस एल सागर से पत्रिका के संपादक गणेश यादव के साथ वर्तमान सामाजिक विषयों पर हुई बातचीत के प्रमुख अंश कुछ इस प्रकार है :-

प्रश्न- सर लोकतंत्र की बुनियाद में आपका स्वागत है, समाज में आज- कल एक बहुत ही गंभीर विषय देखने को मिल रहा है जैसे कि पारिवारिक मूल्य धीरे- धीरे विघटन कि ओर बढ़ता जा रहा है। पहले परिवार एकजुट होकर एक विशालकाय वृक्ष की तरह होते थे, जहाँ सभी सदस्य एक-दूसरे से जुड़े रहते थे। लेकिन आज वही परिवार कहीं न कहीं बिखरते हुए नजर आ रहे हैं। इस विषय पर आपका क्या दृष्टिकोण है? आप इसे किस नजरिए से देखते हैं?

उत्तर- मेरे अनुसार परिवारों के बिखरने का एक प्रमुख कारण मोबाइल फोन की बढ़ती लत है। जब से हमारे देश में मोबाइल का अत्यधिक प्रचलन हुआ है, लोग धीरे-धीरे उसके आदी होते चले गए हैं। पहले घर छोटे होते थे, लेकिन दिल बड़े होते थे। पूरा परिवार एक साथ बैठकर खाना खाता था, एक ही रसोई होती थी और आपसी संवाद बना रहता था। आज स्थिति बिल्कुल उलट हो चुकी है। मान लीजिए किसी परिवार में माता-पिता और तीन बच्चे हैं–तो बच्चों के अलग-अलग कमरे हैं, माता-पिता का अलग बेडरूम है, ड्रॉइंग रूम अलग है। ऐसे में बच्चे खाना खाते समय भी मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। परिवार के सदस्यों के पास एक-दूसरे से बातचीत करने का समय नहीं है, जिससे धीरे-धीरे आपसी दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। आज परिवार, परिवार न रहकर अजनबियों का एक मकान बनता जा रहा है। एक घर होता है, जहाँ रिश्ते होते हैं, और एक मकान होता है, जहाँ सिर्फ दीवारें होती हैं। दुर्भाग्यवश हमारा समाज घर से मकान की ओर बढ़ रहा है, जो हमारे देश के लिए एक बेहद चिंताजनक स्थिति है। इस विषय पर केवल सरकार को ही नहीं, बल्कि हर परिवार के मुखिया को भी गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों के साथ समय बिताएँ, उनसे संवाद करें और भावनात्मक जुड़ाव बनाए रखें। आज हमारे सामाजिक संपर्क मोबाइल स्क्रीन तक सीमित हो गए हैं, जिसके कारण लोग अवसाद, तनाव, ब्लड प्रेशर और शुगर जैसी बीमारियों के शिकार हो रहे हैं। जब हम आपस में मिलते हैं, बात करते हैं, तो सकारात्मक ऊर्जा का आदान-प्रदान होता है, जिससे हम कई छोटी-छोटी बीमारियों से स्वयं को बचा सकते हैं। इसलिए समय की आवश्यकता है कि हम तकनीक का उपयोग करें, लेकिन उसके गुलाम न बनें, ताकि परिवार फिर से एकजुट हो सके।

प्रश्न- आज परिवार की स्थिति बदलती जा रही है। पहले ऐसा होता था कि बच्चें शिक्षा ग्रहण करने या नौकरी के लिए जाते समय अपने बड़ों को नमस्ते या चरण स्पर्श करके जाते थे। आज का समय पूरी तरह बदल गया है, अब 'हाय' और 'हैलो' का जमाना आ गया है। आपके अनुसार, इस बदलाव का कारण क्या है और क्या आपको लगता कि आने वाले समय में यह स्थिति और भी बदतर हो सकती है? आप इस विषय पर क्या दृष्टिकोण रखते हैं?

उत्तर- मेरे अनुसार, हमारी अंग्रेजी शिक्षा का असर हमारी भारतीय संस्कृति पर पड़ रहा है। हमारी संस्कृति धीरे-धीरे हमारे देश से विलुप्त होती जा रही है और हम पाश्चात्य संस्कृति को अपने जीवन में अपनाने लगे हैं। यह स्थिति देश के लिए लंबे समय में चिंताजनक साबित हो सकती है, क्योंकि हम अपने पुराने संस्कार भूल सकते हैं। हर सरकार की इच्छा होती है कि कार्यालयों में मातृभाषा का प्रयोग हो, लेकिन ऐसा व्यवहार में नहीं होता। उदाहरण के लिए, मैंने उत्तर प्रदेश में देखा है कि वहाँ अभी भी अलग न्यायालय हैं जहाँ हिंदी में कार्य होता है, लेकिन दिल्ली में चाहे डिस्ट्रिक्ट कोर्ट हों, हाई कोर्ट हो या सुप्रीम कोर्ट, सारा काम अंग्रेजी में होता है। इसी वजह से 'हाय-हेलो' जैसी अभिवादन की आदतें फैल रही हैं, जो हम लोग मोबाइल और टेलीविजन से सीखते हैं। मां-बाप को चाहिए कि वे बच्चों को संस्कार सिखाएँ। घर पर जब कोई आता है तो बच्चों को यह सिखाना चाहिए कि बड़े लोगों का स्वागत पैर छूकर या हाथ जोड़कर करें, 'हाय-हेलो' नहीं। बच्चा जन्म से ही खानपान, आदतें और शिष्टाचार अपने माता-पिता से सीखता है। अच्छे मैनर्स और बड़े लोगों के प्रति सम्मान की भावना घर से आती है, बाहर से नहीं। शिष्टाचार बहुत जरूरी है। पढ़ाई-लिखाई करते हुए भी यदि हम अपने संस्कार भूल जाएँ तो स्थिति चिंताजनक हो सकती है। किसी भी ऑफिस में जाएँ, चाहे वह उच्च अधिकारी हों या पुलिस थाने का एक सिपाही, सभी का बिहेवियर और व्यवहार संस्कारों पर आधारित होता है। यह सब हमें संस्कारों से मिलते हैं। इसलिए, हमें खुद जिम्मेदारी लेते हुए अपने बच्चों को सही मार्गदर्शन देना चाहिए और उन्हें संस्कारों और शिष्टाचार के लिए प्रेरित करना चाहिए।

प्रश्न- अक्सर देखा जाता है कि परिवार में यह अपेक्षा रहती है कि बहू सुसंस्कारी आए। लेकिन जब घर में बेटी होती है, तो हमारी जिम्मेदारी बनती है कि उसे भी वही संस्कार सिखाएँ, ताकि वह जिस घर में जाए, वहां वही संस्कार हों जिनकी हम उम्मीद करते हैं। इस विषय को आपा कैसे देखते हैं?

उत्तर- आपका प्रश्न बहुत ही अच्छा है। यह एक बहुत प्राचीन मुद्दा है कि जब कोई दूसरे घर की बेटी हमारे घर में आती है, तो उसे अपनी बेटी के समान समझना चाहिए। परंतु सास-बहू की कहानी बहुत पुरानी है, मेरे ख्याल से आदिकाल से चली आ रही है। इसी तरह ननद और भाभी का भी मसला रहा है, जो शायद आज तक पूरी तरह खत्म नहीं हुआ। ये परंपरागत चीजें हैं, इन्हें दूर होने में समय लगेगा, लेकिन सोच को बदलना बहुत जरूरी है। मैं तो यही कहूँगा कि पढ़ा-लिखा समाज इसे अपने जीवन में अवश्य अपनाए। जब कोई दूसरे घर की बेटी आपके घर में आती है, तो उसे अपनी बेटी से भी ज्यादा सम्मान दें, उसकी किसी चीज को समझने की कोशिश करें और उसे तंग न करें। दुर्भाग्यवश आए दिन दहेज के मुकदमे और तंग करने की घटनाएँ सामने आती हैं। मेरे विचार में यह सामाजिक बुराई है, और इसे दूर करने की जिम्मेदारी समाज की खुद की है। पढ़ा-लिखा समाज अगर इसे गंभीरता से ले, तो इस समस्या का निदान संभव है। आज के समय की जरूरत यह है कि हम अपनी सोच बदलें। इंसान सब बराबर हैं चाहे पुरुष हो या महिला। औरत का दर्जा घर में लक्ष्मी रूप में होता है। जब वह घर में आती है, तो उसका आदर-सत्कार करना चाहिए, पूरा सम्मान देना चाहिए। लक्ष्मी के बिना कुछ भी संभव नहीं है। यदि हम उनके साथ अभद्र व्यवहार करें या उन्हें सम्मान न दें, तो हम अपना ही नुकसान कर रहे हैं, किसी और का नहीं। इसपर विचार करने और समाज को सुधारने की आवश्यकता है। यही मेरा संदेश है।

प्रश्न-अक्सर देखा जाता है कि आजकल की शादियों में चकाचौंध और भव्यता बहुत बढ़ गई है। सामने वाला परिवार चाहे सामर्थवान हो या न हो, अपेक्षाएं बहुत बढ़ गई हैं। महंगी गाड़ियाँ, महंगे विवाह स्थल और महंगे वस्त्र–ऐसी चीजें अधिक महत्व पाने लगी हैं, जबकि शादी के पारंपरिक रस्म और रीति-रिवाज पीछे छूट रहे हैं। क्या आप मानते हैं कि इसी तरह की उम्मीदें और भव्यता पारिवारिक विघटन का कारण भी बन रही हैं?

उत्तर– जब शादी में ज्यादा पैसे और दिखावे की लालसा होती है, तो वहां कभी सर्टिस्फेक्शन नहीं मिल सकता। मेरा मानना है कि पति-पत्नी का रिश्ता बहुत नाजुक होता है और उसमें एक-दूसरे की भावनाओं को समझना सबसे जरूरी है। यह रिश्ता पैसे या पढ़ाई-लिखाई से नहीं चलता। मैंने देखा है कि पढ़े-लिखे बच्चे, जैसे IAS या IPS अधिकारी, जब आपस में शादी करते हैं, तो वहां अक्सर इगो क्लैश होने की वजह से कुछ ही समय में फैमिली डिस्प्यूट शुरू हो जाते हैं। मेरा मानना है कि रिश्तों को रिश्तों की तरह निभाना चाहिए और वहां इगो का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। आजकल करोड़ों रुपये खर्च करके शादियाँ होती हैं और अपेक्षाएं भी बढ़ती हैं। लड़के वालों की मांगें, दहेज की प्रथा जैसी समस्याएं अब भी मौजूद हैं। सरकारें इसे रोकने की कोशिश करती हैं, लेकिन समाज इसे अपने जीवन में उतारने में विफल है। उदाहरण के लिए, रोहिणी में सरोज हॉस्पिटल की स्थापना उस बेटी की याद में की गई थी, जिसकी हत्या दहेज के कारण हुई थी। यह चैरिटेबल हॉस्पिटल अब कमर्शियल हो चुका है। इसका मतलब यह है कि जहां अत्यधिक धन की मांग होती है, वहां लड़की को कभी भी पर्याप्त संतुष्टि नहीं मिलती, और लालसा हमेशा बढ़ती रहती है। मैंने पढ़ा है कि मॉल्थस थ्योरी और इकॉनॉमिक्स में 'डिमिनिशिंग यूटिलिटी' का नियम लागू होता है जितना अधिक पैसा आता है, उतनी अधिक लालसा होती है, संतोष नहीं मिलता। यही वजह है कि हम अपने वास्तविक मानव रूप से दूर होते जा रहे हैं। पैसे की लालसा में इंसान इंसान को समझना भूल जाता है और समाज में विभाजन बढ़ते हैं। आरएसएस का नारा है 'समरसता'–हम सब समान हैं, कोई बड़ा या छोटा नहीं है। लेकिन इसे अपने जीवन में उतारना बहुत मुश्किल होता है। बच्चों को भी यह सिखाना चाहिए कि समाज में सफाई कर्मचारी, सिक्योरिटी गार्ड या कोई अन्य व्यक्ति सब इंसान हैं और उनका आदर करना चाहिए। उपदेश देना आसान है, पर जीवन में इसे उतारना कठिन है। इसलिए पहले हमें खुद अपनी सोच बदलनी होगी और अपने बच्चों को सही मार्गदर्शन देना होगा। मैंने कई शादियाँ अटेंड की हैं, जहां हाइली एजुकेटेड बच्चे थे, लेकिन बाजार और समाज की दहेज और भव्यता की मांगें उन्हें भी प्रभावित करती हैं। लड़के वालों की अपेक्षाएं बढ़ती हैं–मकान, गाड़ी और अन्य भव्य चीजें देना अब परंपरा बन गई है। मेरा मानना है कि बच्चे की पढ़ाई-लिखाई और संस्कारों की जिम्मेदारी माता-पिता की होनी चाहिए, लेकिन अन्य भौतिक चीजों के लिए बच्चे को स्वतंत्र छोड़ना चाहिए।इससे बच्चे आत्मनिर्भर बनेंगे, जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री भी कहते हैं। अगर हम उन्हें हर चीज उपलब्ध कराते रहें, तो आने वाली पीढ़ी आत्मनिर्भर बनने के बारे में सोच भी नहीं पाएगी। मेरा यही मानना है।

प्रश्न– बहुत अच्छी बातें आपने कहीं कि उपदेश देना आसान है, लेकिन उसे अपने जीवन में उतारना उतना ही कठिन है। आजकल देखा जा रहा है कि परिवारों में बच्चों की संख्या भी कम होती जा रही है। पहले घरों में तीन-तीन या चार-चार बच्चे होते थे, लेकिन अब एक या दो बच्चे ही होते हैं। ऐसी स्थिति में अक्सर बेटे की शादी के कुछ ही दिनों बाद बहू के संबंध में सवाल उठने लगते हैं, जैसे 'हम अलग रहेंगे'। इस सामाजिक बदलाव और पारिवारिक विघटन का असर हमारी संस्कृति पर कितना पड़ेगा, और खासकर उन बड़े बुजुर्गों पर, जिनकी उम्मीद होती है कि घर में बहू आएगी और वे उसका देख-रेख करेंगे, उनका सपना इस बदलाव से किस तरह प्रभावित होगा?

उत्तर– कुछ दिन पहले ही एक बहुत ही दुखद घटना सामने आई, जहां एक पान-मसाले वाले की बहू ने आत्महत्या कर ली। पुलिस में एफआईआर में बताया गया कि उसे बार-बार तंग किया जा रहा था और उसे मानसिक रूप से बहुत परेशान किया गया था। यह शादी पंद्रह साल पुरानी थी और उनके बच्चे भी थे। इस घटना से साफ दिखता है कि यह एक गंभीर सामाजिक बुराई है, जिससे लोग अपने आप को बाहर नहीं निकाल पा रहे हैं। इसमें शिक्षा की कमी और कानूनी जानकारी न होना भी एक बड़ा कारण है। लेकिन आजकल जहां बच्चों को अच्छी शिक्षा मिलती है, वहां भी इस तरह की घटनाएँ घटित हो रही हैं, इसका मतलब यह है कि हमारी मानसिकता अभी भी वही पुरानी है, जो सौ साल पहले थी। इस मानसिकता को बदलना बहुत जरूरी है। हम दूसरों को सिखाने से पहले आत्मचिंतन करें कि कहीं न कहीं हमारी सोच में भी कमियां हैं। हमें यह महसूस करना होगा कि, दूसरे का बच्चा उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना हमारा बच्चा। जब यह भावना हमारे अंदर आंतरिक रूप से जागृत होगी, तभी हम अपने व्यवहार में बदलाव ला पाएंगे। जब तक यह जागरूकता नहीं आएगी, तब तक इस तरह की घटनाएँ घटित होती रहेंगी और समाज उस दिशा में नहीं बढ़ पाएगा, जहाँ उसे जाना चाहिए। इसलिए हमें पहले खुद अपनी सोच और दृष्टिकोण को बदलना होगा और फिर अपने बच्चों और समाज में इसे लागू करना होगा।

प्रश्न– आज समाज में उत्पन्न होने वाली सबसे बड़ी समस्या रिश्तों का टूटना है, और यह हमारी संस्कृति पर किस तरह प्रभाव डाल रही है? उदाहरण के लिए, यदि दस शादियाँ होती हैं, तो इनमें से आधे रिश्ते टूट रहे हैं। समाज इस दिशा में किस ओर बढ़ रहा है और इसके दूरगामी परिणाम क्या हो सकते हैं? इन समस्याओं को रोकने के लिए समाज और सरकार को कितनी आपसी भागीदारी के साथ कदम उठाने चाहिए?

उत्तर– सरकार अपना काम कर रही है और उसका काम कानून बनाना है ताकि समाज में सुधार हो सके। लेकिन कानून बनने के बाद उसे लागू करने वाली एजेंसियों–पुलिस और प्रशासन–में भी कई कमियाँ हैं, जिसकी वजह से कई चीजें सही ढंग से नहीं हो पाती। सिर्फ जज की कुर्सी पर बैठकर फैसले देना ही काम नहीं करता। उदाहरण के लिए, दिल्ली में कुत्तों की बहुत बड़ी समस्या है। पूर्व केंद्रीय मंत्री विजय गोयल ने इसपर पहल की थी, लेकिन मेनका गांधी जी ने विरोध किया क्योंकि वे डॉग लवर्स हैं और कुत्तों को उसी तरह सम्मान देना चाहते हैं जैसा इंसान को दिया जाता है। इस वजह से आज कुत्तों ने कई बच्चों और बड़े लोगों को काटा है। देखा जाए तो समाज में रहने वाले लोगों की भी जिम्मेदारी बनती है। शिक्षा का मतलब यह नहीं कि हम किसी को नुकसान पहुँचाए या किसी का दिल दुखाएँ। जितनी भी सामाजिक बुराइयाँ हैं, उनका समाधान सिर्फ सरकार पर छोड़ना संभव नहीं है। यदि हम सौ फैमिली वाली कोई सोसाइटी लेते हैं, तो वहां रहने वाले लोगों का नैतिक दायित्व बनता है कि वे जनहितकारी योजनाओं में सहयोग करें और उनका पालन करें। मैं जहां रहता हूँ, वहां मैं कोशिश करता हूँ कि सामाजिक समस्याओं को दूर किया जाए। उदाहरण के लिए, पार्किंग की समस्या थी, लेकिन आज हमारी सोसाइटी में वह सुलझ गई है। इसी तरह, यदि सभी लोग एक सोच और दिशा के साथ लगातार प्रयास करें, तो कोई भी सामाजिक बुराई दूर नहीं है। थोड़ा कठिन जरूर होता है, लेकिन असंभव नहीं।

प्रश्न– जब हम इस विषय पर चर्चा कर रहे हैं, तो शोध में पाया गया है कि बच्चों की शादी सही उम्र पर होना बहुत महत्वपूर्ण है। यदि समय पर विवाह हो जाए, तो यह एक स्वस्थ पारिवारिक प्रवेश बनता है। लेकिन कई बार उच्च शिक्षा प्राप्त करने के कारण बच्चों की आयु बढ़ जाती है, और शादी के समय वे एक-दूसरे के साथ सहज नहीं रह पाते। साथ ही, आजकल मित्रता और पूर्व संबंधों के प्रचलन से भी कहीं न कहीं व्यक्ति के लगाव और रिश्तों पर प्रभाव पड़ता है। इस पर आपका क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर– आजकल यह देखा जा रहा है कि राउंड-द-क्लॉक कंपनियों में खासकर लड़कियाँ और लड़के नौकरी करने जाते हैं। दिन-रात की शिफ्ट के कारण उनका समय अलग-अलग हो जाता है, नए-नए दोस्त बन जाते हैं, खान-पान बदल जाता है, रहन-सहन बदल जाता है और बहुत कुछ ऐसा होने लगता है जो हमारी भारतीय संस्कृति के अनुरूप नहीं है। धीरे-धीरे आने वाली पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ती जा रही है–चाहे रहने का तरीका हो, खान-पान हो या आपसी मेल-मिलाप। इस वजह से हम अपनी संस्कृति को संरक्षित करने के बजाय उसे खोने की दिशा में बढ़ रहे हैं, जो बिल्कुल सही नहीं है। आज की तारीख में लोग इतने व्यस्त हो गए हैं कि एक-दूसरे से मिलने का समय ही नहीं मिलता। इसी कारण समाज में कई तरह की बुराइयाँ पनप रही हैं। मेरा मानना है कि जो लोग घर पर रहते हैं–चाहे रिटायरमेंट के बाद हों या किसी अन्य कारण से–उन्हें पूरे समय घर में बंद नहीं रहना चाहिए,

बल्कि खुद को किसी न किसी कार्य में व्यस्त रखना चाहिए। कल ही मैंने एक लेख देखा था जिसमें लंबा और स्वस्थ जीवन जीने के लिए कुछ सुझाव दिए गए थे–जैसे खुद को व्यस्त रखना, लगातार एक जगह न बैठना, घूमना-फिरना और लोगों से मिलना-जुलना। ये छोटी-छोटी बातें न सिर्फ जीवन को लंबा बनाती हैं, बल्कि इंसान को खुशहाल और स्वस्थ भी रखती हैं। जब हम लोगों से मिलते-जुलते हैं, तो अनावश्यक तनाव और नकारात्मक सोच अपने आप बाहर निकल जाती है। मेरा यह भी मानना है कि ऑफिस में चाहे कोई कितनी भी बड़ी पोस्ट पर हो, लेकिन जिस सोसाइटी में वह रहता है, वहां सब बराबर होते हैं। ऑफिस टाइम के बाद 'मैं अधिकारी हूँ, मैं बात क्यों करूँ' जैसी भावना गलत है। मैंने देखा है कि कई सीनियर, रिटायर्ड सरकारी अधिकारी पार्क में आते हैं, लेकिन आपस में बातचीत नहीं करते। यह भी सही नहीं है। जहां लोग साथ बैठते हैं, वहां बातचीत होनी चाहिए, विचार साझा होने चाहिए। इससे मानसिक बोझ कम होता है और इंसान प्रसन्नचित्त रहता है। अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि जैसे बच्चा पैदा होता है तो उसके पास कुछ नहीं होता और धीरे-धीरे ज्ञान विकसित होता है, उसी तरह जीवन के एक पड़ाव पर इंसान को फिर से सरल, सहज और मिलनसार बनना चाहिए। अगर वास्तव में सुखी रहना है और समाज के लिए कुछ करना है, तो खुद को व्यस्त रखें, लोगों से जुड़ें और दूसरों को भी सही दिशा देने की कोशिश करें। वरना जैसे आए थे वैसे चले गए, तो समाज पर कोई असर नहीं पड़ता। मेरा मानना यही है–Keep yourself busy and try to give something smart and positive to others।

प्रश्न– पहले अक्सर ऐसा होता था कि पुरुष कार्यक्षेत्र में लगे रहते थे और महिलाएँ घर की ज़िम्मेदारियाँ संभालती थीं। लेकिन बदलते परिवेश में शिक्षा के विस्तार और समान अधिकार मिलने के बाद महिलाएँ भी बाहर आकर काम करने लगीं और परिवार में बराबर की भागीदारी निभाने लगीं। इसके बावजूद कई बार इन बातों को लेकर भेदभाव या टकराव की स्थिति पैदा हो जाती है, जो नहीं होनी चाहिए। जब पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं और दोनों आगे बढ़ना चाहते हैं, तो ऐसे में प्रतिस्पर्धा या द्वंद्व के बजाय सहयोग की भावना कैसे विकसित की जा सकती है? इन समस्याओं को दूर करने के लिए समाज और पारिवारिक स्तर पर क्या बदलाव जरूरी हैं?

उत्तर– देखिए, यह समस्या किसी पुलिस, कोर्ट या कानून से पूरी तरह खत्म नहीं हो सकती। मैंने पहले भी कहा है कि जो समस्याएँ हमने खुद पैदा की हैं, उनका समाधान भी हमें ही खोजना होगा। पुलिस या कोर्ट अस्थायी राहत दे सकते हैं, लेकिन स्थायी समाधान नहीं। इसके लिए आत्मचिंतन जरूरी है। कोई भी समस्या ऐसी नहीं है जिसका समाधान संभव न हो–थोड़ा कठिन जरूर होता है, लेकिन असंभव नहीं। मेरे पास ऐसे कई पति-पत्नी के मामले आए हैं, जो हाइली एजुकेटेड थे और आपसी विवाद में फँसे हुए थे। लेकिन दो-तीन बैठकों और सही सलाह के बाद उनका परिवार दोबारा अच्छे से बस गया और आज वे ठीक-ठाक जीवन जी रहे हैं। शर्त बस यही है कि सामने वाला व्यक्ति सलाह को गंभीरता से सुने और उस पर अमल करे। शादी में सबसे जरूरी चीज है एडजस्टमेंट। ऑफिस में आपकी कोई भी पोज़िशन हो सकती है, लेकिन घर में आपको एक सामान्य इंसान बनकर रहना चाहिए। अगर यह भावना मन में आ जाए, तो घर में विवाद की गुंजाइश ही नहीं रहती। पति-पत्नी के रिश्ते में थोड़ी-बहुत नोक-झोंक हर जगह होती है–चाहे पढ़े-लिखे हों या अनपढ़। बल्कि मैंने देखा है कि पढ़े-लिखे लोगों में यह ज्यादा होती है। लेकिन अगर दोनों यह सोच लें कि हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, तो धीरे-धीरे रिश्तों में मधुरता और आपसी प्रेम आ सकता है और जीवन लंबे समय तक अच्छा चल सकता है। आज जो छह-छह महीने में तलाक हो रहे हैं, उसका एक बड़ा कारण मोबाइल फोन भी है। सुबह से रात तक लड़के-लड़कियाँ मोबाइल में व्यस्त रहते हैं। शादी के बाद अविश्वास पैदा होता है–जैसे अगर लड़के को दिखे कि लड़की के बहुत दोस्त हैं, वह उनसे बात करती है, तो बिना किसी ठोस कारण के शक पैदा हो जाता है। यही छोटे-छोटे शक धीरे-धीरे बड़े मतभेद बन जाते हैं और अंत में तलाक तक बात पहुँच जाती है। मैंने खुद कोर्ट में देखा है कि छह महीने या एक साल के भीतर, गोद में बच्चा लेकर तलाक के मामले आ रहे हैं–कभी बच्चा माँ के पास जाता है, कभी पिता के पास। यह स्थिति बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। यह हमारे समाज की एक बहुत बड़ी बुराई है और इसके लिए न सरकार जिम्मेदार है, न कोई अथॉरिटी–इसके लिए हम सब खुद जिम्मेदार हैं। इसका समाधान यही है कि आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ हमें अपनी सोच भी बदलनी होगी। अगर सोच पुरानी और संकीर्ण रहेगी, तो समस्याएँ बढ़ेंगी।

आज अखबारों में हम ऐसी घटनाएँ पढ़ते हैं, जहाँ शादीशुदा लोग अवैध रिश्तों में पड़कर अपराध तक कर बैठते हैं–यह बेहद दुखद और चिंताजनक है। इसलिए जरूरत है कि हम आत्मचिंतन करें, अपने व्यवहार को सुधारें, रिश्तों को समय दें और एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें। तभी हम इन समस्याओं से बाहर निकल सकते हैं। समाधान हमारे पास है–बस उसे ईमानदारी से अपनाने की जरूरत है।

प्रश्न– केंद्र सरकार और राज्य सरकारें अपने-अपने स्तर पर जनहित के लिए लगातार काम कर रही हैं–चाहे वह इंफ्रास्ट्रक्चर हो, शिक्षा व्यवस्था हो या स्वास्थ्य सेवाएँ। लेकिन आम लोगों में सिविक सेंस की कमी के कारण कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि सरकार काम तो कर रही है, लेकिन उसका सही लाभ लोगों तक नहीं पहुँच पा रहा है या लोगों को उसकी जानकारी ही नहीं होती। क्या आपको नहीं लगता कि इस दिशा में सरकार को सिविक सेंस विकसित करने के लिए और सख्त कदम उठाने चाहिए?

उत्तर– मेरे अनुसार सिविक सेंस किसी कानून या आदेश से नहीं आता, बल्कि यह व्यक्ति के भीतर से आता है। आज हम केवल अपने अधिकारों की बात करते हैं, लेकिन अपने कर्तव्यों की बात नहीं करते। जब कर्तव्य निभाना हमारी जिम्मेदारी है, तो सिविक सेंस भी खुद ही विकसित होना चाहिए। सवाल यह है कि सिविक सेंस सिखाएगा कौन? अगर आप किसी कल्चरड हाउसिंग सोसाइटी में रहते हैं, तो वहां कुछ नियम होते हैं। उदाहरण के तौर पर, सोसाइटी के स्टेयरकेस कॉमन एरिया होते हैं, लेकिन फिर भी लोग वहां बूटकेस रख देते हैं, सामान जमा कर देते हैं, कुत्ते घुमाते हैं और यहां तक कि गंदगी भी कराते हैं। ये सब चीजें नहीं होनी चाहिए। जब पढ़ा-लिखा समाज भी ऐसा करता है, तो उसे कौन सुधारे? क्या हर जगह कोई अथॉरिटी खड़ी की जा सकती है? यह संभव नहीं है। इसलिए सिविक सेंस सेल्फ से ही आएगा और हमें खुद यह महसूस करना होगा कि क्या सही है और क्या गलत। अगर आप विदेशों में देखेंगे, जैसा कि मैं पिछले साल दुबई गया था तो वहां देखा कि सड़कों पर कहीं भी गंदगी नहीं दिखती। वहां हर जगह पुलिस खड़ी नहीं होती, फिर भी लोग नियमों का पालन करते हैं। वहीं, हमारे देश में तिरुपति जैसे शहर बेहद साफ हैं, जबकि दिल्ली जैसे बड़े शहर में, जहां केंद्र सरकार, राज्य सरकार और म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन तीनों मौजूद हैं, फिर भी गंदगी दिखाई देती है। ऐसे में सवाल उठता है कि समस्या कहां है? यहां अक्सर ब्लेम गेम चलता रहता है–कोई कहता है एमसीडी जिम्मेदार है, कोई कहता है राज्य सरकार, तो कोई केंद्र सरकार। जबकि सच्चाई यह है कि इन सभी को मिलकर काम करना चाहिए। मैंने खुद डीसी के साथ होने वाली बैठकों में यह बात रखी है कि पुलिस और एमसीडी को मिलकर सफाई, फुटपाथ अतिक्रमण और नागरिक सुविधाओं पर ध्यान देना चाहिए। अगर ऐसा हो, तो काफी हद तक समस्याओं का समाधान हो सकता है। इस समय इंटरनेशनल कोऑपरेटिव ईयर चल रहा है और मैं खुद कोऑपरेटिव मूवमेंट से जुड़ा हुआ हूं। हमारे केंद्रीय सहकारिता मंत्री माननीय अमित शाह जी हैं। लेकिन जमीनी स्तर पर कोऑपरेटिव सिस्टम में कई खामियां हैं। दिल्ली में कई कोऑपरेटिव हाउसिंग प्रोजेक्ट्स ऐसे हैं, जो 5-10 साल पहले बन चुके हैं,

लेकिन आज तक लोगों को फ्लैट अलॉट नहीं हो पाए हैं। इसका एक बड़ा कारण यह है कि रजिस्ट्रार कोऑपरेटिव सोसाइटीज का केवल एक ही ऑफिस है और वहां स्टाफ की भारी कमी है। फाइलें सालों तक अटकी रहती हैं और लोग पिलर टू पोस्ट भागते रहते हैं। यही स्थिति पुलिस और प्रशासन में भी है। थानों में अक्सर सुनने को मिलता है कि स्टाफ की कमी है, क्योंकि बहुत सारा बल वीआईपी सिक्योरिटी या कोर्ट ड्यूटी में लगा रहता है। नतीजा यह होता है कि आम आदमी तक सरकार की सुविधाएं सही तरीके से पहुंच ही नहीं पातीं और वह निराश हो जाता है। मेरा मानना है कि सरकारों को इस पर गंभीर चिंतन करना चाहिए और समुचित व्यवस्था करनी चाहिए, ताकि आम आदमी–जिसके वोट से सरकारें बनती हैं वह खुद को उपेक्षित महसूस न करे। अगर जनता ही परेशान रहेगी, तो यह लोकतंत्र और देश दोनों के लिए अच्छा संदेश नहीं होगा। इसलिए जरूरत है बेहतर प्रशासन, आपसी समन्वय और नागरिक जिम्मेदारी की, ताकि आम आदमी भी उन सुविधाओं का लाभ उठा सके, जिनकी उसे लंबे समय से प्रतीक्षा है।

प्रश्न– आपने सहकारिता को लेकर बहुत अच्छी बातें कहीं। देश के वर्तमान गृहमंत्री माननीय अमित शाह ही देश के पहले पूर्णकालिक सहकारिता मंत्री भी हैं। उनकी कार्यशैली और गृहमंत्रालय को लेकर लगातार चर्चा होती रहती है। ऐसे में क्या आपको नहीं लगता कि उन्हें सहकारिता मंत्रालय पर भी और अधिक फोकस करना चाहिए? क्योंकि सहकारिता एक ऐसा माध्यम है, जिसके जरिए जनभागीदारी सुनिश्चित होती है और देश तेज गति से आगे बढ़ सकता है। अगर सहकारिता आंदोलन को सही दिशा और मजबूती मिले, तो आम लोगों की भागीदारी बढ़ेगी और जमीनी स्तर पर विकास दिखाई देगा। इसके साथ ही, जो अधिकारी और कर्मचारी सहकारिता से जुड़े हुए हैं, क्या उनकी ज़िम्मेदारी तय नहीं होनी चाहिए? क्या यह जरूरी नहीं है कि वे अपने कार्यों के प्रति अधिक जवाबदेह हों, ताकि सहकारिता के माध्यम से जुड़े लोगों को समय पर न्याय, सुविधा और लाभ मिल सके? क्या इस दिशा में सरकार को और ठोस कदम उठाने की जरूरत नहीं है?

उत्तर– जैसा कि मैंने कहा, वर्ष 2025 अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष के रूप में पूरे देश में मनाया गया है और रजिस्ट्रार कोऑपरेटिव सोसाइटीज के माध्यम से कई कार्यक्रम भी किए जा रहे हैं। मेरा मूल उद्देश्य यही है कि जब यह सहकारिता वर्ष पूरे देश में मनाया जा रहा है, तो सहकारिता से जुड़े जितने भी लंबित (पेंडिंग) मुद्दे हैं, उनका समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। माननीय केंद्रीय गृहमंत्री जी देश के पहले पूर्णकालिक सहकारिता मंत्री भी हैं और राजनीति के चाणक्य कहे जाते हैं। ऐसे में सहकारिता से जुड़ी ये समस्याएँ उनके लिए कोई बड़ी चुनौती नहीं होनी चाहिए। मुझे जानकारी मिली है कि दिल्ली सरकार द्वारा 2023 में लागू किए गए संशोधित सहकारिता अधिनियम में रूल 90 के अंतर्गत एक समिति गठित की गई है। इस नियम के तहत यदि कोई व्यक्ति किसी सहकारी समिति का सदस्य रहा हो और वह समिति मान लीजिए वर्ष 2020 या 2021 में पूरी हो चुकी हो, तथा डीडीए द्वारा कम्प्लीशन सर्टिफिकेट भी जारी कर दिया गया हो, तो उसके बाद रजिस्ट्रार कार्यालय से एक वेरिफाइड मेंबर लिस्ट डीडीए को भेजी जानी होती है। लेकिन व्यवहार में यह देखा जा रहा है कि रूल 90 कमेटी की स्वीकृति न मिलने के कारण फाइलें तीन-तीन, चार-चार साल तक अटकी रहती हैं। क्योंकि इस समिति के अध्यक्ष सहकारिता विभाग के सचिव होते हैं और उनके अनुमोदन के बिना फाइल आगे नहीं बढ़ती। परिणामस्वरूप, फ्लैट बन जाने के बावजूद चार-पाँच साल तक अलॉटमेंट नहीं हो पाता। इस दौरान फ्लैटों की हालत खराब होने लगती है–प्लास्टर झरने लगता है, दीवारों में सीलन और अन्य प्रकार की क्षति होने लगती है–और सदस्य मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से परेशान हो जाते हैं। इसलिए जरूरत है कि ऐसा कोई सरल और प्रभावी नियम या संशोधन लाया जाए, जिससे रूल 90 की प्रक्रिया का सरलीकरण हो सके और लोगों को पाँच-छह महीनों के भीतर मकान मिल सके। मेरा मानना है कि माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री इस विषय पर गंभीरता से विचार कर सकते हैं। जिनके लिए धारा 370 जैसे बड़े निर्णय संभव हो सकते हैं, उनके लिए यह समस्या तो दिल्ली के संदर्भ में समुद्र में एक बूँद जल के समान है। यदि इस दिशा में ठोस कदम उठाए जाते हैं, तो इससे न केवल लोगों को राहत मिलेगी, बल्कि सहकारिता आंदोलन को भी मजबूती मिलेगी। अंतरराष्ट्रीय सहकारिता वर्ष में ऐसा निर्णय जनता का मनोबल बढ़ाने वाला होगा और सरकार के प्रति विश्वास को भी और सुदृढ़ करेगा।

प्रश्न– आपसे एक अत्यंत सार्थक प्रश्न है–क्या आज के पेरेंट्स की यह जिम्मेदारी नहीं बनती कि वे अपने बच्चों के भविष्य को सँवारते हुए, जिनके हाथों में आने वाला कल है, उन्हें पाश्चात्य संस्कृति की अंधी नकल से दूर रखकर अपनी भारतीय संस्कृति के संस्कार सिखाएँ? क्या 'हैलो' की जगह 'नमस्ते' और 'प्रणाम' जैसे शब्दों को फिर से जीवन में अपनाने की आवश्यकता नहीं है?

उत्तर– यह विषय पहले भी चर्चा में आया है। अभी हाल ही में आत्मनिर्भर भारत को लेकर एक बैठक आयोजित की गई थी, जिसमें हमारे पूर्व विधायक जयभगवान अग्रवाल जी तथा वर्तमान विधायक विजेंद्र गुप्ता जी भी उपस्थित थे। बैठक में यह स्पष्ट रूप से कहा गया कि आत्मनिर्भर बनने के लिए हमें अपने देश में बनी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। लेकिन आत्मनिर्भरता केवल बड़ी नीतियों तक सीमित नहीं है, इसकी शुरूआत घर से होती है। पहले घर में जो दाल-रोटी बनती थी, वही पूरे परिवार के लिए होती थी और बच्चे भी वही खाते थे। आज स्थिति यह है कि हम खुद ही बच्चों को बाहर का खाना, पैकेट फूड और बाजार की चीजें खाने की आदत डाल देते हैं, फिर कहते हैं कि बच्चे घर का खाना नहीं खाते। सवाल यह है कि यह आदत डाली किसने? पहले गाँवों में बड़े-बूढ़े और बच्चे सभी एक-साथ खाना खाते थे और कोई समस्या नहीं होती थी। इसी तरह संस्कारों की बात करें तो पहले घर आते ही नमस्ते, प्रणाम कहना, बड़ों के पैर छूना सामान्य बात थी। मैं जब पढ़ाई करता था, तब स्कूल में सबसे पहले शिक्षक के पैर छुए जाते थे। आठवीं और दसवीं तक बोर्ड परीक्षाएँ होती थीं, लेकिन इन परंपराओं का सम्मान बना रहता था। आज धीरे-धीरे ये सब चीजें समाप्त होती जा रही हैं। इसका एक बड़ा कारण अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव भी है, जिसके चलते हमारी भारतीय संस्कृति पीछे छूटती जा रही है। यह स्थिति हमारी आने वाली पीढ़ी और संस्कृति के लिए गंभीर खतरा है। इसलिए मैं सभी अभिभावकों से निवेदन करता हूँ कि बच्चों को अपनी संस्कृति से जोड़ें। उन्हें नमस्ते, प्रणाम, चरण-स्पर्श जैसे भारतीय संस्कार सिखाएँ और इन्हें अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ। यदि हम आज यह प्रयास करेंगे, तो जो भारतीय संस्कृति धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है, वह फिर से जीवंत हो सकेगी और हमारे देश की गरिमा और पहचान को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

साहित्य सारथी डॉ. प्रेम जनमेजय के संपादकीय में व्यंग्य यात्रा' की अनवरत यात्रा

विनोद कुमार विक्की

कोविड काल के दौरान जहां कई पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन पूर्णतः बंद हो गया और कुछ डिजिटल प्लेटफॉर्म अथवा पीडीएफ तक सिमटकर रह गईं, ऐसे में त्रैमासिक व्यंग्य यात्रा की यात्रा अनवरत जारी है।

व्यंग्य की एक संपूर्ण सार्थक पत्रिका को चंद टिप्पणी या संक्षिप्त समीक्षा में समेटना अपने-आप में एक चुनौती है। व्यंग्य यात्रा की निरंतरता और सार्थक उपस्थिति आदरणीय प्रेम जनमेजय सर की लगन, धैर्य और जीवटता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। यही कारण है कि निर्बाध व्यंग्य यात्रा करते हुए यह पत्रिका अक्टूबर-दिसंबर अंक के साथ अपने 21वें वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। मात्र 20 रुपये के अल्प मूल्य में इतनी भारी-भरकम और उत्कृष्ट पाठ्य सामग्री आज के समय में उपलब्ध कराना निश्चय ही एक अद्वितीय साहित्यिक योगदान है। पिछले अंकों की तरह इस अंक में शामिल लगभग सभी रचनाएँ उम्दा एवं पठनीय है। व्यंग्य पुरोधा श्रीलाल शुक्ल जन्मशती के उपलक्ष्य में उनकी स्मृति को समर्पित यह विशेषांक न केवल उनकी परंपरा और विरासत को प्रणाम करता है, बल्कि समकालीन व्यंग्य लेखन की समृद्धि का भी सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करता है। 'हिंदी व्यंग्य का संक्रमणकाल' विषय पर केंद्रित इस अंक में रचनाओं का चयन एवं संकलन में संपादकीय श्रम परिलक्षित होता है।

रचनाओं की गुणवत्ता, विविधता और प्रस्तुति—तीनों ही दृष्टियों से यह अंक अत्यंत प्रभावकारी है।

विशेष रूप से दिविक रमेश की 'देखो देखो', सूर्यकांत द्विवेदी की 'रिटायरमेंट', केदार शर्मा की 'गरीब की थाली में', राकेश सोहम की 'स्वर्गवासी अफवाहें', हरीश नवल की 'वाक्यों के हीरो राम', अर्चना चतुर्वेदी की 'लेखक और इंजीनियर की जोड़ी', कृष्ण कुमार अंशु की 'कालू दादा का नोबेल दावा', फारूक आफरीदी की 'अभागिन सड़क', अतुल चतुर्वेदी की 'गायब होना—रीढ़ की हड्डी का' तथा अलंकार रस्तोगी की 'मातृभाषा बनाम मात्र नब्बे घंटे' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इसके अतिरिक्त अरविंद तिवारी के उपन्यास अंश 'होटल का भूत' तथा हरिशंकर राढ़ी एवं बी.एल. आच्छा का 'व्यंग्य चिंतन' भी विचारोत्तेजक रहे।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अल्प मूल्य में अमूल्य साहित्यिक खुराक उपलब्ध कराना व्यंग्य यात्रा की निरंतर परंपरा रही है—और इस अंक ने उस मानक को न केवल बनाए रखा, बल्कि उसे और ऊंचा किया है। इस उत्कृष्ट संपादकीय श्रम के लिए संपादक आदरणीय प्रेम जनमेजय जी तथा पूरी टीम हार्दिक बधाई एवं साधुवाद की पात्र है। गद्य एवं पद्य व्यंग्य, चंदन घिसै, पाथेय, त्रिकोणीय, चिंतन, इधर जो मैंने पढ़ा, समाचार आदि स्थायी स्तंभों से सुसज्जित व्यंग्य यात्रा का प्रत्येक अंक पठनीय और संग्रहणीय होता है। वर्तमान में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाओं में विशिष्ट स्थान रखने वाली 'व्यंग्य यात्रा' व्यंग्य में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए एक बेहतरीन साहित्यिक उपहार है,जो मुद्रित प्रति के अलावा नाट-नल पर भी उपलब्ध हैं।

पत्रिका का नाम -व्यंग्य यात्रा
अंक- अक्टूबर-दिसंबर 2025
पेज-172 मूल्य-20रू
संपादक - प्रेम जनमेजय

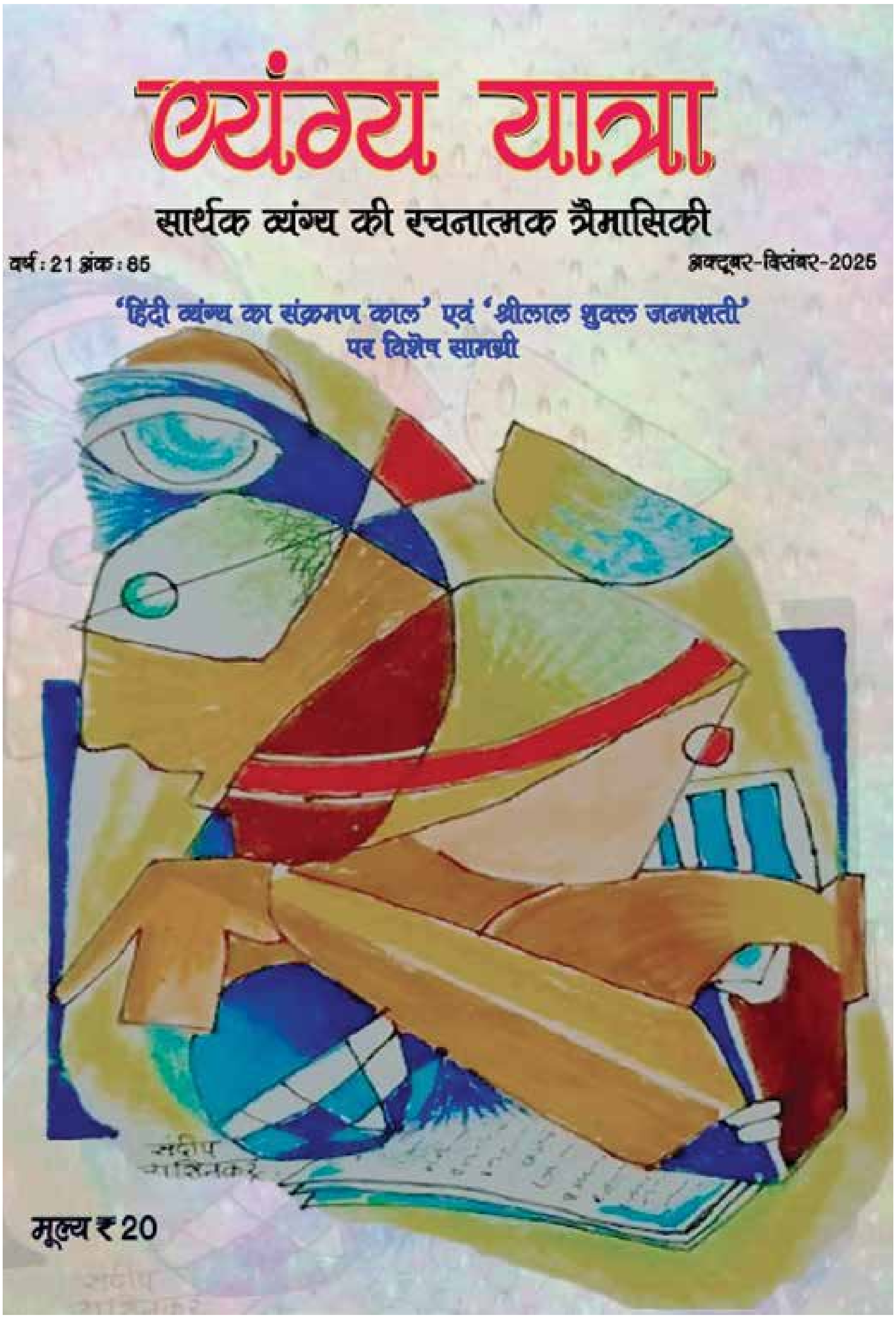

पवन शर्मा बने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अचीवर

प्रथम कैरिओके सिंगर्स डाइरेक्टरी को मिली मान्यता

गुरुग्राम। लेखक एवं कैरिओके सिंगर पवन शर्मा को इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने प्रथम कैरिओके सिंगर्स डाइरेक्टरी 'स्वर संग्रह' के लिए IBR Achiever की उपाधि से सम्मानित किया है। IBR ने स्वर संग्रह डाइरेक्टरी को अपनी रिकॉर्ड बुक में दर्ज किया है, जो कि देश के सभी कैरिओके सिंगर्स एवं संगीत-प्रेमियों के लिए गौरव की बात है। पवन शर्मा को 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स अचीवर' के रूप में सम्मान स्वरूप सर्टिफिकेट, मेडल और आइडेंटिटी-कार्ड प्रदान किया गया है।

आई.बी.आर. भारत में असाधारण और उल्लेखनीय उपलब्धियों को मान्यता देने वाला एक प्रतिष्ठित मंच है जो कला, शिक्षा, खेल, साहसिक कार्य और अन्य क्षेत्रों में मानवीय उत्कृष्टता को दर्ज करता है, ताकि उनकी प्रतिभा को दुनिया के सामने लाया जा सके। यह एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स से संबद्ध है, जिससे रिकॉर्ड धारकों को एशियाई स्तर पर भी पहचान मिलती है।

लेखक ने अपनी इस संकल्पना का स्वयं ही संकलन, संपादन एवं प्रकाशन भी किया है, जिसमें दिल्ली, गुरुग्राम, नोएडा, गाजियाबाद एवं फरीदाबाद क्षेत्र के कैरिओके सिंगर्स, ऑर्गनाइजर्स, ऑडिटोरियम और स्टूडियो के उपयोगी विवरण के अलावा अनेक महत्वपूर्ण लेखों एवं जानकारियों का भी समावेश किया है। कैरिओके सिंगिंग के महत्व एवं इस प्रकाशन की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए पवन शर्मा ने कहा कि गायकी हमारी कला एवं संस्कृति का अभिन्न अंग होने के साथ-साथ देश एवं दुनिया की एक उभरती हुई हॉबी भी है, जिसका कोई नकारात्मक पक्ष नहीं है।

उन्होंने कहा कि कैरिओके सिंगिंग के व्यवस्थित एवं व्यावसायिक स्वरूप लेने से देशभर में हर आयु-वर्ग के लाखों लोग इससे जुड़ रहे हैं और हजारों-लाखों लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार भी मिल रहा है। सिंगिंग हॉबी से न केवल मानसिक तनाव एवं अवसाद जैसी समस्याओं से राहत मिलती है, बल्कि सिंगर्स के व्यक्तित्व में भी निखार आता है और परस्पर सामाजिक जुड़ाव बढ़ता है।

पवन शर्मा ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि समाज के लिए इतने महत्वपूर्ण एवं उपयोगी क्षेत्र होते हुए भी आज तक कैरीओके सिंगर्स एवं ऑर्गेनाइजर्स का कोई सूचनापरक संग्रह प्रकाशन करने की पहल नहीं की गई, जिससे सिंगर्स, ऑर्गनाइजर्स एवं संगीत-प्रेमियों के बीच आपसी संपर्क और सहयोग सशक्त हो सके।

हाल ही में, गुरूग्राम के आर्टिमिस ऑडिटोरियम में इस डाइरेक्टरी का भव्य विमोचन समारोह आयोजित किया गया था, जिसमें बड़ी संख्या में दिल्ली एन.सी.आर. के जाने-माने सिंगर्स, ऑर्गेनाईजर्स एवं संगीत प्रेमियों के अलावा प्रतिष्ठित हस्तियां भी शामिल हुई थीं जिन्होंने इस अभूतपूर्व प्रकाशन की मुक्त कंठ से सराहना की थी।

कविता

‘औरत की ताकत’

पल्लवी श्रीवास्तव

अगर पानी है कामयाबी,
तो बहुत कुछ त्याग करना पड़ता है,
कच्ची उम्र की अपनी ख्वाहिशों का,
बलिदान करना पड़ता है।

टिकानी पड़ती है नजर अपने लक्ष्य पर,
हिम्मत और हौसलों से हर मुश्किल को पार करना पड़ता है।
तोड़नी पड़ती हैं अंधविश्वास और गुलामी की जंजीरें,
अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है।

कभी-कभी करना पड़ता है खुद को कुर्बान,
मिटाकर खुद को अपने मकसद के लिए,
एक नया इतिहास बनाना पड़ता है।
कब तक अंधविश्वास में खुद को यूँ ही मिटाती रहेगी?
खाकर जमाने की ठोकरें, जुल्म और अत्याचार सहती रहेगी?

कोई नहीं आएगा तुझे बचाने ,
कब तक इस भ्रम में अपनी हस्ती खोती रहेगी?
अपने सम्मान के लिए,
तुझे खुद ही आगे आना पड़ेगा।
अपनी हिम्मत और ताकत का एहसास जमाने को कराना पड़ेगा।

ज़िंदा हो अगर, तो जमाने को ज़िंदा होने का एहसास कराना पड़ेगा।
कब तक यूँ ही सहती रहोगी,
जुल्म, अत्याचार और बलात्कार को?
इन सब को जड़ से मिटाना पड़ेगा ।

अब और इंतजार नहीं!
उठ, आवाज उठा, हिम्मत दिखा,
अपनी इज्जत और सम्मान,
तुझे खुद ही बचाना पड़ेगा।

तुझमें जो है ताकत और हिम्मत ,
उसका एहसास, जमाने को कराना पड़ेगा।
लड़कर दुनिया के जालिमों से,
खुद को बचाना पड़ेगा,
अपनी काबिलियत के दम पर,
खुद को सम्मान दिलाना पड़ेगा।

न तू अबला है,
न कमजोर,
तू खुद में एक शक्ति है, एक दौर है,
जो इतिहास बदलने का,
हौंसला रखती है।

मत मिटा खुद को,
अंधविश्वास और अज्ञान की भट्टी में,
तू कोई साधारण नहीं,
एक शक्ति है इस सृष्टि में।

तू झाँसी की रानी की वीरता रखती है,
माता सावित्रीबाई की शिक्षा और जागृति की ज्योति जलाती है,
माता रामबाई जैसी दृढ़ता और साहस से,
हक और इंसाफ दिलाने की ताकत रखती है।

फूलन देवी की तरह ,
जुल्म और अत्याचार के खिलाफ लड़कर,
जालिमों को टकराने की हिम्मत ,
तेरे अंदर बसी है।
जिस दिन तुझे ,अपनी जिंदा होने का पूरा एहसास हो जाएगा,
उसी दिन तेरे हौसले, जुनून और हिम्मत से एक नया इतिहास लिखा जाएगा।

तेरे भीतर है वो आग,
जो अन्याय को राख में बदल सकती है।
बस पहचान ले अपनी शक्ति को,
क्योंकि तू ‘औरत की ताकत’ रखती है।
तू जननी है इस जग की,
तू दुनिया को बदलने की ताकत रखती है।

महुआ

डॉ. श्याम किशोर पांडेय

महुए के आस- पास ,
रात के अंतिम प्रहर की बसंती बयार
सुगंधित और मादक है क्योंकि
ऊपर से टप-टप की ध्वनि से
भूमि पर मादकता की सफेद चादर पसारता
महुआ का फूल चू रहा है ।
कितना नाजुक, कितना चिकना,
धवल - शुभ्र ,रस सिक्त है महुए का फूल ।

श्यामा है ,गौरी है ,इंद्रावती है
धुँधलके चुनती हैं ,बड़े प्रेम से महुए को ,जो सूरज की किरणों से घायल हो
कुम्हलाने लगता है ,
बदल जाता है रूप-रंग, फीकी पड़ जाती है धवल कांति ।
कच्चा महुआ शराब है ,
तो सूखा महुआ मेवा है ,
यह गाँव- गरीब, आदिवासियों का किशमिश है।
गाँवों में आज भी , महुए के फूलों की बनती हैं पूड़ियाँ और लाजवाब पूए
और अब तो शहरों में बनने लगी हैं स्वादिष्ट कुकीज भी ।
बर्रे के बीजों के साथ सूखे महुए को कूटकर
बनते हैं स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यवर्धक लट्टे।
महुआ का फल कोइना अपने आप में अनूठा है ,
महुए के छतनार हरे पत्तों के बीच झाँकता ,गुच्छे में इठलाता
सुंदर और गहरा हरा कोइना,
बादाम होने का आभास कराता है ।
कच्चे कोइना के छिलके से बनती हैं ,रस्सेदार सब्ज़ियाँ
और पके कोइना से निकलता है गुणकारी - बेशकीमती तेल।

वैशाख-जेठ की तपती दुपहरी में पथिकों -मवेशियों को
शीतल छाँह देता है महुआ ।
पतली -कोमल टहनियों के दातून से
मसूड़ों- दाँतों को मिलती है मजबूती और सुरक्षा ।
आदिवासियों का हमसफर, आजीविका का स्रोत
और उनकी जान है महुआ ।
न बहुत महंगी, न बहुत सस्ती ,पर जानदार है
महुए की मजबूत खूबसूरत पीली इमारती लकड़ी,
और इसके मजबूती की ऐसी जबरदस्त गारंटी देता है केवल महुआ,
जैसी शीशम और सागौन भी नहीं देते ।
यह गारंटी भी दस- बीस वर्ष की नहीं,
अपितु पूरे दो सौ वर्षों की ,
'सौ वर्ष अट तो सौ वर्ष पट ,पर शर्त ,
न छुए पानी' यह अपने आप में विशिष्ट है ।
आज समय की माँग है , गाँवों से , कस्बों से , शहरों से ,
चौड़ी होती ,हाइ वे बनती सड़कों के किनारों से , जंगलों से ,
बेतहाशा काटे जा रहे महुए को , विलुप्त होने के कगार पर खड़े महुए को ,
बेशकीमती और पोर-पोर उपयोगी अपने प्रिय महुए को
कटने से बचाया जाए,
न केवल आज के लिए, बल्कि
अगली पीढ़ियों की समृद्धि और खुशहाली के लिए
महुए का संरक्षण और संवर्द्धन भी किया जाए ।

तुम्हे पता है न

हाजी निसार मालवी

आज मेरी खुशकिस्मती है कि संतोष ने मुझे एक कहानियों का मजमुआ पढ़ने दिया। जो नेपाल की बहुत मकबूल शायरा लेखिका मोहतरमा पूजा बहार ने लिखी है। किताब का उन्वान तुम्हे पता है न मिला।

ये किताब जिंदगी का एक आईना है। जिसमें हर आदमी अपने अक्स को साफ साफ देख सकता है। छोटी छोटी कहानियों में जैसे कायनात को समेट दिया है। जिंदगी वो नहीं है जो हम लोग गुजारते है। बल्कि जिंदगी वो है जिसे हम दिल से जीते है। इन लघुकथाओं में जिंदगी जीने का शऊर है। हर कहानी इक अलग दास्तान का बयान करती है। कहीं रिश्तों की तल्खियाँ तो कहीं पर जिश्त की कड़वी हकीकत, कहीं कहीं तो मोहतरमा पूजा ने अपनी कलम को बेहद ईमानदारी और साफगोई के साथ चलाकर अपनी जिम्मेदारी का अहसास कराया है। किसी राइटर की किताब उसकी बेटी की तरह होती है। वो बेटी जिसकी हर जिम्मेदारी उसकी मां की होती है पालने पोसने से पढ़ाने लिखाने शादी विवाह तो बल्कि जीवन के आखिरी लम्हों तो उसकी देखभाल का जिम्मा उसकी मां अपने सर पे लेती है। उसी तरह मोहतरमा पूजा ने इस मजमुए को बड़े सलीके से सजाया संवारा है। ओर पूरी शिद्दत से इसको लफ्जों में जान डालने की कामयाब कोशिश की है। नेपाल में रहने के कारण पहाड़ी कल्चर और कायनात की खूबसूरती भी उनकी कहानियों में दिखाई देती है। अल्लाह से दुआ है कि आपकी कलम को ओर बेहतर सच लिखने की तौफीक अता फरमाए इसी दुआ के साथ आमीन।

माँ

बबली सिन्हा 'वान्या'
(गाजियाबाद)

माँ आज खुश बहुत है
बुझे हुए चेहरे पर रौनक है....

उनके धीरे-धीरे पैरों की चाल ने
तेज रफ्तार ली है

देख रही बूढ़ी आँखों से वह
कभी दरवाजे की ओर तो
कभी गली को दूर तलक....

आँखों की
धुंधली रौशनी आज
चमक उठी है
बेटे के घर आने की खबर ने
जादू दिखाई है

भूल बैठी है वो अपने शरीर के बूढ़ेपन को
दवाईयों के साथ काट रहे
लाचार जीवन को

पूरे घर को महसूस हो रहा आज
उनके पैरों की धीमी थाप

कोने- कोने से कर रही बातें
फुसफुसाते हुए ठीक करती
बिखरी चीजें....

गुमसुम दीवारें
आज कमरों में अपनी हंसी
बिखेर रही
जैसी तोड़ी हो वर्षों की चुप्पी....

रसोई आज फिर से
स्वाद का तड़का लगाई है
फैलती खुशबुओं ने
दे दी है संदेश पड़ोसियों को
आज हर पकवान स्वादिष्ट है

उत्साह से माँ
फुले न समाती
निकालती बक्से से
वर्षों पुरानी एक नई साड़ी....

पहनती करती श्रृंगार
हाँ !
बेटे के लिए भी
माँ होती है तैयार....

हर बच्चे के लिए
उसकी माँ
होती है सबसे प्यारी
और माँ होना ही
माँ की है खूबसूरती

माँ आज खुश बहुत है.....

भोर

सुबह तो रोज होती है
आज की सुबह कुछ और थी
कोहरे की चादर में लिपटी थी भोर
मन के अंदर मचा था शोर

चाय का प्याला हाथ में था
किस्मत की थामे थी डोर
बुन रही थी कल

अचंभित तो तब हुई
जब आश्वस्त हुई कि
ये कोई कल्पना या सपना नहीं

जागी थी मैं यथार्थ था सब
ये तो मेरी जिंदगी की भोर थी....

गजल

संतोष शर्मा सागर

आओ लिखे शाम सुहानी कागज पर।
भूली बिसरी एक कहानी कागज पर।।

कल तक मेरे जहानों दिल में रहती थी।
उतरी है गजलों की रानी कागज पर ।।

रफ्ता रफ्ता मेरे दिल में उतर गई ।
एक सूरत जानी पहचानी कागज पर।।

जब-जब तेरे हुस्न का हमने जिंक्र किया ।
लफ़्जों ने फिर की मनमानी कागज पर।।

मैंने तो बस हाल तुम्हारा पूछा था ।।
भेज दिया आँखों का पानी कागज पर।।

रूह तलक लफ्जों की खुशबू उतर गई।
जिंक्र लिखा जब भी नूरानी कागज पर।।

मुझको तेरी आमद का एहसास हुआ।
जब जब लिख्खी गजल पुरानी कागज पर।।

कवि का घर बचेगा

मिथिलेश आदित्य

वह अपनी कविताओं से प्रार्थना करता है–
क्योंकि अब
किसी देवता तक उसकी पहुँच नहीं रही।
कागज ही उसका मंदिर है,
कलम ही उसका दीया,
और शब्द–
उसके जीवन की आखिरी पूँजी।

वह इन्हीं पर
चढ़ाता है अपना जीवन।

उसके आँसू ही धूप हैं,
जिनसे वह
हर सुबह
अपने डर को सुखाता है।
उसकी शांति– अगरबत्ती है,
जो जलती रहती है
तब भी
जब घर के बाहर
नोटिस चिपकाए जाते हैं।

कवि का घर नहीं टूटेगा–
कवि का घर बचेगा।

हालाँकि
सड़क उसके आँगन को
नाप चुकी है,
पंद्रह फुट के भीतर
उसका बचा हुआ संसार
चिन्हित कर लिया गया है।
बाजार के बीचों-बीच
उसका घर
अब घर नहीं,
एक अड़चन कहा जा रहा है।

जहाँ रोज
टूटते हैं घर,
और लोग
अपनी छतें नहीं–
अपनी आवाजें समेटकर
खामोश लौट जाते हैं।

लेकिन
कवि नहीं लौटता।

वह जानता है–
उसका घर
ईंटों पर नहीं,
उसकी कविता पर आश्रित है।

वह फिर
अपनी कविताओं से प्रार्थना करता है–
कागज, कलम, कविता पर
चढ़ाता है अपनी भक्ति,
अपना डर,
अपनी भूख,
और बच्चों की
अधूरी पढ़ाई।

उसके शब्द–
हथौड़ों से नहीं डरते,
उसकी पंक्तियाँ
मशीनों की आवाज से
काँपती नहीं।
क्योंकि वे
भूखे दिनों में लिखी गई हैं,
और बेइज्जती झेलकर
पकी हुई हैं।

वही कविता–
जिसे पढ़कर
दुनिया के लोग
अपने-अपने घरों में
थोड़ी देर
इंसान बने रहते हैं।
वही कविता–
जो दूसरों को
आगे पढ़ने का कारण देती है,
और कवि को
पीछे हटने से रोकती है।

वह जानता है–
भीड़ में
कोई उसे नहीं पहचानेगा,
बाजार में
कोई उसकी कीमत नहीं लगाएगा।
उसकी मेहनत
न तौली जाएगी,
न दर्ज होगी।

लेकिन उसकी कविताएँ
गवाही देंगी।

उसकी कविताएँ कहेंगी–
कि यह घर
डर पर नहीं,
कविता पर टिका था।

और इसी आश्रिता में
कवि का घर–
टूटते शहर के बीच
आज भी खड़ा है,
और
कल भी
बचा रहेगा।

मैं नारी हूं

डॉ. निर्मल कांता

मैं नारी हूं तो क्या हुआ,
पत्थर सा जिगर रखती हूं,
जिंदा इसलिए हूं,
मां -बाप की शान रखती हूं,
जीने को तो दुनिया जीती है,
मैं सलीके से जीने का हुनर रखती हूं।
मैंने जिया है जीवन को उसूलों की तरह,
बच्चों को भी रखा है,
फूलों की तरह,
गलत बातों पर समझौता किया नहीं मैंने,
जिंदगी जिंदादिली से जी मैंने सच्चाई सहने का दिल रखती हूं,
मैं नारी हूं तो क्या हुआ...

'लोकतंत्र की बुनियाद' के सम्मानित सदस्यगण वर्ष 2026-27

रामफल यादव
सदस्य

कुंवर गोपाल सिंह
सदस्य

विक्रम सिंह यादव
(सोहरखा) सदस्य

शिल्पी यादव (वास्तुविद)
सदस्य

चन्द्रशेखर यादव
सदस्य

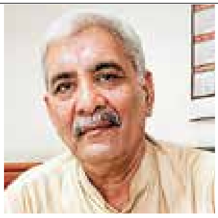
हुकुम चन्द लांबा
सदस्य

पूजा महेश्वरी
सदस्य

आचार्य सहदेव शर्मा
सदस्य

पंडित भूप राम शर्मा
सदस्य

बृजमोहन पाण्डेय
(प्रयागराज) सदस्य

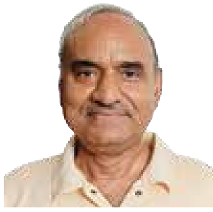
गजेंद्र सिंह यादव
सदस्य

मंजीत सिंह
सदस्य

सतेन्द्र यादव
सदस्य

एडवोकेट नरेश यादव
(पूर्व विधायक) सदस्य

आप सभी सम्मानित सदस्यों को राष्ट्रीय मासिक पत्रिका लोकतंत्र की बुनियाद की सदस्यता ग्रहण करने पर पत्रिका परिवार आप सभी का हार्दिक स्वागत एवं धन्यवाद करता है।

बॉयलर अटेन्डेन्ट बोर्ड परिक्षा का विडियोंग्रॉफी हों: त्रिवेदी

बॉयलर अटेन्डेन्ट वेलफेयर एसोसिएशन अध्यक्ष सुरेश कुमार त्रिवेदी ने पत्रांक- 3/1 दिनांक- 06 जनवरी 2026 को पत्र लिखकर असम, बिहार, झारखंड, हरियाणा, गुजरात, केरल तथा महाराष्ट्र के मुख्यमंत्रियों से मांग की है कि - राज्य में आयोजित होने वाली Second Class – First Class बॉयलर अटेन्डेन्ट बोर्ड परिक्षा में आवेदन से लेकर परिक्षा-परिणाम की घोषणा तक विभिन्न स्तर पर घोर भ्रष्टाचार होता है, जिससे परिक्षार्थी काफी दुखित हो जाते हैं यहॉं तक, कुशल योग्य प्रत्याशी भी आवेदन नही कर पाते हैं, कारण है फैला भ्रष्टाचार! आज के समय में परिक्षा में पारदर्शिता आवश्यक हो गया है, खास कर और तब,

जब 'परिक्षा पुर्णतः मैखिक हो' - परिक्षार्थी दसवीं पास है।

उल्लेखणीय है लगभग 15 वर्ष पूर्व से दसवीं पास शैक्षणिक योग्यता अनिवार्य हो गया है, भ्रष्टाचार मुक्त-पारदर्शी बॉयलर अटेन्डेन्ट बोर्ड परिक्षा का मजिस्ट्रेट के निर्देशन में विडियोंग्रॉफी परिक्षा कार्यक्रम के शुरू से पुर्ण होने तक आवश्यक हो गया है, मांग करता हुं कि पूरे बॉयलर अटेन्डेन्ट बोर्ड परिक्षा के कार्यक्रम का अनिवार्य रूप से मजिस्ट्रेट के निर्देशन में विडियोंग्रॉफी हों- मजिस्ट्रेट श्रम विभाग या उद्योग विभाग का अधिकारी हों।

BEYOND BASH EVENTS
Bespoke Wedding Planning services
Roka | Sangeet | Cocktail | Destination Weddings
beyondbashevents 9289906332 www.beyondbashevents.com

विश्व पुस्तक मेला 2026 में 'पंचकन्याः एक रहस्यमयी यात्रा' का लोकार्पण, साहित्य और विचार का गरिमामय संगम

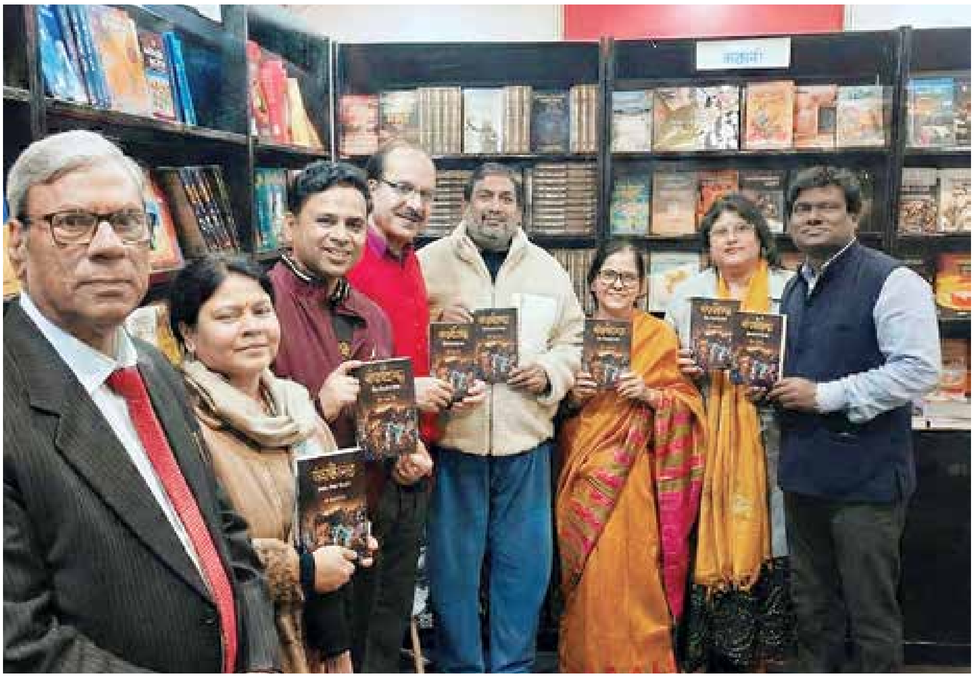

नई दिल्ली। विश्व पुस्तक मेला 2026 के अंतर्गत भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित एक प्रतिष्ठित साहित्यिक समारोह में वरिष्ठ लेखिका डॉ. नीलम महेंद्रा की नवीन पुस्तक 'पंचकन्याः एक रहस्यमयी यात्रा' का विधिवत लोकार्पण किया गया। यह आयोजन साहित्य, समाज और समकालीन विचार-विमर्श के सशक्त संवाद का साक्षी बना।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी कैसर खालिद (अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक, पीसीआर, महाराष्ट्र) उपस्थित रहे। विशिष्ट अतिथियों में जम्मू की चर्चित हिंदी लेखिका डॉ क्षमा कौल तथा प्रख्यात लेखक डॉ अग्निशेखर शामिल रहे। कार्यक्रम का प्रकाशन पक्ष प्रलेक प्रकाशन, मुंबई के संस्थापक जितेन्द्र पात्रो द्वारा संभाला गया, जो साहित्यकारों पर केंद्रित 'एक शिनाख्त' जैसी विशिष्ट श्रृंखलाओं के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनकी समर्पित कार्यशैली, लेखकों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण और साहित्य संरक्षण में योगदान को समारोह में सराहा गया।

इसके अतिरिक्त इंजीनियर कपिल महेंद्रा भी समारोह में उपस्थित रहे। वक्ताओं ने 'पंचकन्याः एक रहस्यमयी यात्रा' को समकालीन सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श में एक महत्वपूर्ण कृति बताते हुए इसे पाठकों के लिए विचारोत्तेजक और प्रासंगिक बताया।

1857 की क्रांति की ज्वालाः राजा नाहर सिंह को दिल्ली विधानसभा में श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 में जिन वीरों ने अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हिलाकर रख दिया, उनमें बल्लभगढ़ के शासक राजा नाहर सिंह का नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है। वे केवल एक शूरवीर राजा नहीं थे, बल्कि मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए हँसते-हँसते फांसी का फंदा स्वीकार करने वाले अमर क्रांतिकारी थे। राजा नाहर सिंह ने अपनी अदम्य वीरता और दूरदर्शी रणनीति से दिल्ली को लगातार 134 दिनों तक अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त रखा। उनकी सेनाओं ने दिल्ली के पूर्वी और दक्षिणी मोर्चों पर अंग्रेजी सेना को कड़ी चुनौती दी और बार-बार उसके मंसूबों को नाकाम किया। बल्लभगढ़ की धरती अंग्रेजों के लिए अभेद्य दुर्ग बन चुकी थी।

ब्रिटिश हुकूमत राजा नाहर सिंह की बढ़ती ताकत से भयभीत हो चुकी थी। शांति वार्ता के छलावे में उन्हें दिल्ली बुलाया गया और विश्वासघात कर गिरफ्तार कर लिया गया। लाल किले में कैद किए जाने के बाद अंग्रेजों ने जब उनसे माफी माँगने को कहा, तो इस स्वाभिमानी योद्धा ने दो टूक शब्दों में इंकार कर दिया। परिणामस्वरूप 9 जनवरी 1858 को लाल किले के समीप फब्बारा चौक पर उन्हें फांसी दे दी गई। उनके साथ उनके वीर साथी भूरा सिंह और गुलाब सिंह सैनी ने भी देश के लिए अपने प्राण न्योछावर किए।

इसी अमर बलिदान की स्मृति में दिल्ली विधानसभा में 'राजा नाहर सिंह बलिदान दिवस' श्रद्धा, सम्मान और गर्व के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने की। इस अवसर पर विधानसभा उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट एवं विधायक राजकरण खत्री विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि राजा नाहर सिंह का जीवन साहस, आत्मसम्मान और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक है। उन्होंने न केवल अंग्रेजी सत्ता को चुनौती दी, बल्कि यह भी सिद्ध किया कि स्वतंत्रता किसी भी कीमत पर समझौते की मोहताज नहीं होती। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे, जिनमें प्रमुख रूप से रोहिणी जाट सभा के प्रधान कर्मवीर खत्री, रोहिणी फेडरेशन ऑफ को-ऑपरेटिव ग्रुप हाउसिंग सोसायटीज के प्रधान आर्य मुनि, डॉ. राजबीर राणा, राजेश छिल्लर, वेद प्रकाश हुड्डा, संदीप दहिया एवं सतीश खत्री शामिल रहे। सभी ने पुष्प अर्पित कर वीर शहीद को नमन किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रभक्ति के उद्घोष और राजा नाहर सिंह के बलिदान व आदर्शों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रखने के संकल्प के साथ हुआ।

ऐसे अमर योद्धा राजा नाहर सिंह को कोटि-कोटि नमन।

'लोकतंत्र की बुनियाद' के सम्मानित सदस्यों को उनके जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

सतीश कुमार (जालंधर)
2 फरवरी

चंचल त्यागी
3 फरवरी

लाला राजेश गुप्ता
3 फरवरी

राजीव त्यागी (बिट्टू)
3 फरवरी

भूषण लाल
3 फरवरी

एडवोकेट नरेश यादव
5 फरवरी

अशोक यादव
5 फरवरी

विक्रम सिंह यादव
6 फरवरी

आकांक्षा अग्रवाल
7 फरवरी

रमेश यादव
7 फरवरी

उग्रसेन सिंह
10 फरवरी

योगेंद्र सिंह 'डब्बू'
15 फरवरी

सुनील यादव (बांके बिहारी)
15 फरवरी

जहां धैर्य टिकता है, वहां परिवर्तन उभरता है

देवेन्द्रराज सुथार

एक दिन जापान के दार्शनिक कुकाई पहाड़ों में एक छोटे मठ में रुके और वहां उन्होंने देखा कि एक बूढ़ा भिक्षु रोज घंटों तक पत्थर पर पानी डालता रहता था। कुकाई ने हैरानी से पूछा कि ऐसा करने का क्या फायदा, क्योंकि पत्थर तो कभी नहीं पिघलेगा। भिक्षु ने शांत स्वर में उत्तर दिया कि वह जानता है पत्थर जल्दी नहीं बदलेगा, लेकिन हर दिन पानी अपनी छाप छोड़ता है और सबसे पहले वह स्वयं बदलता है, धैर्य सीखता है।

कुछ दिन ठहरने के बाद जब कुकाई वहां से जाने लगे, उन्होंने देखा कि पत्थर पर पानी की बूंदों से एक हल्की रेखा बन गई थी। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि अब समझ आया कि परिवर्तन हमेशा तुरंत दिखाई नहीं देता, लेकिन लगातार प्रयास का असर अवश्य पड़ता है। वर्षों बाद जब कुकाई को लोग महान गुरु कहने लगे, तो वे इसी भिक्षु का उदाहरण देते और बताते कि प्रतिभा का अर्थ तेज होना नहीं, बल्कि धैर्य से टिके रहना है।

इस कहानी में भले ही क्रिया साधारण प्रतीत होती है, लेकिन उसका संदेश गहन और बहुआयामी है। पत्थर पर पानी डालना केवल एक भौतिक क्रिया नहीं, बल्कि निरंतरता, लगन और आत्म-अनुशासन का प्रतीक है। जीवन में अक्सर हम बड़े परिणामों और तात्कालिक सफलता के पीछे भागते हैं और इस प्रक्रिया में छोटे प्रयासों की महत्ता भूल जाते हैं। हमारी साधना, हमारी रोजमर्रा की सजगताएं, हमारे छोटे कर्म—ये सभी पत्थर पर गिरती बूंदों की तरह धीरे-धीरे प्रभाव डालते हैं। परिवर्तन का वास्तविक मापदंड तुरंत दिखाई देने वाले परिणाम में नहीं, बल्कि समय के साथ सतत् अभ्यास और धैर्य में छिपा होता है। भिक्षु की लगन हमें यह भी सिखाती है कि आध्यात्मिक जीवन केवल उच्च विचार या ज्ञान का संग्रह नहीं, बल्कि आत्मा का निरंतर प्रशिक्षण है। यह प्रशिक्षण किसी महान घटना या असाधारण कार्य की प्रतीक्षा नहीं करता, बल्कि हर दिन किए जाने वाले छोटे, अविराम प्रयासों में खुद को परिलक्षित करता है। यही प्रक्रिया मनुष्य को भीतर से बदलती है और उसे स्थिर, सहनशील और सजग बनाती है। जब हम धैर्य और लगन से लगातार प्रयास करते हैं, तो कठिन से कठिन परिस्थितियां भी धीरे-धीरे हमारे नियंत्रण में आ जाती हैं। मनुष्य अक्सर तुरंत संतुष्टि के लिए प्रयास करता है और छोटी-छोटी निरंतर क्रियाओं को महत्त्व नहीं देता। लेकिन पत्थर पर पानी की बूंदों की तरह, हमारी साधना और कर्म भी प्रारंभ में नगण्य प्रतीत होते हैं, फिर भी वे गहरी छाप छोड़ते हैं। यही स्थिरता और सहनशीलता जीवन में असली शक्ति का आधार बनती है। यह शक्ति दिखावा नहीं करती, वह तुरंत मान्यता नहीं पाती, लेकिन समय और धैर्य के साथ उसका असर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह स्पष्ट है कि परिणाम से अधिक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया और उसमें दी जाने वाली निरंतरता है। जब हम जीवन में किसी कार्य को अपनी पूरी सजगता, आत्म-अनुशासन और धैर्य के साथ करते हैं, तो परिणाम स्वतः उत्पन्न होते हैं। यह दृष्टिकोण हमें यह भी याद दिलाता है कि आत्मिक परिवर्तन और व्यक्तित्व का निर्माण तेज सफलता या तात्कालिक प्रभाव से नहीं, बल्कि छोटे, स्थिर और निस्वार्थ प्रयासों से होता है। यह सोचने योग्य है कि महानता केवल बड़ी उपलब्धियों में नहीं है, बल्कि निरंतर, शांत और सुसंगत प्रयास में निहित है। जीवन में धैर्य और लगन की यही शक्ति हमें कठिनाइयों के सामने टिकने, असफलताओं से सीखने और समय के साथ स्थायी परिवर्तन लाने में सक्षम बनाती है। पत्थर पर बूंदों का प्रभाव नजर में छोटा हो सकता है, लेकिन समय और लगातार प्रयास के साथ उसका असर गहरा और स्थायी होता है।

सार यही है कि जीवन में हर क्षण, हर प्रयास, चाहे कितना भी सूक्ष्म लगे, हमारी आत्मा और चरित्र को आकार देता है। परिवर्तन और महानता के लिए जरूरी है निरंतरता, धैर्य और शांत लगन और यही असली आध्यात्मिक शक्ति है।

योगः भारतीय विरासत से स्वस्थ्य जीवन की ओर

देशराज जी के विशेष योग सत्र ने साधकों को दिया संतुलित जीवन का संदेश

नई दिल्ली। योग, भारतीय सभ्यता की वह अमूल्य धरोहर है, जिसने सदियों से मानव जीवन को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक रूप से सशक्त बनाया है। यह केवल व्यायाम की पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक संपूर्ण कला है। इसी भाव को जीवंत करता हुआ एक विशेष योग कार्यक्रम प्रशांत विहार जिले के सेक्टर-14 स्थित जिला उद्यान के योग साधना केंद्र में आयोजित किया गया, जहाँ भारतीय योग संस्थान के अखिल भारतीय प्रधान देशराज जी का सान्निध्य योग साधकों को प्राप्त हुआ। इस विशेष योग सत्र में बड़ी संख्या में स्वास्थ्य के प्रति जागरूक साधक, प्रशिक्षक और समाज के विभिन्न वर्गों से जुड़े लोग शामिल हुए। कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को योग के वैज्ञानिक, आध्यात्मिक और व्यावहारिक पक्षों से परिचित कराना रहा, ताकि योग को केवल एक गतिविधि नहीं बल्कि दैनिक जीवन का हिस्सा बनाया जा सके।

अपने विस्तृत संबोधन में देशराज जी ने विशेष रूप से ठंड के मौसम में योग और प्राणायाम की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सर्दियों में शरीर की गतिविधियाँ धीमी हो जाती हैं, मांसपेशियों में जकड़न बढ़ती है और मानसिक सुस्ती भी देखने को मिलती है। ऐसे समय में नियमित योगाभ्यास शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करता है, रक्त संचार को बेहतर बनाता है और मानसिक स्पष्टता प्रदान करता है। उन्होंने यह भी कहा कि योग तनाव, चिंता और नकारात्मकता को दूर कर मन में स्थिरता और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करता है।

कार्यक्रम के दौरान देशराज जी ने विभिन्न योगासनों, प्राणायाम और ध्यान तकनीकों का क्रमबद्ध अभ्यास कराया। उन्होंने सरल, सुरक्षित और प्रभावी आसनों के माध्यम से यह समझाया कि हर आयु वर्ग का व्यक्ति योग से कैसे लाभ उठा सकता है। प्रत्येक आसन की सही मुद्रा, श्वसन प्रक्रिया और अभ्यास के दौरान बरती जाने वाली सावधानियों को उन्होंने विस्तारपूर्वक समझाया, जिससे साधक बिना किसी जोखिम के योग को अपनी दिनचर्या में शामिल कर सकें।

इसके साथ ही उन्होंने प्राणायाम की महत्ता बताते हुए कहा कि श्वास-प्रश्वास पर नियंत्रण जीवन ऊर्जा को संतुलित करने की कुंजी है। नियमित प्राणायाम न केवल फेफड़ों को मजबूत बनाता है, बल्कि मानसिक एकाग्रता, स्मरण शक्ति और भावनात्मक संतुलन को भी बेहतर करता है। ध्यान अभ्यास के दौरान उन्होंने साधकों को आंतरिक शांति और आत्मबोध की अनुभूति कराई।

इस अवसर पर योग साधना केंद्र से जुड़े जिले के सभी पदाधिकारी, प्रशिक्षक एवं साधक उपस्थित रहे। ठंड के मौसम के बावजूद सभी ने पूर्ण अनुशासन और उत्साह के साथ देशराज जी के निर्देशन में योगाभ्यास किया। सामूहिक योग अभ्यास ने पूरे वातावरण को सकारात्मक ऊर्जा और अनुशासन से भर दिया।

माँ भगवती मंदिर की 20वीं वर्षगाँठ पर रोहिणी में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

नई दिल्ली। आस्था, विश्वास और सामूहिक सहभागिता की जीवंत तस्वीर उस समय देखने को मिली, जब रोहिणी सेक्टर-9 स्थित ओवरसीज अपार्टमेंट्स परिसर में माँ भगवती मंदिर की स्थापना की 20वीं वर्षगाँठ अत्यंत श्रद्धा, उल्लास और भक्तिभाव के साथ मनाई गई। ओवरसीज अपार्टमेंट्स धर्मार्थ सभा के तत्वावधान में आयोजित इस पावन अवसर पर पूरे दिन धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों की श्रृंखला चलती रही। सुबह से देर रात्रि तक माँ भगवती के जयकारों और भक्ति संगीत से पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत-प्रोत रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः काल वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत वेदी पूजन से हुआ। इसके पश्चात आचार्यों द्वारा रुद्राभिषेक संपन्न कराया गया, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लेकर माँ से सुख-समृद्धि की कामना की। माँ भगवती की भव्य आरती के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया, जिसमें महिला-पुरुष, वृद्ध एवं बच्चों ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता निभाई। सायंकाल माता की भव्य चौकी का आयोजन किया गया, जहाँ भजन-कीर्तन के माध्यम से माँ भगवती की महिमा का गुणगान किया गया। भक्तिमय भजनों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमते नजर आए। इस अवसर पर प्रस्तुत की गई आकर्षक एवं मनोहारी झांकियों ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। झांकियों के माध्यम से धार्मिक कथाओं और देवी स्वरूपों का जीवंत चित्रण किया गया, जिसे देखकर श्रद्धालु अभिभूत हो उठे। कार्यक्रम में रोहिणी एवं आस-पास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए। इस अवसर पर उपस्थित भाजपा नेता सत्यनारायण गौतम ने कहा कि इस प्रकार के धार्मिक आयोजन समाज को सांस्कृतिक रूप से सशक्त बनाते हैं तथा नई पीढ़ी को अपनी परंपराओं से जोड़ने का कार्य करते हैं। उन्होंने आयोजकों की सराहना करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयास से ही ऐसे भव्य कार्यक्रम संभव हो पाते हैं।

मंदिर के संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. एस. एल. सागर ने अपने संबोधन में कहा कि माँ भगवती मंदिर विगत दो दशकों से श्रद्धालुओं की आस्था का केंद्र बना हुआ है। उन्होंने बताया कि मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक चेतना का भी केंद्र है। डॉ. सागर ने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में आपसी एकता, सद्भाव और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा लोग एक-दूसरे के प्रति सहयोग और सेवा भाव से जुड़ते हैं। रात्रि में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। इस आयोजन को सफल बनाने में ओवरसीज अपार्टमेंट्स के निवासियों का सामूहिक सहयोग एवं स्वेच्छा से दिया गया दान सराहनीय रहा। कार्यक्रम के समापन पर आयोजकों की ओर से सभी श्रद्धालुओं, अतिथियों, सहयोगकताओं एवं सेवाभाव से जुड़े स्वयंसेवकों का आभार व्यक्त किया गया। श्रद्धालुओं ने भी इस आयोजन को आध्यात्मिक अनुभूति से परिपूर्ण बताते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की निरंतरता की कामना की।

सेवा, संस्कार और शिक्षा का संगम: यादव कल्याण समिति की 38 वर्षों की प्रेरक यात्रा

फरीदाबाद। जिले में सामाजिक सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय यादव कल्याण समिति ने अपने 38वें स्थापना दिवस को मकर संक्रांति के पावन अवसर पर सामाजिक सरोकारों के साथ गरिमामय ढंग से मनाया। यह आयोजन केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि सेवा, संस्कार और सामूहिक जिम्मेदारी की भावना का जीवंत उदाहरण बनकर उभरा।

कार्यक्रम की शुरूआत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हवन-पूजन से हुई, जिसमें समाज की सुख-शांति, समृद्धि और प्रगति की कामना की गई। आध्यात्मिक वातावरण ने पूरे आयोजन को सकारात्मक ऊर्जा से भर दिया और सामाजिक एकता का संदेश दिया।

समिति द्वारा शिक्षा को सशक्त बनाने की दिशा में किए जा रहे प्रयास इस अवसर पर विशेष रूप से देखने को मिले। उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले मेधावी छात्र-छात्राओं को मंच पर आमंत्रित कर सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र, सम्मान चिह्न और प्रोत्साहन स्वरूप नगद राशि प्रदान कर उनके आत्मविश्वास को नई उड़ान दी गई। समिति का मानना है कि शिक्षा ही सामाजिक परिवर्तन की सबसे मजबूत नींव है।

सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए समिति ने गरीब, असहाय और जरूरतमंद परिवारों को ठंड से राहत देने के लिए कंबल वितरित किए। इसके साथ ही बच्चों की शिक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से स्कूल बैग, स्वेटर एवं अन्य आवश्यक शैक्षणिक सामग्री भी प्रदान की गई। यह पहल समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सहायता पहुँचाने की सोच को दर्शाती है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में हरियाणा पुलिस के सहायक आयुक्त राजीव यादव, आरटीओ अधिकारी अरुण यादव तथा समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तित्व वरिष्ठ प्रबंधजन राव निहाल सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। अतिथियों ने यादव कल्याण समिति के सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे संगठन समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। समारोह का कुशल मंच संचालन राव राम कुमार द्वारा किया गया। उन्होंने समिति की 38 वर्षों की यात्रा, उपलब्धियों और समाज के प्रति समर्पण को विस्तार से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के समापन पर संस्था के प्रधान हुकुम चंद लाम्बा ने सभी अतिथियों, सदस्यों और सहयोगकताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यादव कल्याण समिति आगे भी शिक्षा, सेवा और सामाजिक उत्थान के कार्यों को पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ जारी रखेगी। यादव कल्याण समिति का यह आयोजन यह संदेश देता है कि जब समाज संगठित होकर सेवा और शिक्षा को प्राथमिकता देता है, तो विकास और बदलाव की राह स्वयं प्रशस्त हो जाती है।

आरपीएम ग्रुप द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य मेले का आयोजन

सेवा, संवेदना और समर्पण की मिसाल बना आयोजन

नई दिल्ली। बीते दिनों आरपीएम ग्रुप के तत्वावधान में एक निःशुल्क स्वास्थ्य मेले का सफल आयोजन किया गया। इस जनकल्याणकारी पहल का उद्देश्य समाज के हर वर्ग तक बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना रहा। यह आयोजन आरपीएम ग्रुप की आदरणीय चेयरपर्सन रही माता मलुकी देवी की पुण्य स्मृति को समर्पित रहा, जिनके जीवन मूल्य–सेवा, करुणा और मानवता–इस मेले के माध्यम से जीवंत दिखाई दिए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रवि गंभीर एसएसपी क्राइम ब्रांच हरियाणा उपस्थित रहे। वहीं विशिष्ट अतिथियों में राकेश जी (डिप्टी कलेक्टर, एमसीडी), डी. बी. सिंह (आईएफएस, सेवानिवृत्त) एवं महेंद्र यादव (पूर्व विधायक) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाई।

स्वास्थ्य मेले में आकाश हेल्थकेयर सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल और राजीव गांधी कैंसर इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर के सहयोग से विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम ने सेवाएँ प्रदान कीं। इसके साथ ही क्लोव डेंटल, सेंटर फॉर साइट, वाइटल हेल्थकेयर लैब, डॉ. फलक्स फिज केयर, मंजू होमियो वेलनेस एवं आयुर्वेदिक थेरेपी संस्थानों का भी महत्वपूर्ण सहयोग रहा। मेले में सैकड़ों लोगों ने विभिन्न निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ उठाया, जिनमें दंत एवं नेत्र जांच, सामान्य व स्त्री रोग परामर्श, ईसीजी, जोड़ एक्स-रे, ब्लड प्रेशर, बीएमडी एवं पीएफटी जांच, ओरल व सर्वाइकल कैंसर स्क्रीनिंग, सामान्य लैब जांच तथा फिजियोथेरेपी परामर्श शामिल रहे।

इस अवसर पर अतिथियों ने आरपीएम ग्रुप की इस

पहल की सराहना करते हुए कहा कि आज भी ऐसे स्वास्थ्य मेले समाज के कमजोर वर्गों के लिए वरदान साबित होते हैं। उन्होंने माता मलुकी देवी के सेवा-भाव से प्रेरित कार्यों को याद करते हुए कहा कि उनके आदर्श आज भी समाज को दिशा दिखा रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में आरपीएम ग्रुप के चेयरमैन रविन्द्र यादव ने चिकित्सकों, पैरामेडिकल स्टाफ, स्वयंसेवकों एवं सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। यह स्वास्थ्य मेला सेवा के माध्यम से श्रद्धांजलि बनकर उभरा और मानवता के प्रति समर्पण का सशक्त संदेश देकर संपन्न हुआ।

‘मिरर लैंग्वेज’: शब्दों का दर्पण और रचनात्मकता की नई दुनिया

कलकत्ता। भाषा और साहित्य की दुनिया में प्रयोग हमेशा से रचनात्मकता को नई दिशा देते रहे हैं। इसी क्रम में कलकत्ता के प्रतिष्ठित प्रेस क्लब में ‘मिरर लैंग्वेज (दर्पण की भाषा)’ विषय पर आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस ने साहित्य और सिनेमा जगत का विशेष ध्यान आकर्षित किया। यह आयोजन सिनेमाथेक कोलकाता शॉर्ट एंड डॉक्यूमेंट्री फिल्म फेस्टिवल के अंतर्गत हुआ, जहाँ विचार, कला और नवाचार का सुंदर संगम देखने को मिला।

इस अवसर पर प्रस्तुत डॉक्यूमेंट्री फिल्म ‘मिरर लैंग्वेज’ असम के विख्यात साहित्यकार डॉ. उत्तम दास के असाधारण जीवन और उनके अनोखे साहित्यिक प्रयोगों पर केंद्रित रही। डॉ. दास ने ऐसी पुस्तकों की रचना की है, जिन्हें सामान्य रूप से पढ़ने के लिए दर्पण का सहारा लेना पड़ता है। दर्पण के सामने आते ही शब्द अपने सही रूप में प्रकट होते हैं- यह प्रयोग न केवल तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण है, बल्कि कल्पनाशीलता की नई ऊँचाइयों को भी छूता है।

डॉ. उत्तम दास अब तक छह भाषाओं में तेरह पुस्तकों की रचना कर चुके हैं। उनके द्वारा बाइबिल को मिरर लैंग्वेज में लिखना एक ऐतिहासिक उपलब्धि मानी जाती है, जिसने उन्हें विश्व स्तर पर पहचान दिलाई। इसके अतिरिक्त भारतीय संविधान, कुरान, गीता जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों को भी उन्होंने मिरर लैंग्वेज में प्रस्तुत कर भाषा और धर्म के बीच एक नई संवादात्मक शैली विकसित की है। उनके इस अद्वितीय योगदान के लिए उन्हें अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित किया जा चुका है।

इस डॉक्यूमेंट्री के निर्देशन की ज़िम्मेदारी अरूप मन्ना ने निभाई है, जबकि लेखन एवं निर्माण सिनेमाथेक कोलकाता की सह-संपादक रानु राय द्वारा किया गया है। फिल्म न केवल एक व्यक्ति की कहानी कहती है, बल्कि यह दर्शकों को यह सोचने पर भी विवश करती है कि भाषा, दृष्टि और समझ की सीमाएँ कहाँ तक विस्तृत हो सकती हैं।

प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान सिनेमाथेक कोलकाता के कार्यकारी अध्यक्ष अजय कुमार सेनगुप्ता, संयुक्त संपादक इंदु भूषण दास, अपोलो हॉस्पिटल कोलकाता के डॉ. सुदीप्त शेखर दास, स्वयं डॉ. उत्तम दास, प्रसिद्ध अभिनेत्री पापिया अधिकारी सहित कई विशिष्ट अतिथियों ने अपने विचार साझा किए। वक्ताओं ने ‘मिरर लैंग्वेज’ को साहित्य और सिनेमा के माध्यम से प्रस्तुत एक दुर्लभ और प्रेरणादायक प्रयोग बताया। ‘मिरर लैंग्वेज’ जैसी डॉक्यूमेंट्री यह साबित करती है कि सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि ज्ञान, नवाचार और सामाजिक संवाद का सशक्त मंच भी है। सिनेमाथेक कोलकाता का यह प्रयास भाषा और रचनात्मकता के नए आयाम खोलने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा सकता है।

छतरपुर में अखिल भारतीय यादव महासभा अहीर की वार्षिक बैठक और सम्मान समारोह

नई दिल्ली। छतरपुर इलाके में अखिल भारतीय यादव महासभा (अहीर) द्वारा वार्षिक बैठक और भव्य सामाजिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राजनीतिक, सामाजिक और संगठनात्मक क्षेत्र से जुड़े गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। समारोह का मुख्य उद्देश्य समाज की एकता को मजबूत करना, संगठन को सुदृढ़ करना और सामाजिक विकास को गति देना था।

कार्यक्रम में विशेष रूप से भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री ओमप्रकाश धनखड़, महरौली विधानसभा के विधायक गजेन्द्र सिंह यादव, महरौली के पूर्व विधायक एडवोकेट नरेश यादव, अखिल भारतीय यादव महासभा अहीर के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अशोक यादव, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष करण सिंह यादव, महासचिव ब्रिगेडियर होशियार सिंह, जी. एस. यादव, शिवराज सिंह यादव (रि. कर्नल), विमलेश यादव, नम्रता यादव, राधे यादव के साथ ही युवा अध्यक्ष अमरेन्द्र यादव सहित महासभा के सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों का मंच पर पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं स्मृति-चिह्न देकर सम्मानित किया गया। मंच से वक्ताओं ने कहा कि यादव समाज ने देश के विकास में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है और आने वाले समय में शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से समाज को और अधिक सशक्त बनाने की आवश्यकता है। युवाओं को संगठित होकर सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठजनों, युवाओं और महिलाओं की बड़ी संख्या में भागीदारी रही। सभी ने समाज की एकता और संगठन की मजबूती के लिए मिलकर कार्य करने का संकल्प लिया। अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों और उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया और भविष्य में ऐसे सामाजिक कार्यक्रम जारी रखने की बात कही।

रोहिणी फेडरेशन ऑफ को-ऑपरेटिव ग्रुप हाउसिंग सोसायटीज के महासचिव डॉ. एस एल सागर को जन्मदिन की बधाई देते हुए दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता व फेडरेशन के प्रधान आर्य मुनी अपने समस्त पदाधिकारियों के साथ

दिल्ली देहात में शिक्षा का अलख जगाने वाले स्व. कुंदन लाल यादव के पुण्य स्मृति पर अयोजित भंडारे में शामिल होते हुए ज्येष्ठ पुत्र महेन्द्र यादव, छोटे पुत्र धर्मबीर यादव, पौत्र विरेन्द्र यादव व अन्य गणमान्य।

कैम्स कान्वेंट स्कूल में गणतंत्र दिवस व रजत जयंती का भव्य आयोजन

नई दिल्ली। देशभक्ति, उत्साह और उपलब्धियों के गौरवपूर्ण क्षणों का संगम उस समय देखने को मिला, जब कुशक नंबर-2 स्थित कैम्स कान्वेंट स्कूल (सीबीएसई मान्यता प्राप्त) में गणतंत्र दिवस के अवसर पर विद्यालय की रजत जयंती बड़े ही उत्साह और गरिमामय वातावरण में मनाई गई। तिरंगे की शान और राष्ट्रगान की गूंज के बीच पूरा विद्यालय परिसर देशभक्ति के रंग में रंगा नजर आया। कार्यक्रम की शुरूआत पूर्व सांसद एवं पूर्व दिल्ली प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जयप्रकाश अग्रवाल, विद्यालय के चेयरमैन खेमचंद सैनी, प्रधानाचार्या सोनिया सैनी, मैनेजर रोहित सैनी तथा शिक्षक-शिक्षिकाओं की उपस्थिति में ध्वजारोहण के साथ हुई। इसके पश्चात सभी ने स्वतंत्रता संग्राम के वीर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर वक्ताओं ने बताया कि 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान लागू होने के साथ भारत एक संप्रभु, लोकतांत्रिक एवं गणतंत्र राष्ट्र बना। इस वर्ष समारोह विशेष रहा क्योंकि विद्यालय ने अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण कर रजत जयंती मनाई। समारोह की थीम "Swapna : From Dreams to Destination" रही, जिसने विद्यार्थियों को अपने सपनों को लक्ष्य में बदलने की प्रेरणा दी। रजत जयंती के उपलक्ष्य में विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान, कला, पर्यावरण एवं सामाजिक विषयों पर आधारित प्रदर्शनियाँ लगाई गईं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 'हमारा सपना', 'We Are Dreamers', महाकाली नृत्य, शिव नृत्य एवं अघोरी नृत्य ने दर्शकों को खूब प्रभावित किया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री, दिल्ली सरकार मंगतराम सिंघल रहे। उन्होंने विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता, संस्कार और अनुशासन की सराहना करते हुए कहा कि कैम्स कान्वेंट स्कूल विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की दिशा में सराहनीय कार्य कर रहा है। विद्यालय प्रबंधन ने बताया कि स्कूल का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान, नैतिक मूल्यों, आत्मविश्वास और राष्ट्रप्रेम से युक्त जिम्मेदार नागरिक बनाना है। कार्यक्रम के अंत में विद्यालय परिवार द्वारा सभी अतिथियों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया गया।

इस अवसर पर बवाना विधानसभा के ऑब्जर्वर रविन्द्र त्यागी, दिल्ली प्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष अक्षय लाकड़ा, उपाध्यक्ष अमित डेढ़ा, विधानसभा अध्यक्ष मोहित सैनी, सुखबीर सिंह, कपूर सिंह सिसोदिया, अखिल भारतीय सैनी सभा के अध्यक्ष सुमेर सिंह सैनी, सूरत सिंह सैनी, सैनी कॉपरेटिव सोसाइटी दरियागंज के प्रधान हरीश सैनी, महासचिव सुभाष सैनी, उपाध्यक्ष राजेश सैनी, कुलदीप सैनी एवं बबिता सैनी उपस्थित रहे।

नेचुरोपैथी

एक कदम प्रकृति की ओर....

दक्षा दावड़ा

पार्किंसन रोग (Parkinson's Disease)

पार्किंसन रोग (Parkinson's Disease) एक धीरे-धीरे बढ़ने वाला न्यूरोलॉजिकल रोग है। इसकी शुरूआत बहुत हल्के संकेतों से होती है, जिन्हें अक्सर लोग उम्र, थकान या तनाव समझकर नजरअंदाज कर देते हैं। यदि हम इनके बहुत शुरूआती संकेतों को बारिकी से समझ लेते हैं तो हम जीवन सरल बना सकते हैं।

पार्किंसन रोग में शरीर चलाने में अंगों पर कंट्रोल खोने लगते हैं, शरीर के कुछ अंग हिलने लगते हैं किंतु हमें अपना शरीर बीमारी आने से पहले कई प्राकृतिक रूप से सूचना देने लगता है, पार्किंसन होने से पहले शरीर कुछ बदलाव महसूस करने लगता है,ये अक्सर हिलने से पहले शुरू हो जाते हैं। जैसे

➡कब्ज (Constipation)
➡सूंघने की क्षमता कम होना
➡नींद में बोलना / हाथ-पैर चलाना (REM Sleep Disorder)
➡अवसाद, चिंता
➡थकान
➡याददाश्त में हल्की कमी

पार्किंसन रोग के मुख्य कारणों में

1: मस्तिष्क में डोपामिन नामक स्राव बनता है जो शरीर के संतुलन के लिए जरूरी है इस स्त्राव को बनाने वाली कोशिकाओं का धीरे-धीरे नष्ट होना पार्किंसन का बहुत बड़ा कारण है।

2: आनुवंशिक कारण , कुछ केस में पार्किंसन रोग अनुवांशिक रूप में विकसित होता है।

3: पर्यावरण (कीटनाशक, टॉक्सिन) पर्यावरण में अधिक पॉल्यूशन की मात्रा शरीर में टॉक्सिंस बढ़ा देता है अधिक पॉल्यूशन की वजह से मस्तिष्क में शुद्ध ऑक्सीजन की कमी हो जाती है और डोपामिन स्राव के बनने पर असर होने लगती है जिससे पार्किंसन रोग की संभावना बढ़ जाती है।

4: अत्याधुनिक मॉर्डन और फास्ट लाइफ में ज्यादा मानसिक स्ट्रेस पार्किंसन का बहुत बड़ा कारण है।

पार्किंसन रोग के शुरूआती समय के दौरान ,हम यदि इन लक्षणों को पहचान ले और समय रहते रोजिंदा जीवन में कुछ बदलाव करके और प्राकृतिक चिकित्सा अपना लें ,तब पार्किंसन जैसे भयंकर रोग में भी सरवाइव करना आसान हो जाता है। जैसे ..

➡रोज नियमित समय पर सोना और जागना
➡नियमित योग अभ्यास और प्राणायाम करना या सामान्य एक्सरसाइज करना
➡पार्क में हरी घास पर नंगे पैर चलना
➡पसंदीदा संगीत सुनना
➡सामाजिक जुड़ाव रखना , जैसे किसी क्लब के मेंबर बनना, किसी संस्थान से जुड़ना, समिति की गतिविधियों में भाग लेना इत्यादि।
➡ध्यान में बैठना ॐ का जाप करना जिससे तनाव कम होता है जो बहुत जरूरी है।

प्राकृतिक चिकित्साः

मड़ बाथ : मिट्टी का पूरे शरीर में लेप करना।

अभ्यंग : तेल या गाय का देसी घी से मालिश पूरे शरीर में करना चाहिए। जिससे शरीर की प्रत्येक कोशिकाएं सुचारू रूप से क्रियान्वित होती है और कंपन दूर होने लगता है। सर में भी तेल या घी से मालिश करनी चाहिए।

नास्य : नासिक में गाय का शुद्ध देसी घी गर्म करके दो-दो बूंद या बादाम रोगन की दो-दो बूंद, रात्रि एवं सुबह नासिक में डालें और नासिक के ऊपर मसाज भी करें। यह मस्तिष्क की तंत्रिकाओं को राहत प्रदान करता है।

शिरोधारा : शिरोधारा में लगातार 40 मिनट तक मस्तिष्क में तेल की धार डाली जाती है जिससे मस्तिष्क के न्यूरॉन्स को शक्ति मिलती है पार्किंसन में राहत मिलती है।

स्टीम बाथ : एक केबिन या टेंट की तरह बना हुआ होता है जिसमें बैठकर पूरे शरीर में भाप ली जाती है इससे शरीर की कोशिकाएं एक्टिवेट होती है कंपन कम होने लगता है।

लाभकारी आहार

➡हरी सब्ज़ियाँ (पालक, मेथी, लौकी)
➡जामुन, सेब, अनार जैसे फल
➡अखरोट, अलसी, चिया सीड
➡हल्दी ,काली मिर्च
➡पर्याप्त पानी

रिफाइंड शुगर,फास्ट फूड,डीप फ्राइड,केमिकल युक्त पैक्ड फूड नहीं लेना चाहिए।

इसके साथ-साथ कुछ प्राकृतिक औषधियां भी हम ले सकते हैं जो पार्किंसन रोग में लाभदाई होता है।

1 : अश्वगंधा : शरीर में गर्माहट लाकर ऊतकों को गर्मी प्रदान करता है जिससे हमारी कोशिकाएं कार्यान्वित होती है

2 : ब्राह्मी : ब्राह्मी हमारे मस्तिष्क के तंतुओं को क्रियान्वित करता है याद शक्ति बढ़ाता है

3 : प्राकृतिक L-DOPA: कपिकच्छु के बीजों में उच्च मात्रा में लेवोडोपा पाया जाता है, जो मस्तिष्क में डोपामाइन में परिवर्तित हो जाता है, जो खुशी और प्रेरणा के लिए आवश्यक है।

पार्किंसन के लिए वरदान: इसमें पाए जाने वाले L-DOPA के कारण, यह पार्किंसंस रोग के प्रबंधन में एक प्रभावी प्राकृतिक विकल्प है।

यदि रोगी पार्किंसन की तीव्र चपेट में आ चुका हो तब अपनी दवाइयां नियमित रूप से लेते हुए और साथ-साथ प्राकृतिक चिकित्सा अपना कर जीवन को सहज बना सकते हैं।

नेचुरोपैथी अपनाएं ,जीवन को सरल बनाएं

वियतनाम - एक अनोखा देश

» **विक्रम कटोच**

हनोई से बैंकॉक की उड़ान लगभग चार घंटे की होती है। स्मूथ चेक इन चेक आउट और वीजा थाईलैंड पहुंचने के बादे उड़ान का समय नींद में ऊँघते हुए और जागने के बीच दिमाग अजीब ढंग से काम करता है। कभी आँखें बंद हो जाती हैं, कभी इंजन की लगातार आवाज किसी विचार को जगा देती है। जहाज जब ऊँचाई पर स्थिर होता है, तो बाहर सिर्फ.बादल दिखते हैं, लेकिन जैसे-जैसे उतरने का समय आता है, धरती धीरे-धीरे अपने रंग में दिखने लगती है।

खिड़की से नीचे देखते हुए जो पहला दृश्य उभरता है, वह बेहद खुला और फैला हुआ है। दूर-दूर तक खेत। बड़े, समतल, साफ रेखाओं में बँटे हुए। कहीं पानी की पतली धारियाँ चमकती हैं, कहीं हरियाली गहरी दिखाई देती है तो कहीं घने जंगल। यह दृश्य अपने आप में सुंदर है, लेकिन इसके साथ ही दिमाग में एक तुलना जन्म लेती है। अगर लाहौल जैसी जगह में किसी किसान के पास इतनी जमीन हो, तो गोभी की फसल से मिलने वाला मुनाफा उसे आराम से करोड़पति बना सकता है। एक किलो की लागत और एक किलो के मुनाफे का हिसाब दिमाग में घूमने लगता है।

लेकिन यह सोच ज्यादा देर टिकती नहीं। ऊपर से दिखती हरियाली और जमीन का फैलाव पूरी कहानी नहीं कहते। जनसंख्या कितनी है, एक किसान के हिस्से में औसतन कितनी जमीन आती है, बाजार किसके हाथ में है, कर्ज.और लागत का क्या गणित है इन सबको जाने बिना कोई भी निष्कर्ष निकालना अँधेरे में तीर चलाने जैसा ही है।

फिर भी, हवाई जहाज की इस ऊँचाई से एक बात साफ महसूस होती है कि यह ग्रामीण इलाका सुविधाओं से भरा हुआ नहीं दिखता। खेत बहुत हैं, मेहनत बहुत है, लेकिन समृद्धि का एहसास नहीं होता। यह एक ऐसा समाज लगता है जो जमीन से जुड़ा है, पर अवसरों से नहीं।

जैसे ही विमान बैंकॉक की जमीन पर उतरता है, दृश्य एकदम बदल जाता है। चमकता हुआ एयरपोर्ट, तेज रफ्तार में चलती गाड़ियाँ, चौड़ी सड़कें और बड़े-बड़े विज्ञापन। यह सब एक ग्लोबल शहर की पहचान है। यह वही देश है जहाँ कुछ ही दूरी पर लोग खेतों में धूप में काम कर रहे हैं और यहाँ रातें रोशनी से जगमगाती हैं।

यही विरोधाभास मन में एक सवाल को जन्म देता है और गहराई से चुभता है इतनी खेती, इतना श्रम और इतनी जमीन होने के बावजूद थाईलैंड को सेक्स टूरिज्म जैसे धंधे पर क्यों निर्भर होना पड़ा?

इस सवाल का जवाब केवल नैतिकता में नहीं, इतिहास और अर्थव्यवस्था में छिपा है। थाईलैंड कभी औपचारिक रूप से उपनिवेश नहीं बना, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि वह वैश्विक ताकतों के प्रभाव से अछूता रहा। वियतनाम युद्ध के दौर में अमेरिकी सैनिकों की मौजूदगी ने यहाँ एक अलग तरह की अर्थव्यवस्था को जन्म दिया। उनके साथ आया पैसा, मनोरंजन की मांग और अस्थायी सुखों की चाह। जो शुरूआत में एक साइड इकोनॉमी थी, वह धीरे-धीरे एक स्थायी पर्यटन मॉडल बनती चली गई। समय के साथ यह मॉडल अंतरराष्ट्रीय बाजार से जुड़ गया और फिर पीछे मुड़कर देखने का मौका ही नहीं मिला।

जब पटाया की ओर बढ़ते हैं, तो उसके बारे में बनी हुई छवि पहले से ही दिमाग में होती है इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की आप भी अपना ईमान कई बार बेच चुके होंते हैं,

इसे बिकाऊ शहर कहने से कतराते नहीं हैं, नैतिक पतन का प्रतीक मानते हैं और हीन नजर से देखते हैं। लेकिन जब आप वहाँ की सड़कों पर चलते हैं, तो तस्वीर उतनी एकतरफा नहीं दिखती। नीयॉन लाइट्स और बार के बीच सुबह सब्जी खरीदते लोग दिखते हैं, स्कूल यूनिफॉर्म में बच्चे नजर आते हैं, मंदिरों में अगरबत्तियाँ जलती हैं और फूल चढ़ाये जातें हैं। यह कोई खाली या मृत शहर नहीं है। यह भी एक समुदाय है, जहाँ लोग रहते हैं, जीते हैं और अपने-अपने तरीके से पेट भरते हैं।

पटाया और बैंकॉक के नाइट-इंडस्ट्री में काम करने

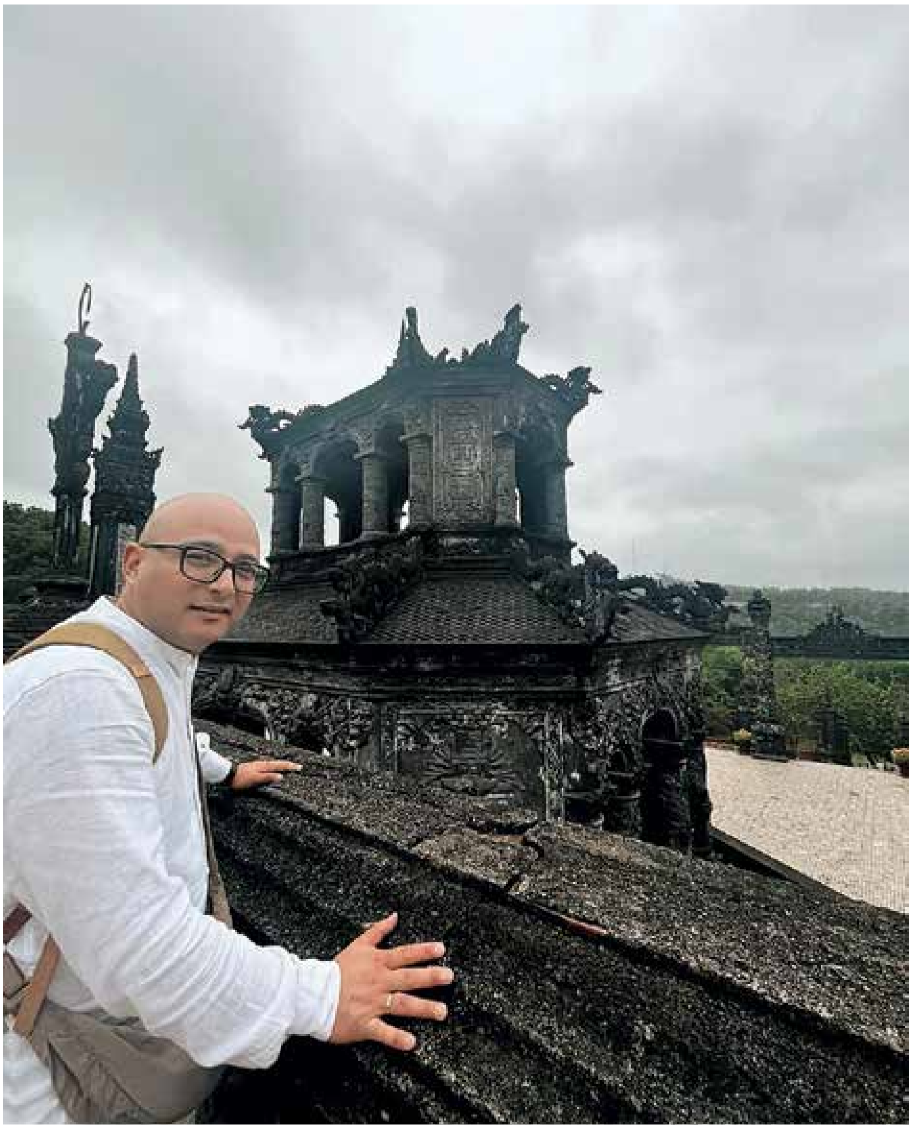

वाले कई युवक-युवतियाँ यहीं के नहीं होते। वे थाईलैंड के ग्रामीण इलाकों से आते हैं जहाँ खेती से गुजारा मुश्किल है और विकल्प सीमित हैं। उनकी कहानियाँ अलग-अलग हो सकती हैं, लेकिन कारण अक्सर एक जैसे होते हैं। किसी को घर का कर्ज.चुकाना है, किसी को भाई-बहन की पढ़ाई का खर्च उठाना है, किसी को बीमार माता-पिता की दवाइयों का इंतजाम करना है।

यह उनकी पहली पसंद नहीं होती, बल्कि सबसे तेज और सुलभ रास्ता होता है बिल्कुल टूरिज्म के लिए किसी डेवलपड टूरिज्म मॉडल जैसा।

बाहर से देखने वाला समाज उन्हें आसानी से 'डिग्रेड' कह देता है, लेकिन शायद उसने कभी यह नहीं पूछा कि अगर यही रास्ता बचा हो, तो वह खुद क्या करता। थाई समाज को समझने के लिए उसकी संस्कृति और बौद्ध दर्शन को समझना जरूरी है। यहाँ सहनशीलता, स्वीकार और चुपचाप अपने कर्म निभाने की प्रवृत्ति गहरी है। लोग कम हस्तक्षेप करते हैं, दूसरों के जीवन में झाँकने से बचते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि यहाँ सवाल नहीं हैं, बल्कि यह कि सवालों को जीने का तरीका अलग है। विरोध और शोर कम दिखता है, लेकिन संघर्ष मौजूद है।

पर्यटन अपने आप में न अच्छा होता है, न बुरा। वह एक दर्पण की तरह होता है, जिसमें आने वाला और सेवा देने वाला दोनों अपनी तस्वीर देखते हैं। पटाया जैसे शहर केवल बेचने वालों से नहीं बनते, बल्कि खरीदने वालों से भी बनते हैं। दुनिया भर से आने वाले पर्यटक, एयरलाइंस, ट्रैवल कंपनियाँ और वैश्विक अर्थव्यवस्था सब मिलकर इस मॉडल को खड़ा करते हैं। फिर भी नैतिकता का बोझ अक्सर सिर्फ.स्थानीय लोगों के कंधों पर डाल दिया जाता है जैसा कि हमेशा से होता आ रहा है। वापसी की उड़ान में फिर वही खेत नीचे दिखते हैं। ऊपर से शांत, हरे और व्यवस्थित। लेकिन अब उन्हें देखने की नजर बदल चुकी होती है। अब वे सिर्फ. जमीन नहीं लगते, बल्कि उन लोगों की कहानी लगते हैं जो इन्हीं खेतों से शहरों तक और फिर शहरों की रातों तक का सफर करते हैं। शायद थाईलैंड को समझने के लिए नैतिकता से पहले सहानुभूति की जरूरत है, क्योंकि हर चमकती रोशनी के पीछे कोई न कोई मजबूरी खड़ी होती है।

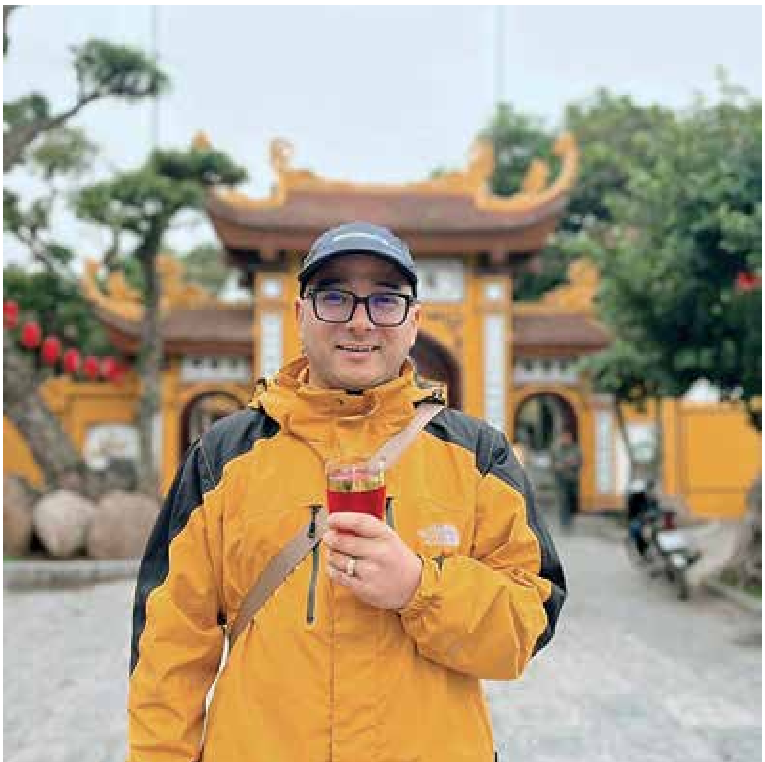

मिट्टी के बेटों को सलाम करती 'बॉर्डर 2'

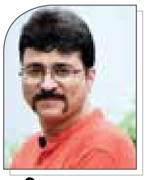

दीपक दुआ

1971 के भारत-पाक युद्ध में इतने सारे मोर्चों पर इतनी सारी लड़ाइयां लड़ी गई थीं कि हमारे फिल्मकार चाहें तो हर साल उन पर फिल्में बना सकते हैं। 13 जून, 1997 को आई जे.पी. दत्ता की 'बॉर्डर' उस युद्ध की लोंगेवाला की लड़ाई पर थी तो पिछले दिनों आई श्रीराम राघवन की 'इक्कीस' बसंतर की लड़ाई पर। अब आई 'बॉडर 2' को बसंतर, शक्करगढ़, मनव्वर तवी, पुंछ, ऑपरेशन चंगेज, आई.एन.एस. खुखरी जैसे कई मोर्चों को मिला-जुला कर मसालेदार बनाने की कोशिश की गई है। यानी 'बॉर्डर 2' पिछली वाली 'बॉर्डर' का सीक्वेल नहीं है बल्कि यह उसी नाम वाली एक और फिल्म है जिसमें 'बॉर्डर' का फ्लेवर, उसकी खुशबू, उसकी झलक डाली गई है।

'बॉर्डर' में जे.पी. दत्ता ने युद्ध आधारित फिल्मों को दिखाने का जो ढांचा तैयार किया था, तब से अब तक हर ऐसी फिल्म कमोबेश उसी ढांचे पर ही खड़ी की जा रही है। इन फिल्मों में कुछ फौजी, उनकी बैक-स्टोरी, उनके घर की कहानी, उनका मोर्चे पर जाना, जूझ कर लड़ना, बच जाना या शहीद होना दिखाया जाता है और 'बॉर्डर 2' भी उसी पटरी पर चलती है। अलग-अलग लड़ाइयों को एक साथ पिरोते हुए इसमें आर्मी, नेवी और एयर फोर्स के तीन अफसरों-वरुण धवन, अहान शेट्टी, दिलजीत दोसांझ के साथ-साथ सनी देओल को लेकर कहानी का ताना-बाना बुना गया है। इस ताने-बाने में कुछ किरदार असली हैं तो कुछ काल्पनिक, कुछ घटनाएं असली हैं तो बहुत सारी काल्पनिक। लेकिन इनका मकसद एक ही है-इस देश की मिट्टी के बेटों को सलाम करना और इस काम में यह फिल्म कामयाब रही है-थोड़े उतार-चढ़ाव के साथ, थोड़ी कमियों-खूबियों के साथ।

फिल्म की कहानी जे.पी दत्ता की बेटी निधि दत्ता ने लिखी है। बड़ी कुशलता से उन्होंने बहुत सारे किरदारों व लड़ाइयों को एक-दूसरे से बांधा है। लेकिन असल तारीफ स्क्रीनप्ले व संवाद लिखने वाले अनुराग सिंह व सुमित अरोड़ा की होनी चाहिए जिन्होंने अपनी लिखाई से पूरी फिल्म को बांधे रखा है। अलग-अलग जगहों और समय में इधर-उधर जाती कहानी को थामना आसान नहीं होता लेकिन अनुराग और सुमित ने इस काम को बखूबी निभाया है। कई सीन बहुत ही बारीकी से लिखे गए हैं जो दर्शकों को किरदारों से, उनके साथ हो रही घटनाओं से जोड़ते हैं। संवाद बेहतर हैं, कई जगह गहरा असर छोड़ते हैं।

'केसरी' दे चुके निर्देशक अनुराग सिंह ने 'बॉर्डर 2' को दिलचस्प व असरदार बनाए रखने की अपनी कोशिश में ज्यादातर जगहों पर सफल रहे हैं। चारों प्रमुख पात्रों की बैक स्टोरी, उनके किरदारों की विशेषताओं को बताते हुए उन्होंने भावुक क्षणों व हल्के-फुल्के पलों का संतुलन बनाए रखा है। कहीं यह फिल्म हंसाती है, कहीं एकदम से भावुक कर देती है तो कभी यह जोश दिलाने लगती है।

फिल्म का एक मजबूत पक्ष इसकी कास्टिंग है। हरियाणवी व पंजाबी किरदारों में लिए गए कलाकार अपने विश्वसनीय काम से असर छोड़ते हैं। सनी देओल (जिन्हें फिल्म की कास्टिंग में 'धर्मेंद्र का बेटा' लिखा गया है) सधे हुए रहे हैं। इस उम्र में भी उनकी पर्सनैलिटी दमदार है। उनके प्रशंसक उनके जोशीले डायलॉग्स और एक्शन दृश्यों पर खुश होंगे। आश्चर्यजनक रूप से वरुण धवन ने बहुत अच्छा काम किया है। दिलजीत दोसांझ तो खैर हैं ही असरदार। अहान शेट्टी अपनी पहली फिल्म के चार साल बाद अब आए हैं। शायद उनकी एक्टिंग का कच्चापन फिल्म इंडस्ट्री वालों को भी पता है। सनी के साथी बने अनुराग अरोड़ा, सनी की पत्नी बनीं मोना सिंह, दिलजीत की पत्नी बनीं सोनम बाजवा, वरुण की पत्नी बनीं मेधा राणा, वरुण के ससुर बने संदीप शर्मा जैसे कलाकारों को अपना दम दिखाने का जब-जब मौका मिला, ये लोग चूके नहीं। बाकी कलाकार सही रहे।

'बॉर्डर' के गाने आज भी याद किए जाते हैं। गीत-संगीत 'बॉर्डर 2' का भी बुरा नहीं है लेकिन इनमें उस जमीनी अहसास की कमी है जो 'बॉर्डर' के गीतों में था। फिर भी 'संदेसे आते हैं...' के नए वर्जन को सुना-देखा जा सकता है। फिल्म का सबसे शानदार गीत 'जिंद मेरिए...' खुद निर्देशक अनुराग सिंह ने लिखा है। इस पंजाबी गीत के बोल लाजवाब हैं। मनोज मुंतशिर का 'मिट्टी के बेटे...' भी अच्छा है।

लेकिन 'बॉर्डर 2' को आप कमियों से परे भी नहीं कह सकते। पहली कमी तो यह कि इसकी तुलना 'बॉर्डर' से बिल्कुल न की जाए क्योंकि यह उस जैसी गहरी और सधी हुई नहीं है। 3 घंटे 20 मिनट की इसी लंबाई सचमुच काफी ज्यादा है और कई जगह बेचैन करने लगती है। इतनी सारी लड़ाइयों को एक साथ लेने से यह गाढ़ी नहीं बन पाई है। अहान शेट्टी का नेवी वाला पूरा हिस्सा बहुत ही हल्का रहा। दिलजीत दोसांझ के फाइटर प्लेन वाले सीन भी अब बहुत बार देखे जा चुके हैं। सच तो यह है कि इस फिल्म के अंत में जब लड़ाई वाले सीन आते हैं तो उन सीन में नएपन की कमी के चलते फिल्म का असर कम होने लगता है। कुछ बहुत ही अनोखेपन के साथ उन्हें फिल्माया गया होता तो कुछ और बात होती। कहानी का कभी इधर, कभी उधर जाना भी कुछ टाइम बाद अखरने लगता है।

बावजूद इन कमियों के यह फिल्म इसलिए देखी जानी चाहिए कि यह संतुलित मनोरंजन देती है। इसे देखते हुए आपका मन और आंखें पर्दे पर ही रहते हैं। यह फिल्म सलाम करती है मिट्टी के उन बेटों को जिन्होंने खुद से पहले देश को रखा, साथ ही उनके परिवार वालों को भी जिन्होंने उन्हें अपने फर्ज.पर टिके रहने का हौसला दिया। यह फिल्म सलाम करती है हिन्द को, हिन्द की सेना को।

(दीपक दुआ राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित फिल्म समीक्षक हैं)

सीमायें संरक्षित होती नहीं है, केवल नारों से
सीमायें पूजी जाती है हिम्मत और हथियारों से।
सीमाओं पर सिर, सीने व पूत न्योछावर होते है
सीमाओं पर योद्धा अपने खून की बूदें बोते हैं उन
बूंदों की गरमी पाकर राष्ट्र खड़ा हो पाता है
तभी राष्ट्र का झण्डा बनकर सीमा पर फहराता है।

गणतंत्र दिवस 26 JANUARY की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रेम कुमार "विद्यार्थी"
पार्षद प्रतिनिधी

AAM AADMI PARTY

एडवोकेट चित्रा "विद्यार्थी"
MA. LLB. LLM
निगम पार्षद, वजीरपुर वार्ड न.66

आम आदमी पार्टी वजीरपुर विधानसभा क्षेत्र

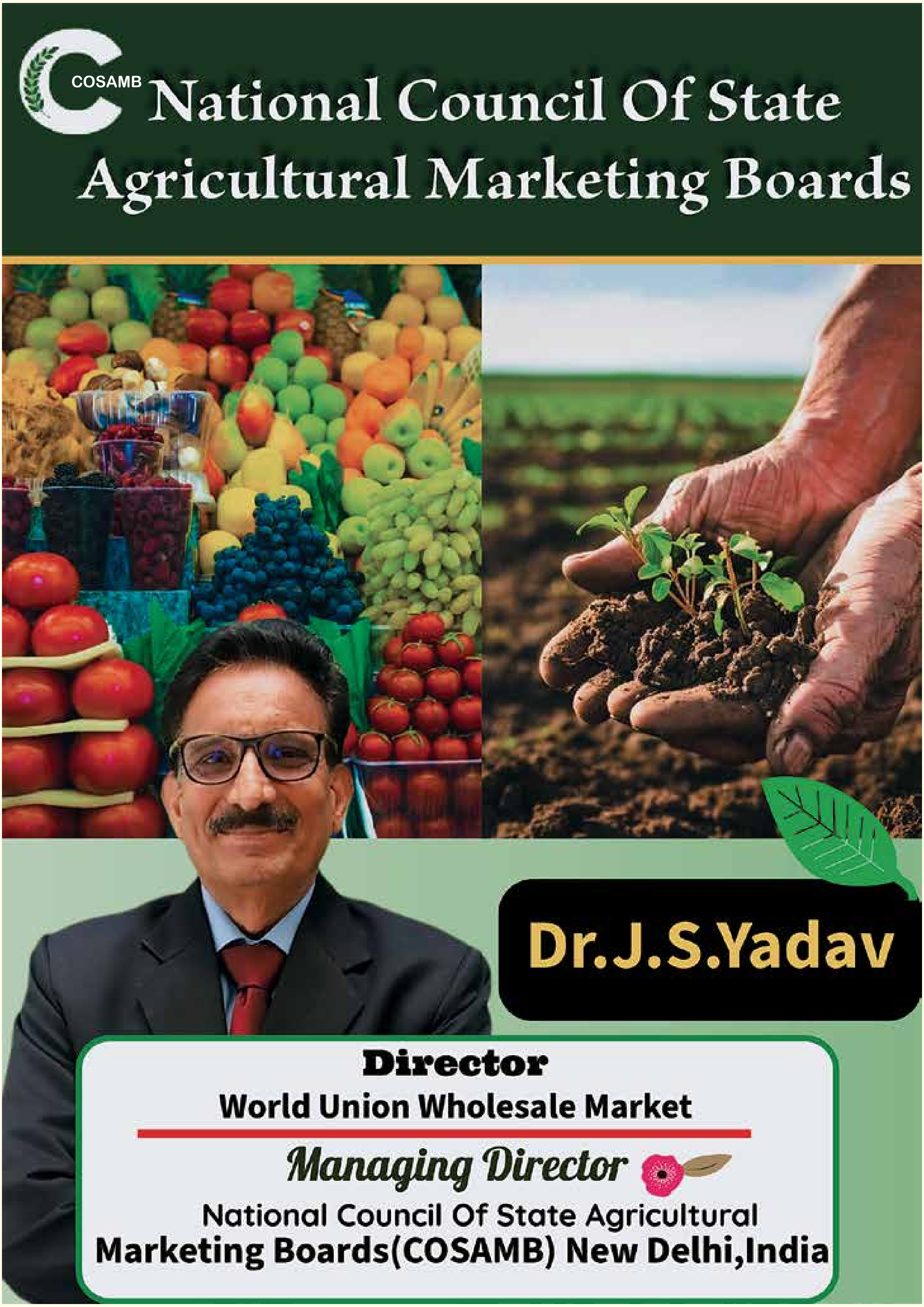
COSAMB
National Council Of State
Agricultural Marketing Boards
Dr.J.S.Yadav
Director
World Union Wholesale Market
Managing Director
National Council Of State Agricultural
Marketing Boards(COSAMB) New Delhi,India